अपने देश में राय देने वालों की कमी नहीं है, इस पर आपकी क्या राय है?

उस्तरा

काका हाथरसी

खटमल मच्छर युद्ध

'काका' वेटिंग रूम में फंसे देहरादून,
नींद न आई रात भर
मच्छर चूसें खून।
मच्छर चूसें खून
देह घायल कर डाली,
हमें उड़ा ले जाने की योजना बना ली।
किंतु बच गए कैसे
यह बतलाएं तुमको,
नीचे खटमल जी ने
पकड़ रखा था हमको।
हुई विकट रस्साकशी
थके नहीं रणधीर,
ऊपर मच्छर खींचते
नीचे खटमल वीर।

चूरण

चिंटू लड़की देखने गया...
चिंटू : कितने तक पढ़ी हो?
लड़की : बीए तक!
चिंटू ने मना कर दिया और बोला,
"दो अक्षर पढ़ी और वो भी उल्टे!"

पत्नी : सुनो जी, लड़का
बहुत पैसे उड़ाने लगा है,
जहां भी छुपाती हूं, खोज लेता है!
पति : नालायक की किताब में रख दे,
एग्जाम तक नहीं ढूंढ पाएगा!

गोलू 100 नंबर पर कॉल कर कहता है,
"सर, मुझे जान से मारने की
धमकी मिल रही है!"
इंस्पेक्टर : अरे, कौन दे रहा है?
गोलू : सर, बिजली वाले,
बार-बार कह रहे हैं,
बिल नहीं भरा तो काट देंगे!

पति : तुम बिल्कुल राजकुमारी जैसी हो!
पत्नी : थैंक्यू सो मच!
और बताओ, क्या कर रहे हो?
पति : खाली बैठा था तो सोचा,
थोड़ा मजाक ही कर लूं!

अमेरिका जाने की भनक लगते ही रिश्तेदार आपको चाय-पानी के लिए पूछने लगते हैं। वहां से लाने वाले सामानों की लिस्ट बनने लगती है। मन में लड्डू फूटने लगते हैं। अपेक्षाएं आकाश में सुराख करने लगती हैं।

पग घुंघरू बांध थिरकते लेखक

वह लेखक ही क्या, जो विदेश यात्राओं के अनुभवों की नहीं गाए। बड़े लेखक की तस्दीक ही तब होती है, जब वह विदेश यात्रा सुख की चर्चा अपने बायोडाटा में करता है या फिर वार्ताओं में एक-दो बार विदेशों के हालात का उल्लेख करता है। कुछ लेखकों ने तो अपने नाम के तखल्लुस ही अजीबो-गरीब रख दिए हैं, जैसे - रमेश शर्मा कैलिफोर्निया, हरिप्रकाश टोरंटो, नाजनीन सैन फ्रांसिस्को आदि।

अतुल चतुर्वेदी

विदेश भक्ति के प्रवाह में कुछ लेखकों ने अपने कुल गौरव को ही भुला दिया है। विदेश यात्रा का सुख-भोगी लेखक गाहे-बगाहे विदेश की जन संस्कृति का बढ़-चढ़कर बखान अवश्य करता है। बात-बात में अंग्रेजी के शब्दों का बलात उपयोग करता है, भले ही उनका सटीक अर्थ न जानता हो।

अमेरिका जाना मानो तीर्थ यात्रा का सुख हो। घर में बच्चे और पत्नी अमेरिका जाने की उपलब्धि को जीवन की एक महान उपलब्धि मानते हैं। अमेरिका जाने की भनक लगते ही रिश्तेदार आपको चाय-पानी के लिए पूछने लगते हैं। वहां से लाने वाले सामानों की लिस्ट बनने लगती है। मन में लड्डू फूटने लगते हैं। अपेक्षाएं आकाश में सुराख करने लगती हैं। लेखक पग घुंघरू बांध थिरकने लगता है। जिस लेखक की आधी किताबें रद्दी के लायक समझी गई थीं, उनको ससम्मान

अलमारी में सजा दिया जाता है, उनकी मंत्रिमंडल में वापसी हो गई है। लेखक भी कम चतुर नहीं होता। एक-दो बार की विदेश यात्रा को चाहे वह बेटी की गृहस्थी देखने के लिए हुई हो, ऐसे प्रचारित करता है, मानो किसी अंतरराष्ट्रीय कॉन्फ्रेंस का आमंत्रण मिला हो बापड़े को। नाती के पोतड़े धोने को वह कुछ यूं व्याख्यायित करता है, मानो शोध कर्म करने फेलोशिप पर विदेश गया हो।

लेखक यदि प्रतिभा संपन्न है तो अपनी विदेश यात्राओं का दोहन ही नहीं, शोषण तक कर डालता है। आते ही एक तो यात्रा वर्णन थर्राता है किसी पत्रिका में, उसके बाद उस पर संस्मरण लिखता है, जिसमें कुछ चटपटी घटनाओं के विवरण के साथ अपनी शौर्यता के चर्चे होते हैं। फिर वह विदेश यात्रा संस्मरण को आधार बनाकर प्रवासी भारतीयों पर आधारित विशेषांक में कहानी छपा लेता है। इस तरह विदेश की एक-दो अदद यात्राएं लेखकीय जीवन में इतना इजाफा करती हैं कि उससे न केवल उसकी सामाजिक छवि, बल्कि साहित्यिक छवि भी उदात्त और व्यापक होती है। दूसरे, छुटभैया लेखकों पर रौब गालिब होता है, सो अलग। विदेश प्रवास के चित्र इंस्टाग्राम और फेसबुक पर महीनों शोभा बढ़ाते रहते हैं। दिन भर पोस्ट डालो और फिर बाबुओं की तरह हर पोस्ट का जवाब देते रहो, हो गया दिन पास। विदेश यात्राएं लेखक के बायोडाटा में उसी तरह गुण वृद्धि करती हैं, जैसे किसी कन्या के विवाह योग्य विवरण में सिलाई, कढ़ाई, नृत्य की अतिरिक्त योग्यताएं। लेखक प्रायः सरकारी विदेश यात्राओं और सम्मेलनों के लिए तरह-तरह के आसन करते दिखाई देते हैं, कभी शीर्षासन तो कभी चरणचुंबासन। सरकारी विदेश यात्राओं के सुख अनिर्वचनीय होते हैं, वहां करना कुछ नहीं होता, सिर्फ फिरना और चरना होता है। बाकी समय ताली बजाने के लिए सुरक्षित होता है। लेकिन एक संस्मरण चलते रास्ते तैयार हो जाता है, सामाजिक धाक जमती है सो अलग। आप भी ऐसी किसी यात्रा का जुगाड़ ढूंढिए और अपना लेखकीय जनम सुफल बनाइए।

बात-बेबात

कमीशन से कैसे इंकार कर दिया !

अमां भाई साहब, नया आया इंजीनियर बहुत ही बेकार आदमी है। नाक में दम कर दिया है उसने।

इस परिवर्तनशील युग में बाबा आदम के जमाने से चली आ रही परिभाषाओं व संदर्भों में भारी बदलाव आया है। पुरातन व बुर्जुआ मान्यताएं हाशिए में पड़ी सिसक रही हैं। अद्यतन धारणाएं आधुनिकता का सोलह शृंगार कर सुर्खियों में चमचमा रही हैं। यहां हमारे पड़ोसी ठेकेदार मुसीबतमल के व्यक्तित्व के दार्शनिक पहलू का उल्लेख करना अपरिहार्य है। वे कल बेहद उदास व परेशान नजर आ रहे थे। कारण पूछते ही फूट पड़े, "अमां भाई साहब, नया आया इंजीनियर बहुत ही बेकार आदमी है। नाक में दम कर दिया है उसने।"

सुधीर कुमार चौधरी

"क्यों भई, निर्धारित परसेंटेज से ज्यादा कमीशन मांग रहा है क्या?"

"अजी ऐसा होता तो भी ठीक था। किंतु उस हरिश्चंद्र की औलाद ने तो कमीशन लेने से इंकार कर दिया है।"

"यह तो खुशी की बात है। इत्ते सारे कैंचुओं में कोई तो

यदि गांधीजी जीवित होते, तो वार्ड मेम्बरी का चुनाव भी गांधीवादी व सादगीपूर्ण तरीकों से नहीं जीत सकते थे।

रीढ़वान निकला।"

"अजी साहब, क्यों जले पर नमक छिड़क रहे हैं। मेरे सारे बिल रुके पड़े हैं। पिछला साहब तो देवता था। कभी दस प्रतिशत से एक धेला भी ज्यादा नहीं मांगा। जिस दिन बिल सबमिट करो, उसी दिन सेंक्शन हो जाते थे। ऐसे भले व ईमानदार आदमी बड़ी मुश्किल से ही मिलते हैं।"

जब से भ्रष्टाचार सामान्य शिष्टाचार का पर्याय हो गया है, तब से प्राचीन घिसी-पिटी मान्यताओं में क्रांतिकारी बदलाव हुए हैं। वर्तमान संदर्भों में ईमानदार आदमी वही है, जिसे बेईमानी करने का अवसर नहीं मिला। यह भी कहा जा सकता है कि भ्रष्ट व बेईमानी के कार्यों को पूरी ईमानदारी से करना ही सच्ची ईमानदारी है।

यदि अधिकारी उसकी कुर्सी के नीचे बह रही भ्रष्टाचार की गंगा में डुबकी न लगाए तो उससे बड़ा अज्ञानी कोई न होगा। मान लीजिए कि ट्रेन में आपने रिजर्वेशन नहीं करवाया है। यदि कंडक्टर आपको रेलवे द्वारा निर्धारित दर पर ही आरक्षण प्रदान कर दे, तो आपकी क्या प्रतिक्रिया होगी। चौंक गए न!

('टोपीतंत्र जिंदाबाद' से)

इधर-उधर से

आड़े-तिरछे

रेखांकन : दुर्गादत्त पांडेय

JobAlert

Real-time job alerts
amarujala.com/jobs

HSSC ने जारी किया विज्ञापन

महिला व पुरुष कॉन्स्टेबल के पदों पर रिक्तियां

6000 पद

आवेदन की अंतिम तिथि : 21 मार्च, 2024
पात्रताएं : 10वीं, 12वीं एवं अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें : www.hssc.gov.in

इलाहाबाद हाईकोर्ट में निकली भर्ती ■ 84 पद

वकील के पद पर आवेदन आमंत्रित

आवेदन की अंतिम तिथि 29 फरवरी, 2024
आयु-सीमा न्यूनतम आयु 35 वर्ष व अधिकतम आयु 45 वर्ष
यहां आवेदन करें
allahabadhighcourt.in

RFCL में नौकरी की संभावनाएं ■ 28 पद

मैनेजमेंट ट्रेनी के विभिन्न पदों पर रिक्तियां

आवेदन की अंतिम तिथि 14 मार्च, 2024
पात्रताएं एमबीए/बीई/बीटेक डिग्री व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
https://www.rfcl.co.in

NTPC लिमिटेड में करें आवेदन ■ 110 पद

डिप्टी मैनेजर के पदों पर मौके

आवेदन की अंतिम तिथि : 08 मार्च, 2024
वेतनमान : रुपये 70,000 से लेकर रुपये 2,00,000 प्रतिमाह
यहां आवेदन करें : www.ntpc.co.in

NHM, एमपी में निकली भर्ती ■ 42 पद

डिस्ट्रिक्ट अकाउंट मैनेजर, प्रोग्राम मैनेजर आदि पद खाली

आवेदन की अंतिम तिथि 21 मार्च, 2024
पात्रताएं पोस्ट-ग्रेजुएशन/सीए डिग्री व अन्य निर्धारित पात्रताएं
यहां आवेदन करें
www.nhmmp.gov.in

IIT, पुणे में रोजगार के अवसर ■ 20 पद

असिस्टेंट प्रोफेसर के विभिन्न पद रिक्त

आवेदन की अंतिम तिथि 18 मार्च, 2024
पात्रताएं संबंधित क्षेत्र में पीएचडी डिग्री व कार्य करने का अनुभव
यहां आवेदन करें
https://iitp.ac.in

योग्य अभ्यर्थी करें आवेदन ...

- **भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण :** प्रबंधक के पदों पर मौके।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 03 अप्रैल, 2024 तक
  आवेदन करें ■ www.nhai.gov.in
- **महानिदेशालय-अग्निशमन सेवा, नागरिक सुरक्षा एवं गृह रक्षक :** प्रयोगशाला तकनीशियन ग्रेड-I का पद खाली।
  आवेदन की अंतिम तिथि : 12 मार्च, 2024 तक
  आवेदन करें ■ http://dgfscdhg.gov.in

अपनी प्रतिक्रियाओं और सुझावों के लिए हमें udaan@amarujala.com पर ई-मेल करें।

SCHOLARSHIP ALERT

छात्रों के लिए स्कॉलरशिप पाने का अवसर

आगा खान फाउंडेशन की ओर से स्नातकोत्तर एवं पीएचडी पाठ्यक्रम में नामांकित छात्रों के लिए आगा खान फाउंडेशन इंटरनेशनल स्कॉलरशिप प्रोग्राम 2024-25 की शुरुआत की गई है। स्कॉलरशिप प्रोग्राम का उद्देश्य विकासशील देशों के होनहार छात्रों को आर्थिक सहायता प्रदान करना है। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत आवेदन करने के लिए छात्रों के पास एक अच्छा शैक्षणिक रिकॉर्ड होना चाहिए। इसके अतिरिक्त छात्रों के पास पेशेवर अनुभव, लीडरशिप स्किल व अन्य निर्धारित कौशल होने चाहिए। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत 30 वर्ष से कम उम्र के पेशेवरों को प्राथमिकता दी जाएगी। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के अंतर्गत चयनित छात्रों को पाठ्यक्रम की अवधि पूरी होने तक ट्यूशन फीस और रहने का खर्च प्रदान किया जाएगा। आवेदकों के पास पिछली कक्षा के प्रमाण-पत्र, आय प्रमाण-पत्र व अन्य निर्धारित दस्तावेज होने चाहिए। स्कॉलरशिप के लिए आवेदन ऑनलाइन माध्यम से स्वीकार किए जाएंगे।
आवेदन की अंतिम तिथि : 31 मार्च, 2024
आवेदन लिंक : http://tinyurl.com/mr4r9aad

छात्रों को मिलेगी 50 हजार रुपये तक की स्कॉलरशिप

पूर्णकालिक एमई और एमटेक कोर्स में पढ़ने वाले छात्रों के लिए केबीआई सफलता स्कॉलरशिप की शुरुआत की गई है। स्कॉलरशिप प्रोग्राम में आवेदन करने के लिए छात्रों ने कक्षा 10वीं/12वीं/डिप्लोमा में न्यूनतम 60% अंक और बीई व बीटेक पाठ्यक्रम में न्यूनतम 55% अंक प्राप्त किए हों। केबीआई सफलता स्कॉलरशिप प्रोग्राम के लिए हरियाणा, दिल्ली और एनसीआर में रहने वाले छात्र आवेदन के पात्र हैं। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत छात्राओं को प्राथमिकता दी जाएगी। इसके अतिरिक्त आवेदकों की पारिवारिक वार्षिक आय 5,00,000 रुपये से कम होनी चाहिए। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के अंतर्गत चयनित छात्रों को 50,000 रुपये की स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी। आवेदकों के पास 10वीं/12वीं/डिप्लोमा के प्रमाण-पत्र, पिछली कक्षा के प्रमाण-पत्र, आय प्रमाण-पत्र, फीस रसीद, एडमिशन लेटर व अन्य निर्धारित दस्तावेज होने चाहिए। केबीआई सफलता स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत मिलने वाली इस स्कॉलरशिप के लिए आवेदक ऑनलाइन माध्यम से आवेदन कर सकते हैं।

आवेदन की अंतिम तिथि : 11 मार्च, 2024
आवेदन लिंक : http://tinyurl.com/55rfkrnm

टाटा एंडोमेंट लोन स्कॉलरशिप 2024-25

जेएन टाटा एंडोमेंट की ओर से छात्रों को विदेश में उच्च शिक्षा प्राप्त करने के लिए मेरिट-बेस्ड जेएन टाटा एंडोमेंट लोन स्कॉलरशिप 2024-25 की शुरुआत की गई है। इसके तहत आवेदन करने के लिए छात्रों की आयु 30 जून, 2024 के अनुसार 45 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए। आवेदकों के पास किसी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से 60% अंकों के साथ स्नातक एवं स्नातकोत्तर की डिग्री होनी चाहिए। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के तहत विदेश में स्नातकोत्तर प्रथम वर्ष के अंत में या द्वितीय वर्ष के शुरुआत में पढ़ने वाले छात्र आवेदन कर सकते हैं। छात्रों का चयन ऑनलाइन टेस्ट एवं साक्षात्कार के आधार पर किया जाएगा। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के अंतर्गत चयनित उम्मीदवारों को 10,00,000 रुपये तक की स्कॉलरशिप प्रदान की जाएगी। आवेदकों के पास किसी विश्वविद्यालय से प्राप्त एडमिशन लेटर, अंतिम वर्ष के प्रमाण-पत्र, जीआरई/जीमैट/टीओईएफएल/आईईएलटीएस/पीटीई के स्कोरकार्ड, रिज्यूमे एवं अन्य निर्धारित दस्तावेज होने चाहिए। स्कॉलरशिप प्रोग्राम के लिए आवेदन ऑनलाइन माध्यम से स्वीकार किए जाएंगे।
आवेदन की अंतिम तिथि : 15 मार्च, 2024
आवेदन लिंक : http://tinyurl.com/3v68y4hy

25 फरवरी, 1964

आज का दिन

प्रसिद्ध मुक्केबाज मुहम्मद अली ने अपने पहले विश्व खिताब के लिए सोनी लिस्टन को हराया था। उन्होंने लिस्टन को सातवें राउंड में हराकर विश्व हैवीवेट खिताब अपने नाम किया था।

- 1932 : एडोल्फ हिटलर को जर्मन नागरिकता मिली थी।
- 1940 : नेशनल हॉकी लीग का पहली बार अमेरिका में प्रसारण किया गया था।
- 1988 : भारत ने सतह से सतह पर मार करने वाले देश में बने पहले प्रक्षेपास्त्र का परीक्षण किया।
- 2001 : महान क्रिकेट खिलाड़ी डॉन ब्रैडमैन का निधन हुआ था।

ब्रत त्योहार

आज : फाल्गुन कृष्ण पक्ष प्रतिपदा।
कल : शबे-बरात, वसंत ऋतु, सूर्य उत्तरायणे, दक्षिण गोले।
राहुकाल : प्रातः 07.30 से 09.00 तक।

कल का पंचांग

सूर्योदय : 06.53
सूर्यास्त : 18.15
(भारतीय मानक समयानुसार)

विक्रमी संवत 2080, 07 फाल्गुन मास शाके 1945, फाल्गुन मास 14 प्रविष्टे, 15 सावान हिजरी 1445, फाल्गुन कृष्ण पक्ष द्वितीया 23.15 तक उपरांत तृतीया, उत्तराफाल्गुनी नक्षत्र 28.30 तक उपरांत हस्त नक्षत्र, धृति योग 15.26 तक उपरांत शूल योग, तैतिल करण 09.54 तक उपरांत गर करण, चंद्रमा कन्या राशि में 08.10 बजे।

amarujala.com/astrology

राशिफल

पं. विनोद त्यागी

मेष : भाग्य सहायक रहेगा। नए अवसर मिल सकते हैं। व्यवसाय में सामान्य लाभ होगा। यात्रा में परेशानी होगी।

वृष : अस्थिरता बनी रहेगी। स्वजनों से निराशा होगी। शुभ कार्य में व्यय संभव है। व्यवसाय में लाभ होगा।

मिथुन : कार्य विशेष में सफलता मिलेगी। नए कार्य में पूंजी निवेश हो सकता है। व्यवसाय में लाभ होगा।

कर्क : मन अशांत रहेगा। स्वजन व्यवहार से पीड़ा होगी। आर्थिक स्थिति अनुकूल रहेगी। सामान्य लाभ होगा।

सिंह : सामाजिक कार्य में व्यस्त रहेंगे। नए कार्य का प्रस्ताव आ सकता है। व्यवसाय में यथेष्ट लाभ होगा।

कन्या : किसी घटना से विचलित रहेंगे। स्वास्थ्य नरम रहेगा। अचानक व्यय संभव है। व्यवसाय में मंदी रहेगी।

तुला : मित्रों का समागम रहेगा। भू-संपत्ति का सौदा पट सकता है। सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ेगी। लाभ से संतुष्ट रहेंगे।

वृश्चिक : प्रभावी व्यक्ति से पहचान बढ़ेगी। उन्नति का नया मार्ग मिल सकता है। स्वजन का सहयोग मिलेगा।

धनु : मान-सम्मान की चिंता रहेगी। विरोधी पक्ष से सावधानी बरतें। व्यावसायिक लाभ सामान्य रह सकता है।

मकर : सहृदयता पर नियंत्रण रखें। योजना में अवरोध आएंगे। आर्थिक क्षेत्र में परेशानी रह सकती है।

कुंभ : नई कार्य योजना में व्यस्त रहेंगे। पुराने मित्र से भेंट हो सकती है। व्यावसायिक स्थिति से संतुष्ट रहेंगे।

मीन : दिनमान अनुकूल रहेगा। नई नौकरी का प्रस्ताव आ सकता है। अटके मामले में सफलता मिलेगी।

सुडोकू

			3		1	5		
					7	9	1	
		9	6	5				
	9	3		1				8
	4		9		2		7	
2				8		6	9	
				7	9	8		
	7	1	2					
		2	1		6			

सुडोकू 81 वर्गों का ग्रिड है, जो 9 वर्गों के ब्लॉक में बंटा हुआ होता है। कुछ वर्गों के अंक लिखे हैं और खाली वर्गों में 1 से लेकर 9 तक के अंक लिखने होते हैं। कोई नंबर 1 पंक्ति, कॉलम या 9 वर्ग वाले छोटे ब्लॉक में दोबारा नहीं आ सकता है।

उत्तर

7	8	4	3	9	1	5	6	2
3	6	5	8	2	7	9	1	4
1	2	9	6	5	4	3	8	7
6	9	3	7	1	5	2	4	8
5	4	8	9	6	2	1	7	3
2	1	7	4	8	3	6	9	5
4	3	6	5	7	9	8	2	1
9	7	1	2	3	8	4	5	6
8	5	2	1	4	6	7	3	9

डेली हेल्थ कैप्सूल

क्या हमेशा ठंडे रहते हैं आपके पैर?

कुछ लोगों के पैर शरीर के शेष अंगों की तुलना में ठंडे रहते हैं। उन्हें झुनझुनी की अनुभूति भी होती है। इसके क्या कारण हैं?

पैर अगर शरीर के बाकी हिस्सों की तुलना में अधिक ठंडे रहते हैं तो यह खराब ब्लड सर्कुलेशन का संकेत हो सकता है, जिससे पैरों तक पर्याप्त रक्त पहुंचना मुश्किल हो जाता है। हृदय की स्थिति सर्कुलेशन समस्याओं का कारण बन सकती है, जिसके

परिणामस्वरूप हृदय को शरीर के माध्यम से रक्त को प्रभावी ढंग से पंप करने में संघर्ष करना पड़ता है। ठंडे पैर आमतौर पर एनीमिया के कारण भी होते हैं। आयरन की कमी के कारण होने वाला एनीमिया स्वस्थ लोगों को भी प्रभावित कर सकता है। अपने आहार में बदलाव और पूरक आहार लेकर इस समस्या को आसानी से दूर किया जा सकता है। तंत्रिका क्षति के कारण मधुमेह से ग्रस्त व्यक्ति के पैर ठंडे हो सकते हैं। पैरों में सुन्नता या झुनझुनी की अनुभूति भी हो सकती है। यदि तंबाकू का सेवन अथवा धूम्रपान करते हैं और पैर ठंडे हैं, तो यह 'बर्जर डिजीज' हो सकता है। इसके कारण हाथ-पैरों में रक्त वाहिकाएं सूज जाती हैं, जो तंबाकू के सेवन से जुड़ी होती हैं। परिणामस्वरूप रक्त प्रवाह धीमा होता है और थक्के बन सकते हैं, जिससे संक्रमण हो सकता है।

क्या कहते हैं विशेषज्ञ

शरीर में ब्लड सर्कुलेशन ठीक से न होने के कारण पैर ठंडे होते हैं। बीपी कम होने पर भी पैर ठंडे रहते हैं। इससे बचने के लिए व्यायाम करें, एक जगह पर ज्यादा देर न बैठें और परेशानी होने पर जांच कराएं।

-डॉ. आर.पी. सिंह
वरिष्ठ चिकित्सक

नगर निगम चंडीगढ़

निविदा सूचना

क्र. सं.	कार्य का नाम	बोली प्रस्तुतिकरण अनुसूची (ऑनलाइन)	तकनीकी बोली खोलना (ऑनलाइन)
	अधिशासी अभियंता, सड़क मंडल सं. 1		
1.	गांव कजेहड़ी, चंडीगढ़ में कॉम्युनिटी सेंटर के सामने पार्किंग में और फिरनी रोड पर 80 एमएम इंटरलॉकिंग पेवर ब्लॉकस का प्रावधान व संस्थापन। शीर्षक : वार्ड विकास निधि। अनुमानित लागत: 102.16 लाख रू. ईएमडी: 2,04,317/- रू. समय सीमा: 09 माह	23.02.2024 से 01.03.2024 को दोपहर 12.00 बजे तक	01.03.2024 को दोपहर 12.00 बजे
	अधिशासी अभियंता, सड़क मंडल सं. 3		
2.	ईडब्ल्यूएस कॉलोनी, धनास, चंडीगढ़ में सीसीटीवी कैमरों की सप्लाई, संस्थापन, परीक्षण, कमिशनिंग और एएमसी। शीर्षक : डब्ल्यूडीएफ। अनुमानित लागत: 85.75 लाख रू. ईएमडी: 1,71,500/- रू. समय सीमा: 04 माह	24.02.2024 से 04.03.2024 को दोपहर 12.00 बजे तक	05.03.2024 को दोपहर 12.00 बजे

नोट:- अन्य सभी शर्तें व नियम और संपूर्ण विनिआसू को वेबसाइट https://etenders.chd.nic.in पर अपलोड किया गया है।

अधिशासी अभियंता
सड़क मंडल सं. 1 और सड़क मंडल सं. 3, एम.सी. चंडीगढ़

कार्यालय कृषि उत्पादन मण्डी समिति बिल्सी, बदायूँ

पत्रांक: कृ.उ.म.स./2023/सफाई/108 दिनांक: 23/02/2024

सफाई ई-निविदा आमंत्रण

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि कृषि उत्पादन मंडी समिति **बिल्सी** हेतु वित्तीय वर्ष 2024-25 (कार्य अवधि 01-04-2024 से 31-03-2025 तक) की दैनिक सफाई कार्य हेतु ई-निविदा दिनांक 15-03-2024 के सायं 05:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। ई-टेंडर हेतु सफाई के लिए नियम व शर्तों के अधीन इच्छुक व्यक्ति /फर्म/ संस्था इस निविदा में भाग ले सकते हैं ई - टेंडर के माध्यम से ऑनलाइन ई - निविदाएं वेबसाइट **etender.up.nic.in** पर दिनांक 24-02-2024 को अपराह्न 12:00 से दिनांक 15.03.2024 को शाम 5:00 बजे तक डाउनलोड/अपलोड की जा सकती है। निविदा दिनांक 16.03.2024 को अपराह्न 03:00 बजे मंडी समिति **बिल्सी** के कार्यालय में खोली जाएंगी जिस का विवरण निम्नवत है।

क्र०स०	विवरण	नवीन मण्डी स्थल बिल्सी के वार्षिक सफाई कार्य वर्ष 2024-25
1	निविदा प्रपत्र का मूल्य जीएसटी सहित	रू 1180/- (एक हजार एक सौ अस्सी)
2	निविदा प्रपत्र डाउनलोड/ अपलोड करने की तिथि	दिनांक 24-02-2024 से 15-03-2024 की सांय 05:00 बजे तक
3	निविदा प्रपत्र कार्यालय में जमा करने की तिथि व स्थान	दिनांक 15-03-2024 को अपराह्न 05:00 तक मण्डी समिति कार्यालय बिल्सी
4	निविदा प्रपत्र खोलने की तिथि व स्थान	दिनांक 16-03-2024 को दोपहर 3:00 बजे मण्डी समिति कार्यालय बिल्सी
5	निविदा कमेटी द्वारा वित्तीय बिड खोलने की तिथि	टेक्निकल बिड खोलने के उपरांत
6	धरोहर राशि	100,000.00/- (रू० एक लाख मात्र) एफ०डी०आर० निविदा के साथ कार्यालय मण्डी समिति बिल्सी में जमा करना अनिवार्य होगा।
7	कार्य अवधि	दिनांक 01-04-2024 से 31-03-2025 तक

प्रत्येक निविदादाता को जमानत धनराशि के रूप में बैंक गारन्टी या एफडीआर रू 100,000.00 (रू0 एक लाख) बन्धक जोकि सचिव कृषि उत्पादन मण्डी समिति बिल्सी के पक्ष में कार्यालय मण्डी समिति बिल्सी में टेक्निकल बिड के साथ जमा करानी अनिवार्य होगी। इच्छुक व्यक्ति/फर्म/संस्था किसी भी कार्य दिवस में नियम/शर्तों एवं उपरोक्त के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी कार्यालय मण्डी समिति बिल्सी से किसी भी कार्य दिवस में प्राप्त कर सकते हैं।

सचिव
कृषि उत्पादन मण्डी समिति बिल्सी (बदायूँ)

उपजिलाधिकारी/सभापति
कृषि उत्पादन मण्डी समिति बिल्सी (बदायूँ)

कार्यालय कृषि उत्पादन मण्डी समिति उझानी, बदायूँ

पत्रांक- कृ०उ०म०स०/2023/सफाई/264 दिनांक 23/02/24

सफाई ई-निविदा आमंत्रण

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि कृषि उत्पादन मंडी समिति उझानी हेतु वित्तीय बर्ष 2024-25 (कार्य अवधि 01-04-2024 से 31-03-2025 तक) की दैनिक सफाई कार्य हेतु ई-निविदा दिनांक 15-03-2024 के सायं 05:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। ई-टेंडर हेतु सफाई के लिए नियम व शर्तों के अधीन इच्छुक व्यक्ति / फर्म/ संस्था इस निविदा में भाग ले सकते हैं ई-टेंडर के माध्यम से ऑनलाइन ई निविदाएं वेबसाइट etender.up.nic.in पर दिनांक 24-02-2024 को अपराहन् 12:00 से दिनांक 15.03.2024 को शाम 5:00 बजे तक डाउनलोड/अपलोड की जा सकती है। निविदा दिनांक 16.03.2024 को अपराहन् 12:00 बजे मंडी समिति उझानी के कार्यालय में खोली जाएंगी जिस का विवरण निम्नवत है।

क्र.सं.	विवरण	नवीन मण्डी स्थल उझानी के वार्षिक सफाई कार्य वर्ष 2024-25
1	निविदा प्रपत्र का मूल्य जीएसटी सहित	रु 1180/- (एक हजार एक सौ अस्सी)
2	निविदा प्रपत्र डाउनलोड / अपलोड करने की तिथि	दिनांक 24-02-2024 से 15-03-2024 की सांय 05:00 बजे तक
3	निविदा प्रपत्र कार्यालय में जमा करने की तिथि व स्थान	दिनांक 15-03-2024 को अपराह्न 05:00 तक मण्डी समिति कार्यालय उझानी
4	निविदा प्रपत्र खोलने की तिथि व स्थान	दिनांक 16-03-2024 को दोपहर 12:00 बजे मण्डी समिति कार्यालय उझानी
5	निविदा कमेटी द्वारा वित्तीय बिड खोलने की तिथि	टेकिनकल विड खोलने के उपरांत
6	धरोहर राशि	125,000.00/- (रू० एक लाख पच्चीस हजार मात्र) एफ०डी०आर० निविदा के साथ कार्यालय मण्डी समिति उझानी में जमा करना अनिवार्य होगा।
7	कार्य अवधि	दिनांक 01-04-2024 से 31-03-2025 तक

प्रत्येक निविदादाता को जमानत धुनराशि के रूप में बैंक गारन्टी या एफडीआर रू 125,000.00 (रू० एक लाख पच्चीस हजार) बन्धक जोकि सचिव कृषि उत्पादन मण्डी समिति उझानी के पक्ष में कार्यालय मण्डी समिति उझानी में टेक्निकल विड के साथ जमा करानी अनिवार्य होगी। इच्छुक व्यक्ति/फर्म/संस्था किसी भी कार्य दिवस में नियम शर्तों एवं उपरोक्त के सम्बन्ध में पूर्ण जानकारी कार्यालय मण्डी समिति उझानी से किसी भी कार्य दिवस में प्राप्त कर सकते हैं।

सचिव
कृषि उत्पादन मण्डी समिति उझानी (बदायूँ)

उपजिलाधिकारी/सभापति
कृषि उत्पादन मण्डी समिति उझानी (बदायूँ)

कार्यालय नगर निगम, शाहजहाँपुर।

पत्रांक :-393/क०अनु०/न0नि0/2023-24 दिनांक 24.02.2024

सामान्य निविदा-सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि नगर निगम, शाहजहाँपुर सीमान्तर्गत प्रयोक्ता शुल्क, ठेका वित्तीय वर्ष 2024-25 के लिए निविदाओं की बिक्री दिनांक 01.03.2024 को 02.00 बजे तक की जायेगी तथा उसी दिन दोपहर 03.00 बजे तक टेन्डर बाक्स में डाली जा सकती है। प्राप्त निविदायें निविदा दाता के समक्ष दिनांक 01.03.2024 को अपरान्ह 04.00 बजे खोली जायेगी। धनराशि दस लाख से अधिक की निविदा को ऑनलाईन (etender.up.nic.in) के माध्यम से और शेष निविदायें ऑफलाईन के माध्यम से स्वीकार की जायेंगी। अधिक जानकारी के लिए नगर निगम कार्यालय से जानकारी प्राप्त की जा सकती है। किसी भी निविदा को स्वीकृत तथा अस्वीकृत करने का अधिकार अधोहस्ताक्षरी में निहित होगा। प्रत्येक निविदा दाता को निविदा प्रपत्र के साथ दो प्रमाणित फोटो, हैसियत प्रमाण-पत्र एवं चरित्र प्रमाण-पत्र जो सक्षम अधिकारी द्वारा निर्गत हो और वर्तमान में वैध हो एवं आधार कार्ड तथा नगर निगम द्वारा निर्गत अदेयता प्रमाण-पत्र की प्रति संलग्न करने के उपरान्त ही निविदा प्रपत्र दिया जायेगा। जमानत धनराशि का बैंक ड्राफ्ट नगर निगम, शाहजहाँपुर के पक्ष में देय होगा।

निविदा प्रपत्र निर्धारित शुल्क जमा कर सम्पत्ति अनुभाग/भूमि लिपिक से प्राप्त किया जा सकता है। नीलामी शर्तें नगर निगम के सम्पत्ति अनुभाग में किसी भी कार्य दिवस में देखी जा सकती है जिनके अवलोकन उपरान्त ही नीलामी में प्रतिभाग करना सुनिश्चित करें।

क्र. सं.	मद	न्यूनतम धनराशि (2024-25)	10 प्रतिशत प्रतिभूमि की धनराशि	निविदा प्रपत्र का मूल्य जी०एस०टी० सहित
1	ठेका मुर्दा उठाने जानवरान सीमा नगर निगम, शाहजहाँपुर।	4,00,000.00	40,000.00	472.00
2	ठेका मछली मार्केट मो०अली मार्केट नगर निगम, शाहजहाँपुर।	2,65,000.00	26,500.00	354.00
3	ठेका भूसा-घास पड़ाव वजीरगंज।	7,35,000.00	73,500.00	944.00
4	ठेका भूसा-घास जामा मस्जिद से बरेली मोड़ तक।	5,00,000.00	50,000.00	590.00
5	साईकिल स्टैण्ड स्वशासी राज्य चिकित्सा महाविद्यालय, अजीजगंज सड़क के सामने खाली भूमि पर।	14,66,000.00	1,46,600.00	1,770.00
6	ठेका दो/चार पहिया वाहन पार्किंग स्टैण्ड, शहीद द्वार मैदान।	1,15,000.00	11,500.00	236.00
7	ठेका दो/चार पहिया बाहन पार्किंग स्टैण्ड, गोविन्दगंज ओवरब्रिज के नीचे।	24,000.00	2,400.00	118.00
8	ठेका दो/चार पहिया वाहन पार्किंग स्टैण्ड डा०सुदामा प्रसाद इण्टर कालेज, खिरनीबाग।	6,85,000.00	68,500.00	826.00
9	ठेका दो/चार पहिया वाहन पार्किंग स्टैण्ड, बहादुरगंज जेल के पीछे।	1,14,000.00	11,400.00	236.00
10	नगर निगम सीमान्तर्गत चिन्हित स्थलों पर होर्डिंगस को लगाने हेतु एकाधिकार।	9,25,000.00	92,500.00	1,180.00
11	नगर निगम द्वारा लगाई गई 04 एल0ई0डी0 के विज्ञापन के संचालन का ठेका।	1,00,000.00	10,000.00	118.00
12	ठेका पार्किंग हनुमतधाम बेसमेन्ट व प्रथम-तल।	5,00,000.00	50,000.00	590.00
13	ठेका पोल बोर्ड, आई०एच०बी० हैंड बिल, सनपैक, वॉल पेटिंग, बैनर, घूमने वाले प्रचार-प्रसार रिक्शा आदि।	8,00,000.00	80,000.00	944.00

नगर आयुक्त

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता सीतापुर/खीरी वृत्त, लो0नि0वि0, सीतापुर

पत्रांक 1190 /352सी/ई-टेण्डर-सी0वी0/2023-24 दिनांक 19.02.2024

ई-निविदा सूचना (ई-प्रोक्योरमेण्ट नोटिस)

महामहिम राज्यपाल महोदय उ0प्र0 की ओर से लोक निर्माण विभाग उ0प्र0 में *"मार्ग निर्माण कार्य"* हेतु पंजीकृत निविदादाताओं से ई-टेण्डरिंग के माध्यम से नीचे दर्शाये गये कार्य हेतु निविदा आमंत्रित की जाती है।

क्र0 स0	जनपद/खण्ड का नाम	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (लाख में)	धरोहर धनराशि (लाख में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य समस्त कर सहित (रू0 में)	कार्य पूर्ण करने की अवधि (वर्षा ऋतु सहित)	ठेकेदार की पंजीयन की श्रेणी
1	2	3	4	5	6	7	8
1	खीरी/प्रा0खं0	भल्लिया से जिगनाहा सम्पर्क मार्ग की विशेष मरम्मत का कार्य	41.00	4.05	2715.00	02 माह	"ए" "बी" "सी"
2	खीरी/प्रा0खं0	पीलीभीत बस्ती मार्ग से सिकटिहा परसेहरा सम्पर्क मार्ग की विशेष मरम्मत का कार्य	40.00	4.00	2715.00	02 माह	"ए" "बी" "सी"
3	खीरी/प्रा0खं0	लकेसर से मनिकापुर सम्पर्क मार्ग की विशेष मरम्मत का कार्य	47.00	4.35	2715.00	02 माह	"ए" "बी" "सी"

बिड डाक्यूमेन्ट वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर 27.02.2024 से दिनांक 04.03.2024 तक उपलब्ध है जो कि दिनांक 04.03.2024 को समय अपराह्न 12:00 बजे तक अपलोड किये जा सकते है। इसकी तकनीकी बिड दिनांक 04.03.2024 को अपराह्न 12:30 बजे खोली जायेगी।

निविदा से सम्बन्धित अधिक जानकारी वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर उपलब्ध है।

(तरुणेन्द्र त्रिपाठी)
अधिशासी अभियन्ता
प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0,
लखीमपुर खीरी

(एन0के0 वर्मा)
अधीक्षण अभियन्ता
सीतापुर/खीरी वृत्त, लो0नि0वि0,
सीतापुर।

www.upgov.nic.in
Upid- 204304 Dt. 23.02.2024

हेल्प लाईन (टोल फ्री) नम्बर 1800-1215-707

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता सिंचाई कार्य मण्डल, सीतापुर

ई-टेण्डरिंग के माध्यम से आमंत्रित अतिअल्पकालीन ई-निविदा सूचना संख्या-07/अधी0अभि0/2023-24

पत्रांक:- 991 /सि0का0मं0/निविदा 2023-24, दिनांक:- 22.02.2024

महामहिम राज्यपाल उत्तर प्रदेश की ओर से इस मण्डल के अन्तर्गत अधिशासी अभियन्ता, शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर के निम्नलिखित कार्य हेतु ऑनलाइन http://etender.up.nic.in/ के माध्यम से प्री-क्वालिफिकेशन, टेक्निकलबिड एवं फाइनेन्शियल बिड, सिंचाई विभाग में वर्गीकृत श्रेणी में पंजीकृत ठेकेदारों से दिनांक:-26.02.2024 की पूर्वान्ह-10.00 बजे से दिनांक:-03.03.2024 को अपरान्ह-13.00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। प्री-क्वालिफिकेशन टेक्निकल बिड दिनांक:-03.03.2024 को अपरान्ह-14.00 बजे मुख्य अभियन्ता (शारदा) द्वारा गठित समिति द्वारा ऑनलाइन खोली जायेंगी। प्री-क्वालिफिकेशन एवं टेक्निकल बिड में उपयुक्त पाये गये निविदादाताओं के फाइनेन्शियल बिड, खोलने की तिथि कुल प्राप्त निविदाओं की संख्या के आधार पर, नोटिस बोर्ड/ई-पोर्टल पर सूचित किया जायेगा।

क्र0 स0	लाट सं0	कार्य का विवरण	कार्य की अनुमानित लागत (लाख रू0 में)	धरोहर धनराशि (लाख रू0 में)	कार्य को पूर्ण करने की अवधि	निविदा प्रपत्र मूल्य (जी0एस0टी0 स्टेशनरी चार्ज सहित) (रू0 में)	पंजीकृत श्रेणी	कार्य से सम्बन्धित अधिशासी अभियन्ता
1	2	3	4	5	6	7	8	9
1.	01	जनपद-शाहजहाँपुर में सिंचाई विभाग के निरीक्षण भवन में दो अतिरिक्त सूट एवं आन्तरिक पथ आदि के निर्माण का कार्य।	94.00	1.88	03 माह	2,715.00	"श्रेणी-बी अथवा उच्च"	शारदा नहर खण्ड, शाहजहाँपुर

यह ई-निविदा सूचना उ0प्र0 सरकार की वेबसाइट http://up.gov.in/, सूचना विभाग की वेबसाइट http://information.up.nic.in/ तथा सिंचाई विभाग की वेबसाइट http://idup.gov.in/ पर भी उपलब्ध है।

अधीक्षण अभियन्ता
सिंचाई कार्य मण्डल,
सीतापुर

www.upgov.nic.in
Upid- 204383 Dt. 23.02.2024

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, प्रखण्ड- शाहजहाँपुर।

पत्रांक 1385/ग्रा0अ0वि0/निविदा/2023-24 दिनांक :- 13 फरवरी, 2024

अल्पकालीन निविदा सूचना

01- महामहिम राज्यपाल, उ0प्र0 की ओर से अधोहस्ताक्षरी के द्वारा निम्नलिखित कार्यो हेतु मुहरबन्द निविदाएं प्रतिशत दर में श्रेणी ए0/बी0/सी0/डी0 में पंजीकृत विभागीय ठेकेदारों से आमंत्रित की जाती है। निविदादाता एक या एक से अधिक कार्यो के लिये निविदा डाल सकता है।

02- तालिका के अनुसार कार्यो का विवरण -

क्र0 सं0	कार्य का नाम	अनुमानित लागत (रूपये में)	धरोहर धनराशि (बिड सिक्योरिटी) (रूपये में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (जी0एस0टी0 मूल्य सहित रूपये में)	कार्य पूर्ण करने की अवधि (वर्षा ऋतु सम्मिलित करते हुये)
1	2	3	4	5	6
	विधायक निधि क्षेत्र-शाहजहाँपुर				
1	ग्राम टिकरी में नया शिव मन्दिर/राजकीय इ0का0 के पास रैन बसेरा का निर्माण कार्य।	450000	9000	678	04 माह
2	ग्राम कपेड़कटका वि0ख0 ददरौल में श्री मोतीलाल के मकान से उ0प्र0 माध्यमिक विद्यालय तक 60मी0 इण्टरलॉकिंग का निर्माण कार्य।	565000	11300	767	04 माह
3	श्यामतगंत गौटिया में देवस्थान से सुरेश के मकान तक 71.00 मी0 सी0सी0 निर्माण कार्य।	921000	18500	854	04 माह
4	सरदार पटेल हिन्दू इण्टर कालेज, शाहजहाँपुर में 7.62x6.10 मी0 मांप का एक कक्ष निर्माण कार्य।	500000	10000	678	04 माह
5	ग्राम कुरसम्भा में रोड से वीरेन्द्रपाल के मकान तक 60.00 मी0 सी0सी0/नाली निर्माण कार्य।	608000	12200	767	04 माह
6	ग्राम काजीपुर में शवदाह गृह (शमशान घाट) की 132.00 मी0 बाउन्ड्रीवाल निर्माण कार्य	926000	18600	854	04 माह
7	ग्रा0 घुसगवां में सन्तराम के मकान से शंकर के मकान तक 30.00 मी0 सी0सी0/नाली निर्माण कार्य	137000	2800	613	04 माह
8	ग्राम घुसगवां में मंगू के मकान से बाजार तक 25.00 मी0 सी0सी0/नाली निर्माण कार्य	99500	2000	613	04 माह
9	ग्राम घुसगवां में अखिलेश के मकान से रक्षपाल के मकान तक 40.00 मी0 सी0सी0 निर्माण कार्य	175000	3500	613	04 माह
10	ग्राम घुसगवां में वेदराम के मकान से राम सिंह के मकान तक 45.00 मी0 सी0सी0 निर्माण कार्य	208500	4200	678	04 माह
	मा0 सदस्य विधान परिषद नोडल जनपद-शाहजहाँपुर				
11	ग्राम पंचायत जमौर वि0ख0 ददरौल में मुख्य मार्ग से उच्चतर प्राथमिक विद्यालय जमौर तक 165मी0 इण्टरलॉकिंग, नाली निर्माण कार्य।	993000	19900	854	04 माह
	विधायक निधि क्षेत्र-तिलहर				
12	ग्राम कुदिरना में झुनकाई के मकान से जूनियर हाईस्कूल तक 165मी0 इण्टरलॉकिंग कार्य।	999000	20000	854	04 माह
13	ग्राम चमरूआ में मानवेन्द्र प्रताप के मकान से अजयपाल की दुकान तक 150 मी0 इण्टरलॉकिंग कार्य।	998000	20000	854	04 माह
14	ग्राम हथगांव में दुर्गा मन्दिर, जानकी प्रसाद की चौपाल से जूनियर हाईस्कूल तक 132.00 मी0 इण्टरलॉकिंग कार्य।	998000	20000	854	04 माह
15	ग्राम महोलिया में अवधेश के मकान, जागन सिंह के मकान से मेन रोड तक 82मी0 इण्टरलॉकिंग कार्य।	679000	13600	767	04 माह
16	ग्राम रामनगर सम्भाखास में बंजारा वाली गली में 128 मी0 इण्टरलॉकिंग कार्य।	997000	20000	854	04 माह
17	ग्राम धरायू में सर्वेश के मकान से खुशीराम के मकान 145मी0 इण्टरलॉकिंग कार्य।	987500	19800	854	04 माह
18	ग्राम खेड़ासम्भा में रामादास बालमीकि के मन्दिर से प्रेमपाल गडरिया के मकान तक 120मी0 इण्टरलॉकिंग कार्य।	998500	20000	854	04 माह
	विधायक निधि क्षेत्र-जलालाबाद				
19	गंगा चौराहा जरियनपुर श्रंगी जी स्मृति द्वार अधिष्ठान कार्य।	701000	14100	767	03 माह
20	ग्राम पंचायत रमापुर बझेड़ा लांस नायक दृगपाल सिंह राठौर जी स्मृति द्वार अधिष्ठापन कार्य	576000	11600	767	03 माह
21	खण्डहर के पास आत्मानन्द जी स्मृति द्वार अधिष्ठान कार्य	631000	11600	767	03 माह
22	बाराकलां में परमवीर चक्र विजेता ठा0 जदुनाथ सिंह जी स्मृतिद्वार अधिष्ठान कार्य।	666000	13400	767	03 माह
	विधायक निधि क्षेत्र-जलालाबाद (स्वीकृति की प्रत्याशा में)	वि0ख0-मिर्जापुर			
23	कम्पोजिट विद्यालय अस्तौली में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
24	प्राथमिक विद्यालय औरंगाबाद में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
25	कम्पोजिट विद्यालय बगरखेत में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
26	कम्पोजिट विद्यालय बानगांव में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
27	कम्पोजिट विद्यालय भरतपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
28	प्राथमिक विद्यालय भौती में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
29	पूर्व प्राथमिक विद्यालय वीधापुर सिटौली में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
30	प्राथमिक विद्यालय चिकटिया में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
31	प्राथमिक विद्यालय दरियायगंज में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
32	कम्पोजिट विद्यालय ढाई-1 में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
33	कम्पोजिट विद्यालय दोषपुर नागर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
34	प्राथमिक विद्यालय दीपपुर थोक में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
35	प्राथमिक विद्यालय गौटिया में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
36	प्राथमिक विद्यालय गोकुल नगला में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
37	प्राथमिक विद्यालय गुटेटी में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
38	प्राथमिक विद्यालय जरियनपुर-1 में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
39	प्राथमिक विद्यालय कम्मरपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
40	प्राथमिक विद्यालय कोठी उर्फ गुलौथी में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
41	प्राथमिक विद्यालय कुनिया-1 में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
42	प्राथमिक विद्यालय कुनिया-2 में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
43	प्राथमिक विद्यालय माधौपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
44	कम्पोजिट विद्यालय मिलकिया में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
45	प्राथमिक विद्यालय मिर्जापुर-1 में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
46	प्राथमिक विद्यालय नगला पिपरिया में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
47	प्राथमिक विद्यालय नवादा में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
48	प्राथमिक विद्यालय पैलानी उत्तर-1 में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
49	प्राथमिक विद्यालय पापर मझरा में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
50	कम्पोजिट विद्यालय पिढ़ुआ में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
51	पूर्व माध्यम विद्यालय रसूलपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
52	प्राथमिक विद्यालय शेरगंज में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
53	प्राथमिक विद्यालय शेरपुर कुरिया मे तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
54	कम्पोजिट विद्यालय सिंगहा युसुफपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
55	प्राथमिक विद्यालय तारापुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
56	कस्तूरबा गाँधी बालिका विद्यालय मिर्जापुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
	विधायक निधि क्षेत्र-जलालाबाद वि0ख0-कलान				
57	प्राथमिक विद्यालय अजीतनगला (दसिया) में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
58	प्राथमिक विद्यालय भर्रामई में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
59	प्राथमिक विद्यालय गुल्लाह में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
60	कम्पोजिट विद्यालय गोकल नगला में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
61	प्राथमिक विद्यालय पिलुआ में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
62	कम्पोजिट विद्यालय जखिया में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
63	प्राथमिक विद्यालय लखनपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
64	प्राथमिक विद्यालय तिलौआ में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
65	प्राथमिक विद्यालय रूकनपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
66	प्राथमिक विद्यालय टढ़ई में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
67	प्राथमिक विद्यालय सहवेगपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
68	कम्पोजिट विद्यालय नौसना में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
69	प्राथमिक विद्यालय सुखनईया में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
70	प्राथमिक विद्यालय लक्ष्मनपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
71	प्राथमिक विद्यालय धर्मपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
72	कम्पोजिट विद्यालय बाराकला में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
73	प्राथमिक विद्यालय अमिदापुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
74	प्राथमिक विद्यालय हरेली नेकपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
75	प्राथमिक विद्यालय महमदियापुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
76	प्राथमिक विद्यालय निविया नगला में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
77	प्राथमिक विद्यालय बहगीखेड़ा में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
78	कस्तूरबागांधी बालिका विद्यालय कलान में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
	विधायक निधि क्षेत्र-जलालाबाद वि0ख0-जलालाबाद				
79	प्राथमिक विद्यालय अफतियापुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
80	प्राथमिक विद्यालय बझेरा-2 में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
81	पूर्व माध्यमिक विद्यालय बहादुरपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
82	प्राथमिक विद्यालय बिचपुरिया में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
83	कम्पोजिट विद्यालय चौकी आजमपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
84	प्राथमिक विद्यालय ढका त0 उजेरा में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
85	कम्पोजिट विद्यालय धर्मपुर पिढ़रिया में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
86	प्राथमिक विद्यालय दुमकापुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
87	प्राथमिक विद्यालय गोरा महुआ गाड में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
88	प्राथमिक विद्यालय गुलड़िया में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
89	प्राथमिक विद्यालय ज्ञानपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
90	प्राथमिक विद्यालय हरनई में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
91	कम्पोजिट विद्यालय हारकटेटा में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
92	प्राथमिक विद्यालय इस्लामगंज में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
93	प्राथमिक विद्यालय ककरहा सिकन्दरपुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
94	प्राथमिक विद्यालय कटकिया में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
95	प्राथमिक विद्यालय कोठा मंझा में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
96	प्राथमिक विद्यालय मझरियाई में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
97	प्राथमिक विद्यालय मंझा पश्चिमी मे तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
98	प्राथमिक विद्यालय समापुर में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
99	कम्पोजिट विद्यालय शेरपुर चुरघुटी में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
100	कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय जलालाबाद में तीन शेट वाला झूला अधिष्ठापन कार्य।	301900	6100	678	03 माह
101	ग्राम अस्तोली में योगमंच शाला का निर्माण (मिर्जापुर)	988000	19800	854	03 माह
102	ग्राम दोषपुर नागर में योगमंच शाला का निर्माण (मिर्जापुर)	988000	19800	854	03 माह
103	ग्राम भरतपुर में योगमंच शाला का निर्माण (मिर्जापुर)	988000	19800	854	03 माह
104	ग्राम टढ़ई में योगमंच शाला का निर्माण (कलान)	988000	19800	854	03 माह
105	विधानसभा जलालाबाद जनपद शाहजहाँपुर के अन्तर्गत वि0ख0 मिर्जापुर के शेरपुर कुरिया में हनुमान जी मूर्ति के पास एक यात्री शेड का निर्माण कार्य।	978000	19600	854	03 माह

03- निविदा बिक्री की अवधि : दिनांक 27.02.2024 से 28.02.2024 तक (पूर्वान्ह 11:00 से अपरान्ह 04:00 बजे तक)।

04- निविदा प्राप्ति का अन्तिम दिनांक एवं समय : दिनांक 29.02.2024 (अपरान्ह 12:00 बजे तक)।

05- निविदा प्राप्ति का स्थान : कार्यालय अधिशासी अभियन्ता, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, द्वितीय तल, विकास भवन, जनपद-शाहजहाँपुर।

06- निविदा खुलने का दिनांक एवं समय दिनांक 29.02.2024 अपरान्ह 12:30 बजे।

07- उपरोक्त अल्पकालीन निविदा सूचना अधीक्षण अभियन्ता महोदय, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग, परिमण्डल-बरेली से स्वीकृति मिलने की प्रत्याशा में प्रकाशित की जा रही है, स्वीकृति न मिलने की स्थिति में पूर्णकालिक निविदा 01 माह हेतु तिथियों का निर्धारण कर दिया जायेगा।

अधिक जानकारी के लिये अधिशासी अभियन्ता, ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग कार्यालय द्वितीय तल, विकास भवन शाहजहाँपुर से सम्पर्क कर सकते है।

(इं0 दुष्यन्त प्रताप)
अधिशासी अभियन्ता,
ग्रामीण अभियन्त्रण विभाग,
प्रखण्ड-शाहजहाँपुर।

www.upgov.nic.in
UPID No.204246 Dt. 23.02.2024

“फैशन सिर्फ ट्रेंड नहीं, राजनीतिक इतिहास को भी दर्शाता है, जिसके जरिये आप उन निर्णायक क्षणों को देख सकते हैं, जो क्रांतियों की वजह बने। -डैफ्ने गिनीज

राजनीति फैशन का उपयोग कर सकती है, लेकिन फैशन उद्योग राजनीति के रंग से कैसे बचता है, यह देखने की बात होगी...

रंग को कहां से देखें

चुनाव आ रहे हैं, रंग छा रहे हैं। राजनीति अब फैशन स्टेटमेंट दे रही है। फैशन के रंग दरअसल कोड की तरह होते हैं, जो किसी देश का मूड तय करते हैं।

शेफाली वासुदेव
संपादक
द वॉयस ऑफ फैशन

कुछ हफ्ते पहले, जब अयोध्या में रामलला की प्राण-प्रतिष्ठा समारोह की गूंज के साथ देश का ज्यादातर हिस्सा नारंगी हो गया था, तब सवाल उठ रहे थे कि सांस्कृतिक और रचनात्मक उद्योग इस पर कैसी प्रतिक्रिया देंगे। सवालों में फैशन था। आखिर कोई घटना ऐसी हो सकती है, जिसमें फैशन न हो? दिमाग में यह सवाल उठा। एक समाजशास्त्री बेशक फैशन को रचनात्मक उद्योग न समझे और सामाजिक-सांस्कृतिक घटनाओं पर प्रतिक्रिया देते वक्त इसे जरूरी भी न समझे, लेकिन राजनीति के लिए फैशन कोई नई चीज नहीं है। इसके पीछे एक लोकप्रिय संदेश छिपा होता है। ये घटनाएं ऐसी होती हैं कि अगर इनमें फैशन न ढूंढा जाए, तो वह अक्सर छिपा ही रह जाता है।

रंग फैशन का एक महत्वपूर्ण तत्व है। हम हर साल या हर मौसम में जिन रंगों को स्वीकार या अस्वीकार करते हैं, फैशन ही उन्हें निर्धारित करता है। फैशन के रंग दरअसल कोड की तरह होते हैं, जो किसी देश का मूड तय करते हैं। बात सिर्फ एक खास रंग की नहीं है, बल्कि हर तरह के राजनीतिक संदेश की है, जो ज्यादा लोगों तक फैशन के जरिये पहुंचाए जाते हैं। आने वाले चुनावों में भी राजनीतिक दलों द्वारा सोशल मीडिया क्रिएटर्स के साथ विज्ञापनों इत्यादि पर भी लाखों-करोड़ों रुपये खर्च किए जाएंगे। ताकत और पैसे का भरपूर प्रदर्शन होगा।

कॉमनवेल्थ ऐंड कम्परेटिव पॉलिटिक्स में 2022 में प्रकाशित शोधपत्र में सिमोना विटोरिनी लिखती हैं, 'ऐसे समय में, जब राजनीति में किसी सर्वमान्य विचारधारा का अभाव है और उत्तर-आधुनिक विमर्श राष्ट्रवाद के नए स्वरूप को स्थापित कर रहा है, राजनीति काफी आकर्षक और व्यावसायिक हो गई है, नतीजतन न केवल लोकप्रिय वोटों को पाने के तरीकों में बदलाव आया है, बल्कि लोकप्रिय भावनाओं को संगठित करने और भुनाने के तरीके भी बदल गए हैं।'

विटोरनी अपने शोधपत्र में आगे लिखती हैं, 'लोगों तक अपनी बात पहुंचाने के तरीके और जनमत निर्माण की प्रक्रिया पहले जैसी पारंपरिक नहीं रही और केवल भाषण ही संवाद का जरिया नहीं है। अब कपड़ों के चयन, रंगों एवं अन्य माध्यमों से मतदाताओं के अवचेतन को प्रभावित किया जा रहा है।'

यहां मेरा मतलब किसी पार्टी या विचारधारा का विरोध या समर्थन करना नहीं है। निश्चित रूप से कोई राजनेता जब आइकन बन जाता है, तो उसकी हर बात फैशन स्टेटमेंट बन जाती है, चाहे वह खाना हो, पहनना हो या चलना। हमारे प्रधानमंत्री मोदी इसका बहुत अच्छा उदाहरण हैं। उनके पहनावे को लोगों, खासकर युवाओं द्वारा खूब अपनाया जा रहा है और इसमें कोई बुराई भी नहीं है। पर बड़ा मुद्दा यह है कि भारतीय फैशन जगत को इस अंधानुकरण से कैसे बचाएं एवं इसकी मौलिकता और रचनात्मकता को रंग, शैली या किसी भी राजनीतिक प्रभाव से कैसे बचाए रखें? बाजार के ट्रेंड से हटकर चलना और डिजाइन में राजनीतिक रंगों, स्टाइल और पैटर्न की नकल से बचना या फिर उसे कम-से-कम करना, वास्तव में चुनौती है।

किसी विचार को उन्माद बनने में समय नहीं लगता और फैशन के संबंध में भी यह बात उतनी ही सही है। यह निश्चित रूप से बराबर की तुलना नहीं है, लेकिन बहुत पुरानी बात नहीं है, जब बार्बी, जो एक मूवी थी, 'पिंक कल्ट' बन गई। जल्दी ही बार्बी एक गुड़िया से वॉलपेपर पैटर्न, केक और यहां तक कि कारों पर नजर आने लगी। विभिन्न उत्पादों की पैकेजिंग और उपभोक्ता उत्पाद, जैसे कि टूथब्रश, तौलिया सब 'बार्बीमय' हो गए और बाजार ने पिंक की एकरसता व एकरूपता को लंबे समय तक देखा।

ऐसे समय, जब उपभोक्ता को किसी उत्पाद या सेवा को सीधे खरीदने के लिए प्रेरित न कर कंपनियां व विज्ञापन एजेंसियां विभिन्न सर्वेक्षणों के माध्यम से उन्हें निर्णय प्रक्रिया में सहभागी बना रही हैं (ताकि उपभोक्ता को यह भ्रम हो कि उसने 'इनफॉर्म्ड चॉइस' ली है), कंप्यूटर के 'क्लिक' और मोबाइल के 'सिलेक्ट' बटन की ताकत को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। ऐसे में, फैशन-इंफ्लुएंसर्स, ब्लॉगर्स की महत्ता फैशन ट्रेंड सेट करने में और भी बढ़ गई है।

आज का दौर वास्तव में प्रचार और आक्रामक मार्केटिंग का है। दुनिया भर में फैशन से ज्यादा बड़ी मार्केटिंग रणनीतियां हो गई हैं और मूल उत्पाद से ज्यादा यह महत्वपूर्ण हो गया है कि कौन-सा सितारा उसका प्रमोशन कर रहा है और कहां इन्हें लॉन्च किया जा रहा है। भारत के संदर्भ में देखें, तो कला, शिल्प, वस्त्र, फैशन-सबकुछ चुनाव के विभिन्न पक्षों से प्रभावित होता दिखता है। ऐसे में, फैशन शो की विशेषता और प्रदर्शनियों की पहचान बनाए रखने के लिए फैशन जगत को वैसे थीम और उत्पादों से बचना चाहिए, जो किसी एक राजनीतिक पार्टी की विचारधारा को संपोषित करते हों।

वर्तमान भारतीय संदर्भ में रंगों का प्रभाव भी केवल वस्तुओं एवं उत्पादों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि यह राजनीतिक संदेश एवं राजनीतिक संबद्धता का भी परिचायक हो गया है। चाहे बात केसरिया की हो, या नीले की, या पीले की, या किसी अन्य रंग की-सब किसी न किसी राजनीतिक विचारधारा से जुड़े नजर आते हैं। केसरिया निश्चित ही ज्यादा प्रभावी एवं हर जगह नजर आ रहा है। लोगों में इसकी मांग तेजी से बढ़ी है और फैशन जगत भी 'मांग एवं आपूर्ति' के सिद्धांत से अछूता नहीं है।

लेकिन हमें यह याद रखना चाहिए कि भारतीय समाज समावेशी एवं धर्मनिरपेक्ष समाज रहा है और हमारे फैशन डिजाइनरों ने अपने रंगों, विषयों एवं आयोजनों में सूक्ष्म रूप से इन मूल्यों को संजोया एवं परिलक्षित भी किया है। रंग, डिजाइन और थीम किसी भी पोशाक को विशेषता प्रदान करते हैं और डिजाइनर डिजाइन के लिए कहीं न कहीं से प्रेरणा लेते ही हैं। जब सोशल मीडिया, टेलीविजन एवं अन्य दृश्य व श्रव्य माध्यम में एक ही तरह की विचारधारा का प्रचार-प्रसार हो एवं एक ही विषय-वस्तु की अधिकता एवं प्रभाव हो, तो डिजाइनर भी उससे अछूते नहीं रहते। अवचेतन मन पर वातावरण का प्रभाव तो पड़ता ही है और रचनात्मकता व मौलिकता के प्रभावित होने का भी खतरा रहता है। ऐसी स्थिति में अपनी मौलिकता को बचाए रखना एवं लीक से हटकर उन संदर्भों और विचारों पर आधारित वस्त्र डिजाइन करना, जो भेड़-चाल से अलग हो, और भी आवश्यक हो जाता है।

यह सही है कि भारत में अब भी अनिवार्य रूप से फैशन का मतलब पारंपरिक परिधानों के अति अलंकृत प्रस्तुति से लिया जाता है। लेकिन यह याद रखने का समय है कि यह वही उद्योग है, जो समावेशिता और विविधता के लिए खड़ा है। यह सामाजिक संदेश देने के लिए समय-समय पर नए तरीके खोजता है।

भारत के डिजाइनर सीधे नहीं, बल्कि सुझाव के रूप में अपनी बात रखते हैं, रचनात्मक प्रतिभाओं के उभरते समूह में ऐसे दिमाग भी हैं, जो विषय, रूपांकन और प्रस्तुति में अंधानुकरण से बचते हैं। भारतीय डिजाइनरों ने देश की बहुलता, समरसता और धर्मनिरपेक्षता को समय-समय पर परिधानों एवं थीम के जरिये दर्शाया है। इसलिए फैशन जगत से अपेक्षा है कि वह इस चुनावी वर्ष में अपने मूल्यों को समेट कर मौलिकता के हिसाब से नए-नए परिधानों एवं उत्पादों को लाएगा और बाजार को राजनीतिक संदेश देने का माध्यम बनने से बचाने की कोशिश भी करेगा।

■ www.thevoiceoffashion.com

धूप आने दो

जानना जरूरी है
संस्कृति के पन्नों से

आशुतोष गर्ग
लेखक एवं अनुवादक

विश्वकर्मा ने त्रैलोक्य में अलग-अलग स्थान से तिल-तिल करके सर्वोत्कृष्ट, बहुमूल्य तत्व एकत्रित किए। अप्रतिम सौंदर्य वाले उन कणों से एक सुंदरी की रचना की। ब्रह्मा समेत सभी देवता उसके सौंदर्य को देखकर चकित रह गए।

तिलोत्तमा ने कैसे लिए दो भाइयों के प्राण?

तिलोत्तमा के लिए युद्ध करते सुंद और उपसुंद। फोटो : विकीपीडिया

हिरण्यकशिपु असुर के वंश में दो भाई हुए-सुंद और उपसुंद। दोनों बलशाली होने के साथ-साथ अत्यंत क्रूर भी थे। वे सदा साथ में रहते थे। यहां तक कि उनकी पसंद-नापसंद भी एक-सी थी। एक दिन दोनों भाइयों ने ब्रह्मा को प्रसन्न करके उनसे अमरता का वरदान प्राप्त करने का मन बनाया और इसी उद्देश्य से दोनों ने तपस्या आरंभ कर दी।

सुंद-उपसुंद के तप से प्रसन्न होकर ब्रह्मा ने दर्शन दिए। दोनों ने ब्रह्मा से अमरता का वरदान मांगा। परंतु ब्रह्मा सहमत नहीं हुए, तो सुंद-उपसुंद ने कहा, 'आप यह वरदान दीजिए कि हम दोनों केवल एक-दूसरे के हाथों ही मारे जाएं तथा कोई अन्य प्राणी हमारा वध न कर सके!' यह वरदान अमर होने के समान ही था, क्योंकि दोनों भाइयों में परस्पर इतना प्रेम था कि एक-दूसरे को मारने का प्रश्न ही नहीं था!

ब्रह्मा ने 'तथास्तु' कहा और अंतर्धान हो गए। वरदान मिलने के बाद मृत्यु का भय समाप्त हो गया, तो दोनों भाई पूरी तरह निरंकुश हो गए। पहले उन्होंने देवलोक पर आक्रमण किया और फिर पृथ्वी पर रहने वाले ऋषि-मुनियों को सताने लगे। आखिर सभी देवता मिलकर सहायता मांगने ब्रह्मा के पास पहुंचे। ब्रह्मा ने देवताओं की व्यथा सुनी। उन्होंने कुछ देर विचार किया और फिर देवशिल्पी विश्वकर्मा को बुलाया।

ब्रह्मा ने विश्वकर्मा से कहा, 'विश्वकर्मा! आप एक ऐसी स्त्री की रचना कीजिए, जो इतनी सुंदर हो कि उस जैसी स्त्री तीनों लोकों में कोई और न हो। जो उसे देखे, बस देखता रह जाए!'

ब्रह्मा की आज्ञा पाकर विश्वकर्मा ने त्रैलोक्य में घूमकर अलग-अलग स्थानों से तिल-तिल करके सर्वोत्कृष्ट, सर्वाधिक बहुमूल्य एवं विस्मयकारी तत्व एकत्रित किए। फिर अप्रतिम सौंदर्य वाले उन कणों की सहायता से विश्वकर्मा ने एक सुंदरी की रचना की और उसे ब्रह्मा के समक्ष प्रस्तुत कर दिया। ब्रह्मा समेत सभी देवता उस स्त्री के अभूतपूर्व सौंदर्य को देखकर चकित रह गए।

ब्रह्मा बोले, 'इसका नाम 'तिलोत्तमा' होगा, क्योंकि इसे तीनों लोकों के उत्तम तिलों को जोड़कर बनाया गया है। यही सुंद और उपसुंद के अंत का कारण बनेगी!' फिर उन्होंने तिलोत्तमा से कहा, 'तुम्हें सुंद और उपसुंद को अपने सौंदर्य से लुभाना है। आगे का कार्य, वे स्वयं कर लेंगे!'

तिलोत्तमा ने ब्रह्मा को प्रणाम किया और सुंद-उपसुंद के पास पहुंच गई। तिलोत्तमा को देखते ही दोनों भाइयों का रोम-रोम खिल उठा। उसके अप्रतिम लावण्य पर दोनों असुर भाई ऐसे मंत्रमुग्ध हुए कि उनमें कामाग्नि प्रज्वलित हो उठी।

'अहा! कैसा मनमोहक सौंदर्य! मैंने ऐसी सुंदर स्त्री जीवन में पहली बार देखी है।' सुंद ने हर्ष से भरकर कहा।

उपसुंद भी बोला, 'मैं इसे अपनी पत्नी बनाऊंगा!'

यह सुनकर सुंद को क्रोध आ गया। उसने भाई को फटकारते हुए कहा, 'मैंने इसे पहले देखा है, इसलिए यह मेरी पत्नी है।'

'देखने से क्या होता है!' उपसुंद चिल्लाया, 'पत्नी बनाने का विचार मुझे पहले आया है। इससे विवाह मैं ही करूंगा।'

सुंद और उपसुंद के बीच कभी किसी वस्तु को लेकर झगड़ा नहीं हुआ था। उन्हें कोई अभाव नहीं था। वे जो चाहते थे, सहजता से प्राप्त कर लेते थे...परंतु तिलोत्तमा की बात और थी!

तिलोत्तमा जैसी कोई दूसरी स्त्री तीनों लोकों में नहीं मिल सकती थी। उसके मादक रूप-सौंदर्य ने उनकी बुद्धि हर ली और उसे प्राप्त करने के लिए दोनों लड़ने लगे।

शीघ्र ही सुंद-उपसुंद की बहस ने उग्र रूप धारण कर लिया। दोनों में हाथापाई होने लगी। तिलोत्तमा पास खड़ी मुस्करा रही थी। वह ब्रह्मा की योजना को समझ चुकी थी। उसके अनुपम सौंदर्य ने दोनों भाइयों के बीच बैर उत्पन्न कर दिया था। अगले ही क्षण, दोनों भाइयों ने तलवारें निकाल लीं। उनके बीच भीषण युद्ध होने लगा। अंत में वही हुआ, जो होना था! दोनों ने एक-दूसरे को मार डाला। तिलोत्तमा अब भी मुस्करा रही थी और देवता उस दृश्य को देखकर हर्षित हो रहे थे। एक स्त्री का सौंदर्य भाइयों के बीच बैर और फिर उनकी मृत्यु का कारण बन गया।

द्वापर-युग में जब द्रौपदी का पांच पांडव भाइयों से विवाह हुआ, तो देवर्षि नारद ने उन्हें सुंद-उपसुंद की यही कथा सुनाई थी, जिसके बाद पांडवों ने द्रौपदी के साथ रहने के कुछ नियम बनाए, ताकि उनमें द्रौपदी को लेकर सुंद-उपसुंद की भांति झगड़ा न हो जाए!

उद्धरेदात्मनाऽत्मानं
नात्मानमवसादयेत्।
आत्मैव ह्यात्मनो
बन्धुरात्मैव रिपुरात्मनः।।

मनुष्य को चाहिए कि अपने मन की सहायता से अपना उद्धार करे और स्वयं को नीचे न गिरने दे। यह मन बद्धजीव का मित्र भी है और शत्रु भी है।

- भीष्म पर्व, गीता 6/5

(अर्जुन के प्रति साक्षात भगवान श्रीकृष्ण का गीतोपदेश)

प्रस्तुति : विवेक चौरसिया

वह ब्लैक होल रोज एक सूर्य को खा रहा है

क्रिश्चियन वुल्फ
द कन्वर्सेशन

यह इतनी रोशनी पैदा कर रहा है कि 12 अरब प्रकाश वर्ष दूर पृथ्वी पर इसकी चमक देखी जा रही है।

नर्क क्या होता है, इसका सबूत तो वैज्ञानिकों के पास नहीं है। लेकिन पूरे ब्रह्मांड की सबसे नारकीय जगह से परिचय कराने के लिए वैज्ञानिकों को धन्यवाद जरूर दिया जाना चाहिए। दरअसल, *नेचर एस्ट्रोनॉमी* के नए अंक में एक ब्लैक होल का वर्णन है, जो ब्रह्मांड की अब तक ज्ञात सबसे बड़ी डिस्क से घिरा है, जिसका नाम है जे 0529-4351, जो ब्रह्मांड की सबसे चमकीली वस्तु भी है। हालांकि यह कोई पहला ब्लैक होल नहीं है। इससे पहले भी करीब दस लाख बड़े ब्लैक होल खोजे जा चुके हैं, जो आकाशगंगाओं के केंद्र में स्थित हैं और करोड़ों सूर्य के बराबर हैं। पर तेजी से बढ़ रहा ये जे 0529-4351 ब्लैक होल कुछ अलग है। यह तारों व गैस के बादलों को अपनी ओर खींचता हुआ अंगूठी जैसी आकृति बना रहा है, जो केवल एक पैटर्न है, जिसे ब्लैक होल जल्द ही निगल लेता है। यह डिस्क घर्षण से जल्द ही गर्म हो जाती है, क्योंकि इसमें मौजूद सामग्री के एक साथ रगड़ने से इतनी चमक पैदा होती है कि 12 अरब प्रकाश वर्ष से ज्यादा दूर पृथ्वी पर ब्लैक होल की भोजन प्रक्रिया के उन्मादी दृश्य देखे जा सकते हैं। जे 0529-4351 की डिस्क सूर्य की तुलना में पांच हजार खरब गुना ज्यादा तेज प्रकाश उत्सर्जित कर रही है। ऊर्जा की इतनी मात्रा तभी उत्सर्जित हो सकती है, जब ब्लैक होल हर दिन एक सूर्य खा रहा हो। इसका द्रव्यमान हमारे सूर्य से 15 से 20 अरब गुना ज्यादा है। हालांकि हम पृथ्वी वालों को इससे डरने की जरूरत नहीं, क्योंकि इसकी रोशनी को हम तक पहुंचने में 12 अरब साल से ज्यादा का समय लगा है, जिसका अर्थ है कि इसने काफी पहले ही बढ़ना बंद कर दिया होगा। ब्लैक होल की भोजन प्रक्रिया का यह उन्माद युगों पहले ही खत्म हो चुका है, क्योंकि आकाशगंगाओं में चारों ओर तैरने वाली गैसें ज्यादातर तारों में बदल गई हैं और उन्होंने अरबों वर्षों में खुद को एक व्यवस्थित पैटर्न में स्थापित कर लिया है। अब वे ज्यादातर अपनी आकाशगंगाओं के केंद्र में मौजूद ब्लैक होल के चारों ओर लंबी व साफ-सुथरी कक्षाओं में हैं। सवाल उठता है कि यदि यह ब्रह्मांड की सबसे चमकीली चीज है, तो इसे अभी ही क्यों देखा गया? दरअसल, दुनिया के टेलिस्कोप इतना डाटा पैदा करते हैं कि खगोलशास्त्री इन्हें छानने के लिए परिष्कृत मशीन लर्निंग टूल का इस्तेमाल करते हैं। मशीन लर्निंग टूल अपनी प्रकृति से उन चीजों को ढूंढती है, जो पहले पाई गई चीजों के समान होते हैं। लेकिन जे 0529-4351 जैसे दुर्लभ स्तर को पहचानने के लिए हमने मशीन लर्निंग से परहेज करते हुए परंपरागत वेधशालाओं का उपयोग किया।

अध्ययन कक्ष

बैटल फॉर द बर्ड
जैक डोर्सी, एलन मस्क ऐंड द 44 बिलियन डॉलर फाइट फॉर ट्विटर्स सोल

लेखक- कर्ट वैगनर

प्रकाशक- एट्रिया बुक्स
मूल्य-2,262 रुपये

एक्सट्रीमली हार्डकोर
इनसाइड एलन मस्क'स ट्विटर

लेखिका- जो शिफर
प्रकाशन - पोर्टफोलियो
कीमत- 1,937 रुपये

मुक्ति की मुहर भी चाहिए और पैसा भी

दोनों ही किताबें बताती हैं कि ट्विटर ने कैसे दो भिन्न विचारों के बीच सामंजस्य बैठाने के लिए संघर्ष किया है, जिनमें पहला था मुक्त संवाद का विचार और दूसरा था तकनीकी के आधार पर बहुत सारा पैसा कमाने का विचार।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स, जो पहले ट्विटर के नाम से विख्यात था, आगामी मार्च में उम्र के 18वें पड़ाव पर पहुंचेगा। इस उम्र के आते ही एक किशोर बेशक वयस्क मान लिया जाता हो, लेकिन 'एक्स' में अब भी कच्चापन दिखता है।

ब्लूमबर्ग के पत्रकार और *बैटल फॉर द बर्ड* के लेखक कर्ट वैगनर किताब के शुरुआती पन्नों में बताते हैं कि ट्विटर के शुरुआती संस्थापकों में से एक और दो बार सीईओ रहे जैक डोर्सी वैश्विक चेतना को बढ़ाने वाली हाई-फाई घोषणाएं ट्विटर के जरिये करना पसंद करते थे। बमुश्किल 200 पृष्ठों के बाद वैगनर यह भी बताते हैं कि कैसे अरबपति मस्क ने ट्विटर को हासिल करने के बाद इसका नाम बदला और कैसे डोर्सी के विपरीत वह ट्विटर पर लोगों से व्यक्तिगत संपर्क करने से भी नहीं हिचकते। दिखावटी आदर्शों से लेकर उथली वास्तविकता तक ट्विटर की यात्रा, जैसा वैगनर की किताब कहती है, काफी अजीब रही है। 'ऐसा नहीं होना चाहिए था', ट्विटर के इतिहास में मस्क के पहले नौ महीने के कार्यकाल पर वैगनर लिखते हैं। हालांकि जो शिफर की किताब *एक्सट्रीमली हार्डकोर* मस्क की कार्यशैली पर ज्यादा नजदीक से रोशनी डालती है। दोनों ही किताबें बताती हैं कि ट्विटर के मंच ने कैसे दो विचारों के बीच सामंजस्य बैठाने के लिए संघर्ष किया है, जिनमें पहला था मुक्त संवाद का विचार और दूसरा था तकनीकी के आधार पर बहुत सारा पैसा कमाने का विचार। वैगनर ने एक बड़ी कारोबारी कंपनी चलाने के दौरान डोर्सी पर पड़ रहे दबावों पर फोकस करते हुए ट्विटर को एक व्यावसायिक कहानी के तौर पर देखा। वैगनर को इंटरव्यू के लिए कभी समय न देने वाले डोर्सी एक ऐसे व्यक्ति के तौर पर सामने आते हैं, जिसके पास ट्विटर को लेकर भव्य, लेकिन अस्पष्ट उम्मीदें थीं, मगर उन्होंने अपनी जिंदगी को ट्विटर से अलग रखा। वहीं मस्क की कार्यशैली, जैसा शिफर *एक्सट्रीमली हार्डकोर* में लिखते हैं, अलग है। उनके ट्वीट अच्छे लगते हैं, क्योंकि उनमें एक बेलाग स्पष्टता होती है। जैसा उन्होंने ट्विटर के अधिग्रहण के तुरंत बाद कंपनी के कर्मचारियों को भी किया था। शिफर के अनुसार, जो गुण उनके ट्वीट्स को दिलचस्प बनाते हैं, वही कंपनी को चलाने में उनकी सबसे बड़ी बाधा भी हैं। ट्विटर के वर्तमान कर्मचारी और जिन्हें निकाला गया, वे भी मानते हैं कि मस्क की कंपनी में कर्मचारियों को एक अविश्वास के माहौल में काम करना पड़ता है, जो उनकी कामकाजी जिंदगी को मुश्किल बनाता है। शिफर एक्स की मैनेजिंग एडिटर रही हैं और वहां की संस्कृति व व्यवसाय मॉडल से खूब परिचित हैं। किताब बताती है कि मस्क कर्मचारियों से बेहद उम्मीदें रखते हैं, जैसे वे मशीन हों। वे जल्दी उम्मीदें करते हैं और जल्दी ही निराश भी हो जाते हैं। एक्स के साथ दिक्कत यह है कि इसके कर्मचारी प्लेटफॉर्म की बेहतरी के बजाय एक व्यक्ति को खुश करने में लगे हैं।

अभियान

इससे पहले कि हम असीम शक्ति प्राप्त करें, हमें इसे अच्छी तरह से उपयोग करने के लिए ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।
- राल्फ वाल्डो इमर्सन, प्रसिद्ध दार्शनिक

amarujala.com
अमर उजाला

Join Magazine Group @ ₹60/m WhatsApp To 8969469464

होम सिकनेस, बेहतर प्रदर्शन का दबाव और माता-पिता की हिदायतें छात्रों को टेंशन दे रही हैं। वे छोटी उम्र से ही कॅरिअर बनाने के दबाव में जी रहे हैं। सवाल यह है कि उनकी इस दशा के लिए कौन जिम्मेदार है?

Join Epaper Group @ ₹30/m WhatsApp To 8969469464

कॅरिअर के दबाव से बचना ही होगा

अपना भविष्य खुद तय करें

परीक्षाओं का समय है। बच्चों के साथ-साथ माता-पिता भी गहरे तनाव में हैं। हमारे देश में लगभग एक हजार विश्वविद्यालय और 40 हजार कॉलेज हैं। यकीनन, हम विश्व की सबसे बड़ी उच्च शिक्षा प्रणाली होने का दावा करते हैं, परंतु वास्तविकता यह है कि अधिकतर छात्रों को मनपसंद कॉलेज या कोर्स में एडमिशन नहीं मिल पाता है।

चिट्ठी 1

कॉलेज में सीटें कम हैं और अभ्यर्थियों की संख्या अधिक। ऐसी स्थिति में कोचिंग सेंटरों ने कमान संभाली और हर छात्र की आवश्यकता बन गए। कोचिंग संस्थानों में हर एक साल रहने का खर्चा लगभग ढाई लाख रुपये के आस-पास आता है। पिछले दो-तीन दशकों में कोचिंग के क्षेत्र में उबाल आया है। इन संस्थानों में अनगिनत माता-पिता के ख्वाब पलते हैं, जिन्हें अंजाम तक पहुंचाने का माध्यम बच्चे होते हैं। कॅरिअर बनाने की प्रतियोगिता में बच्चे तरह-तरह के दबाव में रहते हैं। होम सिकनेस के साथ-साथ टेस्ट में बेहतर प्रदर्शन करने का दबाव और माता-पिता की हिदायतें उन्हें टेंशन देती हैं। छात्र छोटी उम्र से ही दबाव में जी रहे हैं और जब बर्दाश्त नहीं कर पाते तो आत्मघाती कदम उठाते हैं। अभिभावकों को यह बात समझनी होगी कि हर बच्चे की क्षमता और रुचि अलग-अलग होती है। 140 करोड़ की आबादी वाले देश में मनोचिकित्सकों की संख्या भी बहुत कम है। यकीनन, छात्रों की इस दशा के लिए माता-पिता, कोचिंग संस्थान और समाज की संवेदनहीनता तो जिम्मेदार है ही, साथ में शिक्षा के व्यवसायीकरण में लिप्त योजनाएं भी कम जिम्मेदार नहीं हैं। इस संबंध में कारगर कदम उठाए जाने चाहिए।

■ अमृता पांडे, नैनीताल

दहेज प्रथा लड़कियां खत्म कर सकती हैं

दहेज के खिलाफ कानून तो बन गया है। दहेज देना और लेना, दोनों अपराध है, लेकिन अभी यह समाज से खत्म नहीं हो पाया है। चाहे गरीब हो या अमीर, पढ़े-लिखे माता-पिता हों या अनपढ़, सबको अपनी बेटी की शादी के लिए टेंशन रहती है। अगर समाज से दहेज को खत्म करना है तो यह काम लड़कियां ही कर सकती हैं, लड़के नहीं। इसके लिए लड़कियों को आत्मनिर्भर, शिक्षित और उद्यमी बनना पड़ेगा। उन्हें अपने अंदर निखार लाना होगा। यह तभी संभव है, जब लड़कियां शिक्षित हों। इसलिए लड़कियों को चाहिए कि वे ज्यादा मेहनत करें, शिक्षित बनें, आत्मनिर्भर बनें, उद्यमी बनें, जिससे अपने माता-पिता पर दहेज का बोझ कम कर सकें, क्योंकि जब वे आत्मनिर्भर होंगी तो किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। वे अपना खर्च स्वयं उठा सकेंगी। अक्सर

चिट्ठी 2

लड़कियां शादी के बाद पति पर निर्भर रहती हैं। उनके खर्चों के लिए पति ही पैसे देते हैं। यह सिलसिला आजीवन चलता रहता है। जब लड़कियां आत्मनिर्भर होंगी तो उन्हें किसी के सामने हाथ फैलाने की जरूरत नहीं पड़ेगी। जब किसी से कुछ मांगेंगी नहीं तो किसी को कुछ देना भी नहीं पड़ेगा। इसलिए हर माता-पिता को चाहिए कि वे लड़कियों की शादी पर नहीं, बल्कि उनकी शिक्षा पर पैसा खर्च करें, जिससे वे आत्मनिर्भर बनें और दहेज प्रथा जैसी कुरीति से समाज का अंत हो सके।

■ महेन्द्र विक्रम सिंह, सुल्तानपुर

सिक्के/नोट का नकली खेल !

वर्तमान समय में संचार तकनीक के क्षेत्र में प्रतिदिन नए आयाम स्थापित हो रहे हैं। एक ओर यह तकनीक आमजन को विभिन्न प्रकार की सुविधाएं उपलब्ध करा रही है तो दूसरी ओर खुराफाती लोग विभिन्न प्रकार के लालच देकर आमजन को अपनी बातों में फंसा रहे हैं और उन्हें

चिट्ठी 3

आर्थिक एवं मानसिक रूप से नुकसान पहुंचा रहे हैं। आजकल ठगी करने के लिए अनेक प्रकार के हथकंडे अपनाए जा रहे हैं। नौकरी, एक रात में लखपति, करोड़पति बनाने का दावा, असाध्य रोगों की रामबाण दवा, सस्ते दामों में जमीन, कार, स्कूटर और घरेलू उपयोग का सामान आदि का लालच देकर ठगी की जा रही है। इसी क्रम में पुराने सिक्के, नोट बेचने और खरीदने के नाम पर सिक्के, नोट की कीमत लाखों-करोड़ों रुपयों में बताकर बेहद शातिराना अंदाज से ठगी की जा रही है। सिक्के या नोट की कीमत लाखों में मिलने की उम्मीद लिए लोग ठगी का शिकार हो रहे हैं। प्राचीन मुद्रा के संग्रहकर्ता विशेषज्ञों का कहना है कि पुराने सिक्के, नोट क्रय-विक्रय करने से पहले जांच लें कि जिस वेबसाइट से संवाद चल रहा है, क्या वह भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अनुमोदित है? अगर नहीं, तो वह ठग हो सकता है। इसलिए बिना जांचे-परखे किसी भी लालच में फंसने से बचें। जहां तक संभव हो, विशेषज्ञ से सलाह लेकर सिक्के या नोट बेचने का प्रयास करें।

■ अशोक वार्ष्णेय, हल्द्वानी

इनकी चिट्ठियां भी सराहनीय रहीं

फिरोजाबाद से नितिन रावत, नैनीताल से राज शेखर, मिर्जापुर से सलिल पांडेय, बाड़मेर से कपिल मालू, कुरुक्षेत्र से मुनीष भाटिया, जालंधर से राजेश कुमार चौहान, अमरोहा से डॉ. महताब अमरोहवी, सुल्तानपुर से अमनदीप सिंह, पटना से मुकेश कुमार मनन, आजमगढ़ से अवनीश कुमार गुप्ता, मेरठ से डॉ. नरेन्द्र टोंक, पटना से सरिता प्रसाद, गाजियाबाद से ललित शंकर।

हमें लिखें
abhiyan@amarujala.com

गोल चबूतरा

Hindi@mithelesh

■ मिथिलेश बारिया

जमाने में हर कोई मोहब्बत न कर बैठे,
इसलिए खुदा ने हाथों में लकीरें बना दीं...

उसकी मैली मुट्ठी में
उसके अपने कुछ रुपये थे,
मेरे महंगे बटुए में
किसी बैंक का क्रेडिट कार्ड था...

जब घूमा सिलिंडर बन गई रिवॉल्वर

सन 1836 में आज के ही दिन आविष्कारक सैमुअल कोल्ट ने रिवॉल्वर (घूमने वाली बंदूक) का पेटेंट कराया था। फायर-आर्म डिजाइन में उनके सुधार ने एक बंदूक को दोबारा लोड किए बिना कई बार फायर करने की अनुमति दी थी। इतिहासकारों के अनुसार, उस समय वह अपने विचार (आइडिया) को लेकर प्रतिबद्ध थे, लेकिन उसके पेटेंट और उत्पादन के लिए धन की कमी के कारण उन्होंने एक व्यावहारिक रसायनज्ञ के रूप में तीन साल तक कनाडा और अमेरिका का दौरा किया, ताकि धन जुटाया जा सके। समुद्री जहाज पर कुछ समय रहने के दौरान कोल्ट को रिवॉल्वर बनाने का विचार आया था। 'रिवॉल्वर' नाम बंदूक में घूमने वाले सिलिंडर के कारण चुना गया था। इससे पहले हाथ से उपयोग के लिए केवल एक-बैरल और दो-बैरल फ्लिंटलॉक पिस्तौल का आविष्कार किया गया था। ऐसा अनुमान है कि निर्माण के पहले 25 वर्षों में कोल्ट की कंपनी ने 4,00,000 से अधिक रिवॉल्वर का उत्पादन किया था। सन 1846 में मैक्सिकन युद्ध के दौरान अमेरिकी सरकार ने 1000 कोल्ट रिवॉल्वर का ऑर्डर दिया था। साल 2006 में सैमुअल कोल्ट को 'नेशनल इन्वेंटर्स हॉल ऑफ फेम' में शामिल किया गया था।

झरोखा
25 फरवरी

■ जालंधर से सुखबीर सिंह

अजब-गजब

मिटते गए कदमों के निशान

1920 के दशक में अमेरिका में नशाबंदी का दौर था। तब वहां के तस्करों ने खुद को बचाने के लिए अजीबो-गरीब तरीका निकाला था।

ऊपर की तस्वीर को गौर से देखें। जूते के नीचे लगे दो मोटे-मोटे सोल (लकड़ी के टुकड़े) व्यक्ति के पैरों के निशान छिपाने के लिए थे। दरअसल, 1920 के दशक में अमेरिका में शराबबंदी का दौर चल रहा था। नशीले पदार्थों के निर्माण, बिक्री या परिवहन पर पूरी तरह से प्रतिबंध लग गया था। हालांकि, इसके बाद भी देशभर में बड़े पैमाने पर अवैध बिक्री और तस्करी हो रही थी। शहर की तुलना में यह प्रतिबंध ग्रामीण क्षेत्रों में अधिक कड़ा था, क्योंकि वहां पर सैलून और नाइट क्लबों में अवैध रूप से नशीले पदार्थ बेचे जा रहे थे। धीरे-धीरे लाखों गैलन अवैध शराब का उत्पादन होने लगा था। शासन-प्रशासन की तरफ से जगह-जगह छापेमारी अभियान भी चलाए जा रहे थे, ताकि रोक लग सके। ऐसे में तस्करों ने अपने आपको बचाने के लिए एक नया और अजीबो-गरीब तरीका ईजाद किया था। सरकारी एजेंटों से बचने के लिए उन्होंने अपने जूतों में 'गाय की टाप' जैसे लकड़ी के नक्काशीदार टुकड़े जोड़ दिए थे, ताकि उनके कदमों के निशान किसी को नजर ही न आएं। अगर कोई अधिकारी उनके गुप्त ठिकानों की खोज करने आता भी है तो वह कभी नहीं जान पाएगा कि ये निशान किसके हैं। इतना ही नहीं उस दौर में अवैध रूप से नशीले पदार्थों को छिपाने के लिए रचनात्मक तरीके भी खोज लिए गए थे। लोगों ने नकली किताब का ढांचा तैयार किया था, जिसका उपयोग नशीले पदार्थ के फ्लास्क को छिपाने के लिए किया गया था। कुछ ने लैंप जैसी घरेलू साज-सज्जा की वस्तु को भी छोटी-छोटी बोतलों को छिपाने योग्य बना लिया था। कुछ महिलाएं तो अपने ओवरकोट में बोतल छिपाकर सामान की तस्करी करती थीं।

■ सोनिया वर्मा, गुरुग्राम

घास काटते वक्त एकदम 'कूल'

यह तस्वीर साल 1957 की है। बगीचे की घास को काटते वक्त गरमी न लगे, इसलिए यह मशीन ईजाद की गई थी। इसमें एयर कंडीशनर लगा हुआ था।

■ दिल्ली से योगेश सिंह

छायानट

खलनायक की भूमिका थी सबसे बड़ी बाधा

जावेद जाफरी ने अपने एक्टिंग कॅरिअर की शुरुआत निर्माता-निर्देशक सुभाष घई की फिल्म 'मेरी जंग' से की थी। इस फिल्म से उन्हें कामयाबी तो मिली, मगर कॅरिअर में कुछ मुश्किलें भी आईं। दरअसल, जावेद जाफरी खलनायक के किरदार में लॉन्च हुए थे। उस वक्त निर्माता-निर्देशकों के जहन में छप गया था कि यह तो खलनायक है। दूसरी किसी फिल्म में हीरो कैसे ले सकते हैं? यही बात उनके लिए सबसे बड़ी बाधा बन गई। हालांकि वह एक ऐसे खलनायक थे, जो एक अच्छे डांसर भी थे, लेकिन उस दौर की फिल्मों में डांस खलनायक नहीं, बल्कि हीरो करता था। शुरुआत में फिल्म इंडस्ट्री के लोग सोचते थे कि सुभाष घई ने जावेद जाफरी को खलनायक क्यों लॉन्च किया। अगर वह हीरो बन सकते हैं तो घई ने उन्हें हीरो क्यों नहीं बनाया? पहली फिल्म के बाद अच्छे और सकारात्मक भूमिका वाले किरदार मिलने में जावेद जाफरी को काफी मशक्कत करनी पड़ी।

■ खलील अहमद, जम्मू

संघीय मूल्यों की खातिर

केंद्र सरकार और गैर-भाजपा शासित राज्यों के बीच अपने हितों को लेकर टकराव की स्थिति लगातार बढ़ती जा रही है। क्या राज्यों और संघ के बीच चल रहा मौजूदा विवाद वास्तव में हमारे देश के हित में है?

वर्ष 2019 के बाद जब से नरेंद्र मोदी और उनकी पार्टी भारी बहुमत के साथ सत्ता में वापस लौटी है, केंद्र सरकार और गैर-भाजपा शासित राज्यों के बीच टकराव बढ़ गए हैं। विशेष रूप से तीन राज्य इस संघर्ष के केंद्र में रहे हैं- पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल। सभी मामलों में केंद्र द्वारा नियुक्त राज्यपाल केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी की ओर से पक्षपातपूर्ण ढंग से काम करते प्रतीत होते हैं। इन राज्यों का दावा है कि केंद्र ने उन्हें उनके राज्य का पैसा देने से इनकार कर दिया है, उनके राज्य की सांस्कृतिक विरासत की उपेक्षा की है आदि।

हाल के महीनों में दो अन्य राज्य असहमतों के इस क्लब में शामिल हो गए हैं। ये हैं- पंजाब और कर्नाटक, जहां क्रमशः आम आदमी पार्टी और कांग्रेस की सरकार है। पंजाब के राज्यपाल वहां के मुख्यमंत्री भगवंत सिंह मान के साथ भिड़ गए। जहां तक कर्नाटक की बात है, पिछले मई में जब से कांग्रेस सत्ता में लौटी है, उसकी सरकार का केंद्र से कई बार टकराव हो चुका है। मुख्यमंत्री सिद्धारमैया और उप-मुख्यमंत्री डीके शिवकुमार ने मोदी सरकार पर राजस्व के संबंध में कर्नाटक के खिलाफ भेदभाव करने और सूखे से प्रभावित किसानों की दुर्दशा के प्रति उदासीन रहने का आरोप लगाया है। हाल ही में सिद्धारमैया और शिवकुमार ने नई दिल्ली में जंतर मंतर पर एक विरोध बैठक आयोजित कर अपना मामला राष्ट्रीय राजधानी में उठाया। कुछ दिनों बाद केरल के मुख्यमंत्री ने अपने राज्य की ओर से इसी तरह के विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व किया।

केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल और पंजाब में कुल मिलाकर 30 करोड़ से ज्यादा लोग रहते हैं। वे भारत की आबादी के पांचवें हिस्से से अधिक हैं। शिक्षा, स्वास्थ्य एवं लैंगिक समानता के मामले में केरल और तमिलनाडु देश के सबसे प्रगतिशील राज्यों में से हैं। तमिलनाडु एक औद्योगिक ऊर्जा केंद्र भी है। कर्नाटक लंबे समय से वैज्ञानिक शोध के मामले में अग्रणी रहा है और हाल के दशकों में सूचना प्रौद्योगिकी एवं जैव-प्रौद्योगिकी के क्षेत्रों में भी। जब हमारे ऊपर अंग्रेजों का शासन था, तब बंगाल के कुछ सबसे बहादुर लोगों ने स्वतंत्रता संग्राम में हिस्सा लिया। आजादी के बाद से इस राज्य ने हमें कुछ बेहतरीन संगीतकार, फिल्म निर्माता और विद्वान दिए हैं। पंजाब के सिखों ने हमारी खाद्य सुरक्षा और हमारे सशस्त्र बलों में आनुपातिक रूप से भारत के किसी भी अन्य समुदाय की तुलना में कहीं अधिक योगदान किया है।

पांच राज्य, जिनमें से प्रत्येक का हमारे देश के अतीत एवं वर्तमान में विविध और विशिष्ट योगदान है तथा प्रत्येक राज्य में भाजपा से भिन्न

रामचंद्र गुहा
जाने-माने इतिहासकार

पार्टियों की सरकारें हैं, क्या राज्यों एवं संघ के बीच चल रहा मौजूदा विवाद वास्तव में हमारे देश के हित में है?

इससे पहले कि मैं उस प्रश्न का उत्तर दूं, हाल ही में आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री जगन मोहन रेड्डी की कुछ टिप्पणियों पर ध्यान दें, जिनमें उन्होंने इच्छा व्यक्त की कि अगले लोकसभा चुनाव में भाजपा को संसद में लगातार तीसरी बार बहुमत न मिले। फरवरी की शुरुआत में अपने राज्य के अंतरिम बजट के दौरान रेड्डी ने कहा कि अगर केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी अपने अस्तित्व के लिए दूसरों दलों पर निर्भर रहती है तो आंध्र प्रदेश को विशेष दर्जा दिए जाने की लंबे समय से लंबित मांग को पूरा करने की बेहतर संभावना होगी। ममता बनर्जी, एमके स्टालिन या पिनरई विजयन के विपरीत आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री ने कभी भी नरेंद्र मोदी, भाजपा या केंद्र सरकार के प्रति टकराव का रुख नहीं अपनाया। लेकिन अब वह भी गैर-भाजपा शासित राज्य सरकारों के प्रति मोदी सरकार के अहंकारी, दबंग और वास्तव में सत्तावादी रवैये को लेकर चिंतित दिख रहे हैं।

हालांकि यह कहना मुश्किल है कि क्या जगन रेड्डी की धीरे-धीरे आलोचनात्मक मुद्रा और अधिक उग्र विरोध में तब्दील हो जाएगी या क्या तेलंगाना के नए कांग्रेसी मुख्यमंत्री रेवंत रेड्डी, कर्नाटक में अपने पार्टी सहयोगियों के साथ मिलकर केंद्र से अधिक कर राजस्व और निष्पक्ष व्यवहार की मांग करेंगे। भले ही ये दोनों मुख्यमंत्री अलग रहें, लेकिन भाजपा के प्रभुत्व वाली केंद्र सरकार और गैर-भाजपा शासित राज्यों- पश्चिम बंगाल, केरल, तमिलनाडु, कर्नाटक और पंजाब के बीच चल रहा टकराव बेहद चिंताजनक है, जो मुझे पहले पूछे गए प्रश्न पर वापस लाता है।

इन टकरावों के कहां तक जाने की संभावना है? प्रधानमंत्री और केंद्रीय गृह मंत्री के कथनी और करनी को देखते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि भाजपा किसी भी आधार पर इन राज्यों की मांगों को स्वीकार नहीं करना चाहती। इनके तीन तरीके हैं, जिनसे यह अन्य दलों द्वारा शासित राज्यों के हितों और इच्छाओं के खिलाफ खुद को और भी मजबूती से स्थापित करना चाहती है।

पहला है, अपनी एड़ी-चोटी का जोर लगाना, और विपक्ष द्वारा नियंत्रित राज्यों को संसाधनों से वंचित करने और उनके स्वायत्त कामकाज पर और अधिक अंकुश लगाने के लिए उन शक्तियों का उपयोग करना, जिन्हें केंद्र ने कोविड महामारी के बाद से हड़प लिया था। दूसरा, नागरिकों से अगले विधानसभा चुनाव में अन्य पार्टियों के बजाय भाजपा को वोट देने के लिए कहना, इन राज्यों के निवासियों से वादा करना कि यदि वे 'डबल इंजन सरकार' चुनते हैं तो उनके साथ अधिक अनुकूल व्यवहार किया जाएगा। तीसरा है, सीबीआई और ईडी का दुरुपयोग करके अन्य दलों के विधायकों को भाजपा में शामिल होने के लिए प्रेरित करना।

ये तीनों तरीके अक्सर एक साथ काम करते हैं। भाजपा दो या दो से अधिक विपक्षी गठबंधन वाली राज्य सरकार को तोड़ने में सक्षम रही है, जैसा 2019 में कर्नाटक में, 2022 में महाराष्ट्र में, हाल ही में उसने बिहार में किया है। लेकिन जहां गैर-भाजपा पार्टी बहुमत में है, जैसे कि पश्चिम बंगाल, केरल या तमिलनाडु, वह सरकार गिराने में विफल रही है। इसके अलावा पश्चिम बंगाल, तमिलनाडु और केरल की वैध रूप से निर्वाचित सरकारों के खिलाफ केंद्र की स्पष्ट शत्रुता के परिणामस्वरूप कई बंगालियों, तमिलों और मलयाली लोगों में गहरी (और मेरे विचार से काफी हद तक उचित) नाराजगी है। गोदी मीडिया में भारत की संघीय व्यवस्था पर तनाव की कभी चर्चा नहीं होती। फिर भी विचारशील भारतीयों को पार्टी संबद्धता की परवाह किए बिना ऐसे मामलों पर अधिक ध्यान देना चाहिए, जो हमारे गणतंत्र के भविष्य के लिए कोई शुभ संकेत नहीं है।

'डिजिटल रोमांस' है खतरनाक स्कैम

हाल के दिनों में ऑनलाइन प्यार की ऐसी कई कहानियां सामने आईं, जिनमें लोगों ने सरहद तक को पार कर दिया। सोशल मीडिया देखने में रोमांचक है, लेकिन उसके खतरे हजार हैं। चैटिंग से शुरू हुआ दोस्ती का सफर छेड़खानी, दुष्कर्म, यौन शोषण, शादी के नाम पर झांसे और आर्थिक शोषण पर खत्म होता है।

गीता यादव

खुला आकाश

सोशल मीडिया और साइबर फ्रॉड को लेकर जागरूकता की कमी के चलते महिलाएं धोखाधड़ी का शिकार हो रही हैं। इस जाल में फंसकर कई तो आत्मघाती कदम उठाने को मजबूर हैं।

सोशल मीडिया ने लड़कियों के अपहरण की घटनाओं का ग्राफ बढ़ा दिया है। पुलिस जांच में सामने आया है कि अपहरण के जो मुकदमे लिखे गए, उनमें बड़ी संख्या में आरोपी से पहचान सोशल मीडिया पर हुई थी। पिछले एक साल में 'डिजिटल रोमांस स्कैम' की संख्या में 40 फीसदी की वृद्धि हुई है। भारत ही नहीं, विदेशों में भी बड़ी संख्या में लोग ऑनलाइन स्कैम का शिकार हो रहे हैं, लेकिन सिर्फ 20 फीसद लोग ही इसकी शिकायत पुलिस से कर पाते हैं। साइबर एक्सपर्ट बताते हैं कि पिछले कुछ वर्षों में सोशल मीडिया पर फोटो के साथ-साथ वीडियो अपलोड करने का शौक भी लोगों में बढ़ा है। कोई रील्स बनाकर डालता है तो कोई बच्चे का वीडियो पोस्ट करता है, जो बेहद खतरनाक है, क्योंकि एआई के जरिये आवाज और चेहरे को चुराया जा सकता है। बाद में इनका इस्तेमाल ठगी के लिए किया जा सकता है। इन दिनों ठगों के निशाने पर मैट्रिमोनियल साइट्स भी हैं। ठग सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर अपने प्रोफाइल में आकर्षक फोटो लगाकर खुद को विदेश में डॉक्टर या उद्योगपति बताते हैं। इसके बाद महिलाओं को फ्रेंड रिक्वेस्ट भेजते हैं। दोस्ती करने के बाद लंबी चैटिंग करते हैं। शादी करने का आश्वासन देते हैं और अंत में विदेश से महंगा गिफ्ट भेजने का झांसा देते हैं। गिफ्ट को भारत में छुड़ाने, कस्टम विभाग में फंसने और फिर उसे छुड़ाने आदि के नाम पर पैसा मंगवाते हैं। एक सर्वे के अनुसार, सोशल मीडिया पर 36 फीसदी लड़कियों को अजनबियों द्वारा परेशान किया जाता है। वहीं, 32 फीसदी को फेक आईडी यूजर्स अपशब्द और अश्लील मैसेज भेजते हैं। इसके परिणामस्वरूप ऑनलाइन उत्पीड़न ने 42 फीसदी महिलाओं को मानसिक और भावनात्मक रूप से तनावग्रस्त कर दिया है। ऑनलाइन धोखाधड़ी, आर्थिक घोटाला ही नहीं है, इसमें पीड़ित को भावनात्मक क्षति भी होती है। ऐसे में किसी पर भी आसानी से भरोसा करना मुश्किल हो जाता है।

माघी पूर्णिमा पर लाखों ने लगाई आस्था की डुबकी

वरिष्ठ पुलिस और प्रशासनिक अधिकारियों ने मेला क्षेत्र और स्नान घाटों पर निरंतर किया भ्रमण, व्यवस्थाओं का लिया जायजा

पायनियर संमाचार सेवा। प्रयागराज

माघी पूर्णिमा के पावन अवसर और माघ मेला के पांचवें स्नान पर्व पर सायं छह बजे तक लगभग 38 लाख 20 हजार स्नानार्थियों और श्रद्धालुओं ने गंगा यमुना एवं अदृश्य सरस्वती के पवित्र संगम तट तथा गंगा के तट पर बनाए गए विभिन्न घाटों पर आस्था की डुबकी लगाकर पुण्य लाभ अर्जित किया। माघी पूर्णिमा के अवसर पर सुबह से ही श्रद्धालुओं की काफी भीड़ रही। माघी पूर्णिमा का स्नान पर्व सकुशल एवं निर्विघ्न रूप से सम्पन्न हो गया। मेला प्रशासन के मुताबिक माघ मेले के पंचम स्नान पर्व माघी पूर्णिमा पर सुबह दस बजे तक लगभग 18 लाख 60 हजार लोगों ने आस्था की डुबकी लगाई।

वहीं यह भीड़ 12 बजे तक लगभग 25 लाख 50 हजार हो गई। जबकि दोपहर दो बजे तक लगभग 30 लाख लोगों ने स्नान किया और शाम को 4 बजते बजते लगभग 35 लाख 50 हजार लोगों ने आस्था की डुबकी लगा ली थी। इस अवसर पर श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो इसके दृष्टिगत सभी वरिष्ठ अधिकारियों ने मेला क्षेत्र में भ्रमणशील रहकर सभी आवश्यक व्यवस्था सुनिश्चित कराई। माघ मेला क्षेत्र में साफ सफाई की विशेष व्यवस्था सुनिश्चित किए जाने हेतु सफाई कर्मियों की पर्याप्त संख्या में ड्यूटी लगाई गई है। माघ मेला क्षेत्र में अपने स्वजनों से बिछड़ने वाले लोगों के लिए खोया पाया केन्द्र से लगातार एनाउंस कर उनके स्वजनों से उन्हें मिलाया गया। श्रद्धालुओं को मेले में भटकना न पड़े इसके लिए संगम जाने का मार्ग वापस लौटने का मार्ग और अन्य मार्गों को प्रदर्शित करते हुए साइन बोर्ड रास्तों पर लगाए गए। माघ मेला क्षेत्र में सुरक्षा की व्यवस्था चाक चौबंद रही। एडीजी जोन भानु भाष्कर मण्डलायुक्त विजय विश्वास पंत पुलिस आयुक्त रमित शर्मा पुलिस महानिरीक्षक प्रेम कुमार गौतम कुम्भ मेलाधिकारी विजय किरण आनन्द पुलिस उपमहानिरीक्षक वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक माघ मेला डॉ राजीव नारायण मिश्र जिलाधिकारी नवनीत सिंह चहल प्रभारी अधिकारी माघमेला दयानन्द प्रसाद अपर जिलाधिकारी मेला विवेक चतुर्वेदी सहित अन्य वरिष्ठ पुलिस एवं प्रशासनिक अधिकारी निरंतर भ्रमणशील रहकर व्यवस्थाओं का जायजा लिया।

माघी पूर्णिमा स्नान के साथ कल्पवासी एक महीने का कल्पवास पूरा कर अपने अपने घरों को लौटने लगे। माघ मेला प्रशासन के एक अधिकारी ने बताया कि सुबह से ही बादल छाए रहने और ठंडा मौसम रहने के बावजूद शनिवार शाम छह बजे तक करीब 38.20 लाख लोगों ने गंगा और संगम में स्नान किया। उनके मुताबिक, तड़के से ही स्नानार्थियों का माघ मेला क्षेत्र में आना जारी रहा जिसमें महिलाएं, बच्चे और बुजुर्ग शामिल थे। उन्होंने बताया कि स्नानार्थियों की सुविधा के लिए घाटों की लंबाई 6800 फुट से बढ़ाकर 8000 फुट कर दी गई है और कुल 12 घाट बनाए गए हैं एवं सभी घाटों पर पर्याप्त संख्या में वस्त्र बदलने की सुविधा स्थापित की गई है।पुलिस उप महानिरीक्षक (माघ मेला) राजीव नारायण मिश्र ने बताया कि मेला क्षेत्र में सुरक्षा के व्यापक बंदोबस्त किए गए हैं और पूरे मेला क्षेत्र में 300 से अधिक सीसीटीवी कैमरे और कृत्रिम मेधा (एआई) आधारित कैमरे लगाए गए हैं। माघ मेला से मुंबई अपने आश्रम के लिए प्रस्थान की तैयारी कर रहे अवधूत भगवान राम के शिष्य आशीष महाराज ने बताया कि माघी पूर्णिमा पर गंगा स्नान कर अन्न वस्त्र दान करने का विशेष महत्व है।

बरेली में हवालात की खिड़की काटकर दो कुख्यात गैंगस्टर फरार, तीन पुलिसकर्मी निलंबित

बरेली। बरेली में सदर कचहरी स्थित हवालात से दो कुख्यात गैंगस्टर खिड़की का सरिया काटकर फरार हो गए। पुलिस ने शनिवार को यह जानकारी दी।उसने बताया कि इस मामले में तीन पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया गया है। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक (एसएसपी) घुले सुशील चंद्रभान ने बताया कि अदालत की सदर हवालात की खिड़की काटकर दो कैदी फरार हो गए हैं। उन्होंने बताया कि दोनों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया गया है और उनकी तलाश के लिए चार दलों का गठन किया गया है। पुलिस उप निरीक्षक वीरेंद्र कुमार ने बताया कि कोतवाली क्षेत्र में बिहारीपुर ढाल निवासी अंकित यादव और सीबीगंज में पस्तोर निवासी सचिन सैनी को शुक्रवार सुबह मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी (सीजेएम) और अपर मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट तृतीय की अदालत में पेशी के लिए तलब किया गया था। उन्होंने बताया कि अंकित और सचिन के साथ जेल से पेश होने के लिए कुल 55 कैदी अदालत लाए गए थे लेकिन जब उन्हें वापस जेल भेजने की प्रक्रिया शुरू हुई तो अंकित एवं सचिन के गायब होने का पता चला।उन्होंने बताया कि पुलिस को हवालात की खिड़की के दो सरिए कटे मिले और माना जा रहा है कि आरोपी पेड़ की डाल के सहारे से दीवार कूदकर भाग निकले। उन्होंने बताया कि कोतवाली में इस संबंध में मामला दर्ज कर लिया गया है।जानकारी मिलने पर एसएसपी घुले सुशील चंद्रभान, एसपी सिटी राहुल भाटी फोर्स संग मौके पर पहुंचे। एसएसपी घुले ने बताया कि मामले में तीन पुलिसकर्मियों को निलंबित कर दिया है और तीनों पुलिसकर्मियों के खिलाफ विभागीय कार्वाई के आदेश कर दिए गए हैं। पुलिस के अनुसार, आरोपी अंकित यादव पर चोरी, लूट एवं अपहरण समेत भारतीय दंड संहिता की गंभीर धाराओं के तहत 47 मुकदमे दर्ज हैं और वह गैंगस्टर कानून के तहत भी निरुद्ध है। उसने बताया कि वह आदतन अपराधी है और उसे 28 दिसंबर को आयुध अधिनियम के तहत जेल भेजा गया था।पुलिस ने बताया कि सचिन सैनी के खिलाफ बारादरी पुलिस ने गैंगस्टर कानून के तहत कार्वाई की और उसे बारादरी के मुकदमे में ही पेशी के लिए लाया गया था।

तेज रफ्तार कैंटर ने पांच कारों को मारी टक्कर, दो लोगों की मौत

मुजफ्फरनगर। मुजफ्फरनगर जिले के खतौली थाना क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्ग पर एक माल वाहक वाहन (कैंटर) ने एक रेस्त्रां के बाहर खड़ी पांच कारों को टक्कर मार दी। पुलिस ने शनिवार को बताया कि हादसे में एक महिला समेत दो लोगों की मौत हो गई जबकि 16 अन्य घायल हो गए। पुलिस के अनुसार शुक्रवार देर रात जिले के खतौली पुलिस थाना क्षेत्र के अंतर्गत दिल्ली-देहरादून राष्ट्रीय राजमार्ग पर तगाई कट के पास एक तेज रफ्तार कैंटर पर चालक नियंत्रण नहीं रख सका। तेज रफ्तार वाहन ने एक रेस्तरां के बाहर खड़ी पांच कारों को टक्कर मार दी। पुलिस क्षेत्राधिकारी (सीओ) यतेंद्र नागर ने शनिवार को भाषा को बताया कि मृतकों की पहचान सुनील कुमार (30) और उनकी रिश्तेदार श्वेता (24) निवासी दिल्ली के रूप में हुई है।

अयोध्या में राम मंदिर को करीब 25 करोड़ रुपए का दान मिला

अयोध्या मे राम मंदिर को करीब 25 करोड़ रुपए का दान मिला

अयोध्या। नवनिर्मित राम मंदिर को 22 जनवरी को हुई प्राण प्रतिष्ठा के बाद एक महीने में 25 किलोग्राम सोने और चांदी के आभूषण सहित लगभग 25 करोड़ रुपए का दान मिला है।

राम मंदिर ट्रस्ट के कार्यालय प्रभारी प्रकाश गुप्ता ने बताया कि 25 करोड़ रुपए की राशि में चेक, ड्राफ्ट और मंदिर ट्रस्ट के कार्यालय में जमा की गई नकदी के साथ-साथ दान पेटियों में जमा राशि भी शामिल है। उन्होंने बताया, हालांकि हमें ट्रस्ट के बैंक खातों में ऑनलाइन माध्यम से भेजे गए धन के बारे में जानकारी नहीं है। गुप्ता ने कहा,"23 जनवरी से अब तक लगभग 60 लाख श्रद्धालु दर्शन कर चुके हैं।" गुप्ता ने बताया, राम भक्तों की भक्ति ऐसी है कि वे रामलला के लिए चांदी और सोने से बनी वस्तुएं दान कर रहे हैं, जिनका उपयोग श्री राम जन्मभूमि मंदिर में नहीं किया जा सकता है। इसके बावजूद, भक्तों की भक्ति को देखते हुए, राम मंदिर ट्रस्ट सोने और चांदी से बनी सामग्री,आभूषण, बर्तन और दान स्वीकार कर रहा है। मंदिर ट्रस्ट को रामनवमी उत्सव के दौरान दान में वृद्धि की उम्मीद है,क्योंकि उस समय लगभग 50 लाख भक्तों के अयोध्या आने की संभावना हैं। गुप्ता के मुताबिक, उम्मीद है कि रामनवमी के दौरान चंदे के रूप में बड़ी मात्रा में नकदी मिल सकती है जिसके मद्देनजर भारतीय स्टेट बैंक ने राम जन्मभूमि पर चार स्वचालित गणना मशीनें लगाई हैं। उन्होंने कहा, "ट्रस्ट द्वारा रसीदें जारी करने के लिए एक दर्जन कम्प्यूटरीकृत काउंटर बनाए गए हैं और राम मंदिर ट्रस्ट द्वारा मंदिर परिसर में अतिरिक्त दान पेटियां रखी जा रही हैं। गुप्ता ने बताया, जल्द ही राम मंदिर परिसर में एक बड़ा और सुसज्जित गणना कक्ष बनाया जाएगा।" मंदिर ट्रस्ट के ट्रस्टी अनिल मिश्रा ने बताया कि रामलला को उपहार स्वरूप मिले सोने-चांदी के आभूषणों और बहुमूल्य सामग्रियों के मूल्यांकन के लिए उन्हें पिघलाने और रख-रखाव की जिम्मेदारी भारत सरकार टकसाल को सौंपी गई है।मिश्रा ने बताया कि इसके साथ ही भारतीय स्टेट बैंक और ट्रस्ट के बीच एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। समझौता ज्ञापन के अनुसार, स्टेट बैंक दान, चेक, ड्राफ्ट और नकदी एकत्र करने और इसे बैंक में जमा करने की पूरी जिम्मेदारी लेगा।

मिश्रा ने बताया कि स्टेट बैंक की टीम ने कर्मियों की संख्या बढ़ाकर अपना काम शुरू कर दिया है और रोजाना दो पालियों में दान की गई नकदी की गिनती की जा रही है।

लोकसभा चुनाव की रणनीति तैयार करने के लिए बैठक का हिस्सा बने भजनलाल शर्मा

सीतापुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने उत्तर प्रदेश के सीतापुर में पांच लोकसभा क्षेत्रों के लिए भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की चुनावी रणनीति तैयार करने के सिलसिले में शुक्रवार को पार्टी की एक बैठक में हिस्सा लिया।उन्होंने नैमिषारण्य में मां ललिता देवी मंदिर में दर्शन एवं पूजा की और संतों से मुलाकात की। भाजपा नेताओं के मुताबिक, भजनलाल शर्मा बाद में सीतापुर शहर गए, जहां उन्होंने एक रिसॉर्ट का उद्घाटन किया और भाजपा की लोकसभा चुनाव प्रबंधन समिति की एक बैठक में हिस्सा लिया।एक नेता के अनुसार, इस बैठक का एजेंडा आगामी चुनाव के लिए तीन जिलों में फैले पांच लोकसभा क्षेत्रों सीतापुर, मिश्रिख, लखीमपुर, धौरारा और हरदोई के लिए रणनीति तैयार करना थाबैठक के दौरान जिले के लोकसभा प्रभारी मंत्री मयंकेश्वर शरण सिंह, आबकारी मंत्री नितिन अग्रवाल, राज्य मंत्री सुरेश राही और राकेश राठौड़ समेत सीतापुर से भाजपा सांसद राजेश वर्मा मौजूद रहे।बैठक को संबोधित करते हुए शर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में भाजपा परिवार का प्रत्एक सदस्य 400 से अधिक सीटों के लक्ष्य को पूरा करने के लिए पूरे समर्पण के साथ काम कर रहा है।

वोकल फॉर लोकल अभियान से जुड़ें

कोंच(जालौन)। माननीय केंद्रीय राज्य मंत्री भानु प्रताप सिंह वर्मा ने ग्रामीण कारीगरों को बांटे विद्युत चालित चाक और आटोमेटिक अगरबत्ती मशीनें । साथ ही अगरबत्ती उद्योग के लिए आंचलिक कार्यशाला व जागरूकता कार्यक्रम भी आयोजित किया गया । केंद्रीय राज्य मंत्री भानु प्रताप सिंह वर्मा के कर कमलों द्वारा जनपद जालौन के 60 कारीगरों को 40 विद्युत चालित चाक एवम 20 ऑटोमैटिक अगरबत्ती मशीन का वितरण भी किया गया। ग्रामोद्योग विकास योजना के अंतर्गत कोंचए जालौन स्थित मथुरा प्रसाद महाविद्यालय में विद्युत चालित चाक और आटोमेटिक अगरबत्ती मशीनों का वितरण किया। इस अवसर पर उन्होंने सभी लाभार्थियों को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में चल रहे ष्वोकल फॉर लोकलष् अभियान से जुड़ने की अपील की।कार्यक्रम को संबोधित करते हुए माननीय केंद्रीय राज्य मंत्रीए श्री भानु प्रताप सिंह वर्मा ने कहा कि ष्नये भारत की नयी खादीष् ने ष्आत्मनिर्भर भारत अभियानष् को नयी दिशा दी है। पिछले 9 वर्षों में खादी उत्पादों की बिक्री में चार गुना से अधिक की बिक्री ने ग्रामीण भारत के कारीगरों को आर्थिक रूप से समृद्ध किया है। कारीगरों को आधुनिक ट्रेनिंग और टूलकिट प्रदान कर केवीआईसी उन्हें आधुनिक बनाने के साथ.साथ माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के ष्विकसित भारत अभियानष् से भी जोड़ रहा है। उन्होंने आगे कहा कि उत्तर प्रदेश में कुल 697 खादी

संस्थाएं कार्यरत हैं। वर्ष 2023.24 में इन संस्थाओं द्वारा लगभग 433ण्04 करोड़ रुपये का उत्पादन किया और लगभग 695ण्04 करोड़ रुपये की बिक्री दर्ज की गई। इसके माध्यम से यहां पर 1ण्32 लाख कारीगरों को रोजगार प्रदान किया गया। वितरण कार्यक्रम के दौरान कुम्हार सशक्तिकरण योजना के तहत उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों से आए 40 कुम्हारों को ट्रेनिंग के बाद विद्युत चालित चॉकए 20 अगरबत्ती मशीनों का भी वितरण किया गया। इस अवसर पर माननीय केंद्रीय राज्य मंत्रीए श्री भानु प्रताप सिंह वर्मा ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के ष्वोकल फॉर लोकलष् और ष्आत्मनिर्भर भारतष् मंत्र ने खादी को वैश्विक मंच पर पहचान दिलाई है। पिछले 9 वर्षों में खादी और ग्रामोद्योगी उत्पादों का कारोबार 1ण्34 लाख करोड़ रुपये के आंकड़े को पार कर गया हैए जबकि इस दौरान 9ण्50 लाख से अधिक नये रोजगार का सृजन हुआ है।मंत्री ने आगे कहा कि केवीआईसी ग्रामीण भारत की अर्थव्यवस्था को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। ग्रामोद्योग विकास योजना के अंतर्गत केवीआईसी ने अभी तक 27 हजार से अधिक कुम्हार भाइयों और बहनों को विद्युत चालित चॉक का वितरण किया हैए जिससे 1 लाख से अधिक कुम्हारों के जीवन में बड़ा बदलाव आया है। इसी योजना के तहत 6000 से अधिक टूलकिट और मशीनरी का वितरण किया गया है।

इस बार आम चुनाव में कांग्रेस उत्तर प्रदेश में अपना खाता भी नहीं खोल पाएगी : अनुराग

हमीरपुर। केंद्रीय मंत्री अनुराग ठाकुर ने शनिवार को दावा किया कि इस बार आम चुनाव में कांग्रेस उत्तर प्रदेश में अपना खाता भी नहीं खोल पाएगी क्योंकि पार्टी नेता राहुल गांधी ने राज्य के लोगों की बुद्धिमत्ता पर सवालिया निशान लगा दिया है। ठाकुर ने कहा कि उत्तर प्रदेश की जनता ने नेहरू-गांधी परिवार की चार पीढ़ियों को चुनकर लोकसभा में भेजा है। वाराणसी में एक रैली के दौरान उत्तर प्रदेश के युवाओं पर गांधी की हाल में नशे की लत वाली टिप्पणी का जिक्र करते हुए ठाकुर ने आरोप लगाया कि कांग्रेस नेता अपना होश खो बैठे हैं और उन्हें पता नहीं है कि वह क्या कह रहे हैं। ठाकुर ने यहां संवाददाताओं से कहा कि राहुल गांधी ने उत्तर प्रदेश के लोगों के मान-सम्मान को ठेस पहुंचाई है। मंत्री ने आरोप लगाया कि कांग्रेस ने झूठे वादे कर जनता को धोखा दिया है। भाजपा नेता ने कहा कि कांग्रेस नेता प्रियंका गांधी के वीडियो जनता के बीच वायरल हो रहे हैं।

आरेडिका में रेलवे बोर्ड के सदस्य (ट्रैशन व रोलिंग स्टॉक) का दौरा

गुणवत्ता परखी, रखरखाव पर फोकस

राबरेली। आधुनिक रेल डिब्बा कारखानाए में रेलवे बोर्ड के सदस्य ;ट्रैशन एवं रोलिंग स्टॉकद्ध श्री सतीश कुमार ने आरेडिका का दौरा किया। आरेडिका के महाप्रबंधक श्री प्रशान्त कुमार मिश्रा और आरेडिका के उच्च अधिकारियों के साथ कुमार कोच उत्पादन एवं निर्माण तकनीक का निरीक्षण किया।

कुमार ने शैलशॉपए बोगीशॉपए व्हीलशॉपए फर्निसिंगशॉप आदि में कोच उत्पादन से संबंधित सामग्री के उचित रखरखाब के सुझाव दिए एवं मशीनों की कार्य दक्षता को परखाए मशीनों पर कार्य कर रहे कर्मचारियों से बात.चीत कीए कोच उत्पादन में उपयोग की जाने वाली सामग्री की गुणवत्ता की जाँच की। मेमो टेस्ट शैड में आरेडिका में निर्माणाधीन प्रथम मेमो की गति का निरीक्षण किया एवं विश्वस्तरी गुणवत्ता के कोचों के निर्माण हेतु सुझाव भी दिए। इसी कड़ी में सदस्य श्री कुमार ने व्हील फैक्ट्री परिसर का दौरा किया और फैक्ट्री की अवसंरचना एवं क्रिया कलापों का निरीक्षण किया। व्हील फैक्ट्री के अधिकारियों ने कच्चे माल से लेकर फोर्ज्ड व्हीलों के निर्माण के सभी चरणों के बारे में जानकारी दी। सदस्य महोदय ने रेल पहिया की सप्लाई चैन को प्रभावी बनाने के उपायों की चर्चा हेतु रेल व्हीलों की गुणवत्ता संबंधित मानकों का निरीक्षण किया एवं आरेडिका के उच्च अधिकारियों के साथ विचार विमर्श कियाए जिससे यात्रियों की सफल एवं सुरक्षित यात्रा के लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।इस अवसर पर आरेडिका के पीसीएमई श्री एसण्एसण्कलसीए सीएओ श्री संजय कुमार कटियारए पीसीईई श्री हरीश चन्द्रए पीसीएमएम श्री राजीव खण्डेलवालए सीडीई श्री डीके सिंहए व्हील फैक्ट्री के जीएम सदानन्द सरकार सहित उच्च अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

अयोध्या के मंदिरों में श्रद्धालुओं से चेन छीनने वाले 16 लोग गिरफ्तार

अयोध्या। अयोध्या पुलिस ने श्री राम जन्मभूमि सहित विभिन्न मंदिरों में श्रद्धालुओं से चेन छीनने की घटनाओं में शामिल एक गिरोह के 16 सदस्यों को गिरफ्तार किया है। पुलिस के मुताबिक, आरोपियों ने धार्मिक नगरी अयोध्या, वाराणसी और मथुरा में भीड़भाड़ वाले स्थानों पर चेन छीनने और चोरी की घटनाओं को अंजाम दिया। गिरफ्तार आरोपी बिहार के अलग-अलग जिलों के रहने वाले हैं। पुलिस ने उनके पास से सोने की 11 चेन और अन्य सामान बरामद किया जिनकी कीमत करीब 21 लाख रुपए है। इसके अलावा उनके पास से दो एसयूवी कार बरामद की गईं हैं। पुलिस के मुताबिक, राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद अयोध्या में चेन छीनने और चोरी की घटनाएं बढ़ गई हैं। पुलिस ने बताया कि 10 फरवरी को श्रीराम जन्मभूमि थाना क्षेत्र स्थित राम मंदिर और हनुमानगढ़ी में कर्नाटक और तमिलनाडु से आए श्रद्धालुओं की चेन छीनने की घटनाएं हुई थी, जिसके बाद पीड़ितों ने थाने में मामले दर्ज कराए थे। पुलिस ने मामले का संज्ञान लेते हुए आरोपियों की तलाश शुरू कर दी। राम जन्मभूमि सुरक्षा प्रभारी और पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) अतुल कुमार सोनकर ने बताया," अयोध्या पुलिस ने शुक्रवार को कोतवाली फैजाबाद के पुलिस लाइनराम जन्मभूमि सुरक्षा प्रभारी और पुलिस अधीक्षक (ग्रामीण) अतुल कुमार सोनकर ने बताया," अयोध्या पुलिस ने शुक्रवार को कोतवाली फैजाबाद के पुलिस लाइन ओवर ब्रिज के पास से 16 आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उन्होंने बताया कि श्री राम जन्मभूमि क्षेत्र, हनुमानगढ़ी मंदिर और नागेश्वरनाथ मंदिर में भक्तों से चेन छीनने और लूट की घटना में ए आरोपी शामिल थे। पुलिस ने बताया कि ए बदमाश गिरोह बनाकर धार्मिक स्थलों पर चोरी की वारदात को अंजाम देते थे। पुलिस के मुताबिक, ए सभी आरोपी पहले भी मथुरा, वाराणसी और अन्य राज्यों के धार्मिक स्थलों पर इस तरह की घटनाओं को अंजाम दे चुके हैं।

Join Magazine Group @ ₹60/m WhatsApp To 8969469464
Join Epaper Group @ ₹30/m WhatsApp To 8969469464

www.jagran.com राष्ट्रीय संस्करण
दैनिक जागरण
रविवार 25 फरवरी, 2024

दैनिक जागरण

जीवन में उसे ही सफलता मिलती है, जो आत्मनिर्भर होता है

परीक्षाओं में सेंधमारी

अंततः उत्तर प्रदेश सरकार को पुलिस भर्ती परीक्षा रद करने का फैसला करना पड़ा। यह परीक्षा होते ही उसके प्रश्नपत्र लीक होने के आरोप सामने आ गए थे। फिर इन आरोपों की पुष्टि होने लगी और इसी कारण छात्र दोबारा परीक्षा की मांग को लेकर धरना-प्रदर्शन करने लगे। यह तो ठीक है कि योगी सरकार ने समय रहते इस मांग को पूरा करने के साथ ही यह स्पष्ट किया कि छह माह के अंदर दोबारा परीक्षा होगी और दोषियों को कठोर दंड का भागीदार बनाया जाएगा, लेकिन आखिर इसका क्या कि लाखों छात्रों को फिर से परीक्षा देनी पड़ेगी? क्या इन छात्रों के उस समय, श्रम और संसाधन की भरपाई संभव है, जो प्रश्नपत्र लीक होने के कारण बर्बाद हो गए? ध्यान रहे कि इस परीक्षा में करीब 48 लाख अभ्यर्थी शामिल हुए थे। इनमें से अनेक अन्य राज्यों के थे। इन्होंने परीक्षा देने के लिए लंबी दूरी तय की थी। जब किसी भर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र लीक होते हैं तो केवल उसका आयोजन कराने वाली संस्था और सरकार की विश्वसनीयता ही नहीं छीजती, बल्कि छात्रों को मानसिक संताप का भी सामना करना पड़ता है। इसके अलावा दोबारा परीक्षा कराने से नए सिरे से सरकारी संसाधन खर्च करने पड़ते हैं।

यह पहली बार नहीं, जब किसी भर्ती परीक्षा के प्रश्नपत्र लीक हुए हों। उत्तर प्रदेश के साथ अन्य राज्यों में भी ऐसा हो चुका है। सच तो यह है कि देश के विभिन्न हिस्सों से भर्ती परीक्षाओं में गड़बड़ी के समाचार आते ही रहते हैं। भर्ती परीक्षाओं में धांधली एक ऐसी बीमारी है, जो खत्म होने के स्थान पर बढ़ती दिख रही है। इससे यदि कुछ स्पष्ट है तो यही कि भर्ती परीक्षाओं में सेंधमारी करने वाले बेलगाम हैं। तीन वर्ष पहले उत्तर प्रदेश में जब टीचर्स एलिजिबिलिटी टेस्ट का प्रश्नपत्र लीक हुआ था तो योगी सरकार ने आरोपितों पर रासुका और गैंगस्टर एक्ट के तहत कार्रवाई की थी। लगता है कि इस सख्ती के बाद भी परीक्षाओं में सेंधमारी करने वालों के दुस्साहस का दमन नहीं हो पा रहा है। अन्य राज्यों में भी यही स्थिति दिखती है। हालत यह है कि स्कूली परीक्षाओं में भी नकल कराने वाला माफिया सक्रिय है। ऐसा माफिया केंद्रीय परीक्षाओं को भी नहीं बख्श रहा है। इसी कारण संसद के बीते सत्र में परीक्षाओं में अनुचित साधनों का इस्तेमाल करने वालों को कड़ी सजा देने वाले एक विधेयक पर मुहर लगाई गई और अब वह कानून बन चुका है। हो सकता है कि राज्य सरकारें भी इसी तर्ज पर कानून बनाएं, लेकिन केवल कठोर कानून का निर्माण ही पर्याप्त नहीं। दोषियों को शीघ्र सजा देने की व्यवस्था करने के साथ ही परीक्षाओं की शुचिता बनाए रखने के लिए नए उपाय भी करने होंगे। परीक्षाओं में सेंधमारी इसलिए हर हाल में रोकनी होगी, क्योंकि इससे युवाओं के भविष्य से खिलवाड़ होने के साथ ही देश की बदनामी भी हो रही है।

न हो भ्रष्टाचार

बिहार सरकार ने निर्णय किया है कि शहरी क्षेत्र के नजदीक वाले ग्रामीण इलाके में निर्माण के लिए नक्शा निकायों के प्राधिकार पास करेंगे। सरकार का निर्णय इस उद्देश्य से है कि भविष्य में अगर शहरी क्षेत्र का विकास होता है तो अनियंत्रित निर्माण के कारण परेशानी न हो। यानी इन ग्रामीण क्षेत्रों के आवास या व्यावसायिक प्रतिष्ठानों का निर्माण ठीक शहरी क्षेत्र की तरह होगा। इसमें ध्यान रखा जाएगा कि यातायात में असुविधा न हो। प्रदूषित जल और कचरे का निष्पादन मानक के अनुरूप हो। बुनियादी सुविधाओं के विस्तार में परेशानी नहीं हो। पक्की नाली-गली, घर-घर बिजली, हर घर नल का जल और सड़क निर्माण के माध्यम से राज्य के गांवों में बुनियादी सुविधाएं पहुंच गई हैं। कह सकते हैं कि जिन सुविधाओं के कारण गांव और शहर में कभी अंतर समझा जाता था, ऐसी सभी सुविधाएं कमोबेश गांवों में उपलब्ध हैं। चिकित्सा सुविधा की कमी का भी बहुत हद तक समाधान हो गया है। हरेक जिले में मेडिकल कालेज अस्पताल और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या में वृद्धि के कारण स्थानीय स्तर पर इलाज की व्यवस्था प्रायः सभी गांवों में उपलब्ध हैं। अच्छी सड़कों का लाभ छात्रों को मिल रहा है। 10 किलोमीटर तक की दूरी के कालेजों में पढ़ने के लिए उन्हें जो किराये का कमरा लेना पड़ता था, अब उससे मुक्ति मिल गई है, लेकिन नक्शा पास कराने को लेकर शहरी नागरिकों को जो फजीहत झेलनी पड़ रही है, उसकी कल्पना कर सरकार की नई व्यवस्था ग्रामीणों को डरा सकती है। यह बुरी बात है, लेकिन सरकार को भी इसे स्वीकार करने में परहेज नहीं होना चाहिए कि नक्शा पास करने की शहरी व्यवस्था भ्रष्टाचार में लिप्त है। यह उसी का प्रभाव है कि राजधानी होने के बावजूद पटना में बेतरतीब निर्माण हो रहा है। आठ-दस फीट की सड़क पर पांच-छह मंजिल मकान का निर्माण हो रहा है। सरकार प्रयास करे कि ग्रामीणों को उन कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़े, जिनके कारण शहरी जीवन अस्त व्यस्त है।

समझौते की संभावना टटोलें किसान संगठन

संजय गुप्त

किसान नेताओं को अतार्किक मांगें रखकर केंद्र सरकार के साथ किसी समझौते की संभावना खत्म नहीं करनी चाहिए

अवधेश राजपूत

पंजाब के किसान संगठन अपनी मांगों को लेकर अभी भी हरियाणा सीमा पर डटे हुए हैं। उन्होंने दिल्ली कूच का फैसला 29 फरवरी के लिए टाल तो दिया है, लेकिन यह स्पष्ट नहीं कि वे केंद्र सरकार से पांचवें दौर की वार्ता करेंगे या नहीं? चौथे दौरे की वार्ता में केंद्रीय मंत्रियों ने यह एक उपयोगी प्रस्ताव दिया था कि सरकारी एजेंसियां पांच साल तक दालें, मक्का और कपास की एमएसपी पर खरीद का करार करेंगी और इसमें खरीद की कोई सीमा नहीं होगी। पहले तो किसान नेताओं ने इस प्रस्ताव पर गहन विचार-विमर्श कर दो दिन बाद अपनी राय देने को कहा, लेकिन फिर यकायक उन्होंने उसे सिरे से खारिज कर दिया। इससे यही स्पष्ट हुआ कि किसान नेताओं ने उक्त प्रस्ताव पर गंभीरता से विचार ही नहीं किया। किसान संगठन केवल सभी फसलों की एमएसपी पर खरीद की गारंटी वाला कानून ही नहीं चाह रहे हैं। वे कई ऐसी मांगें भी कर रहे हैं, जो किसी भी सरकार के लिए मानना संभव नहीं। पंजाब के किसान यह जानते हैं कि गेहूं और धान की खेती जमीन को बंजर कर रही है, लेकिन वे फसलों के विविधीकरण की दिशा में बढ़ने को तैयार नहीं, ताकि गिरता भूजल स्तर सुधरे। पंजाब में भूजल के अंधाधुंध दोहन के चलते उसका स्तर तेजी से गिरता जा रहा है। वास्तव में पंजाब समेत देश के कई हिस्सों में ऐसी फसलों की जरूरत है, जिनमें पानी की खपत कम हो। धान में पानी का बहुत इस्तेमाल होता है, पर एमएसपी के लोभ में पंजाब के किसान उसकी ही खेती करने में लगे हैं। यदि किसान संगठन केंद्र सरकार के उक्त प्रस्ताव को स्वीकार कर लेते तो इससे उनका तो भला होता ही, पंजाब की कृषि जनित समस्याओं का समाधान भी होता।

यह ठीक है कि किसानों की आय दोगुनी करने का लक्ष्य पूरा नहीं हो सका, जैसा कि मोदी सरकार ने वादा किया था, लेकिन बीते दस वर्षों में केंद्र सरकार ने किसानों की समस्याएं हल करने के लिए फसलों का न्यूनतम समर्थन मूल्य बढ़ाने, किसान सम्मान निधि देने, बीज, खाद आदि आसानी से उपलब्ध कराने जैसे कदम उठाए हैं। इनसे किसान लाभान्वित भी हुए हैं। बीते दिनों अहमदाबाद में प्रधानमंत्री ने किसानों के कल्याण के लिए चलाई जा रही अपनी सरकार की कई योजनाएं गिनाते हुए कहा कि उनका लक्ष्य किसानों की आय और अधिक बढ़ाना है। गत दिवस उन्होंने सहकारी क्षेत्र में दुनिया की सबसे बड़ी अनाज भंडारण योजना का उद्घाटन भी किया।

यह एक तथ्य है कि देश के अन्य हिस्सों की तुलना में पंजाब के किसान अच्छी स्थिति में हैं और वे एमएसपी का सबसे अधिक लाभ भी उठाते हैं। इसके बाद भी वही बात-बात पर आंदोलन करते हैं। तीन कृषि कानूनों के विरोध में भी सबसे पहले पंजाब से ही आंदोलन शुरू हुआ था। इस नए आंदोलन में पंजाब सरकार की भूमिका ठीक नहीं लगती। उसने किसानों की कई अतार्किक मांगों का समर्थन तो किया ही, उन्हें दिल्ली जाने को भी उकसाया। वह ऐसे व्यवहार कर रही है, जैसे किसानों को लेकर उसकी कोई जिम्मेदारी ही नहीं। कृषि समवर्ती सूची का विषय है। केंद्र के साथ ही राज्यों की भी यह जिम्मेदारी है कि वे कृषि के उत्थान और किसानों के कल्याण के लिए कदम उठाएं। एमएसपी की घोषणा केंद्र सरकार करती है और उसकी एजेंसियां अन्न की खरीद करती हैं, लेकिन इसका यह मतलब नहीं कि राज्य अपने किसानों के लिए कुछ न करें। मध्य प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा आदि कई राज्य अपने यहां के किसानों को राहत देने के लिए योजनाएं चला रहे हैं। पंजाब सरकार ऐसा क्यों नहीं कर सकती? भगवंत मान सरकार को यह आभास होना चाहिए कि किसान आंदोलन के कारण पंजाब को भी नुकसान हो रहा है। उसे किसान संगठनों को इसके लिए समझाना चाहिए कि वे अतार्किक मांगें सामने रखकर केंद्र सरकार के साथ किसी समझौते की संभावना खत्म न करें।

किसान संगठनों को यह समझना होगा कि उनकी समस्याओं का हल आवागमन बाधित करने और लोगों को तंग करने वाले आंदोलन से नहीं होने वाला। यदि उनकी समस्याओं का हल निकलेगा तो बातचीत के जरिये ही। यदि लक्ष्य समस्या का समाधान हो तो ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचा जा सकता है, जो किसानों के साथ देश की अर्थव्यवस्था के भी हित में हो। यदि दिल्ली के साथ पंजाब में सत्तारूढ़ आम आदमी पार्टी यह समझ रही है कि वह किसान आंदोलन को हवा देकर राजनीतिक लाभ अर्जित कर सकती है तो ऐसा नहीं होने वाला, क्योंकि इस आंदोलन का एक सीमित असर है। किसान संगठनों को उकसाने का काम कांग्रेस भी कर रही है। राहुल गांधी कह रहे हैं कि एमएसपी पर कानून लाएंगे और स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को भी लागू करेंगे। उनकी मानें तो इससे देश पर कोई आर्थिक बोझ भी नहीं पड़ेगा। यदि ऐसा है तो फिर मनमोहन सरकार ने ये काम क्यों नहीं किए? क्या उन्हें पता नहीं कि मनमोहन सरकार ने ही स्वामीनाथन आयोग की सिफारिशों को लागू करने से मना कर दिया था, क्योंकि वित्तीय रूप से ऐसा करना संभव नहीं था।

पता नहीं किसान संगठन आने वाले दिनों में क्या करेंगे, लेकिन उन्हें ज्ञात होना चाहिए कि जब आम चुनावों की घोषणा होने ही वाली है, तब उनके आंदोलन को राजनीति प्रेरित ही माना जा रहा है। किसानों को इस पर ध्यान देना होगा कि उन्हें खेती के तौर-तरीके बदलने और परंपरागत फसलों के बजाय अधिक मांग वाली फसलों को प्राथमिकता देनी होगी। उन्हें कर्ज माफी की मांग करने के बजाय कर्ज का सही इस्तेमाल करना होगा। यह किसी से छिपा नहीं कि एक बड़ी संख्या में किसान खेती के नाम पर लिए जाने वाले कर्ज का इस्तेमाल अन्य जरूरतों को पूरा करने में करते हैं। अब तक किसानों की अनेक समस्याओं का निदान हो जाता, यदि तीन कृषि कानून वापस नहीं हुए होते। यदि ये कानून लागू हो गए होते तो कृषि क्षेत्र में कारपोरेट जगत का निवेश बढ़ता और यह कृषि एवं किसानों की हालत सुधारने में मददगार होता। इन कानूनों की वापसी से कारपोरेट जगत को यही संदेश गया कि किसान नेता अपने तौर-तरीके बदलने को तैयार नहीं। किसान नेताओं के रवैये से आशंकित कारपोरेट जगत अब शायद ही कृषि क्षेत्र में निवेश के लिए आगे आए। इसका नुकसान किसानों को ही उठाना पड़ेगा।

response@jagran.com

दल बदलने वालों का मौसम

हास्य-व्यंग्य

सूर्यकुमार पांडेय

जिस नेता को मक्खनबाजी आती है, उसकी पांचों अंगुलियां ही नहीं, पूरा शरीर घी की कड़ाही में रहता है

आज की राजनीति का रंग-रूप बदल चुका है। यह पहले जैसी नहीं रही। पुराने जमाने के गुजर चुके नेता अगर गलती से दोबारा जिंदा हो जाएं तो ऐसे हालात देखकर अपना सिर पकड़ लें। आज के समय में राजनीति बदली है और बदले की राजनीति भी शुरू हो गई है। पहले दलबदल हुआ करता था, यहां तक तो गनीमत थी। तब का नेता सुबह एक पार्टी में होता था। दोपहर होते-होते पुरानी पार्टी का मैल अंतरात्मा की आवाज के साबुन से रगड़-रगड़ कर छुड़ाता था। फिर अगली सुबह नई पार्टी ज्वाइन करता था। तब राजनीति की भी अपनी कुछ एक मान-मर्यादाएं हुआ करती थीं। किसी नेता की ऐसी हरकत को गिरी निगाहों से देखा जाता था। उसे दलबदलू कहा जाता था। आयाराम-गयाराम की उपाधि से विभूषित किया जाता था। उसके चरित्र को राजनीति लायक नहीं समझा जाता था। आज की राजनीति में उलटने-पलटने को बुरी नजर से नहीं देखा जाता है। उलटे बुरी नजर से देखने वाले का ही मुंह काला दिखलाई देने लग जाता है।

आजकल दलबदल का मौसम है। मुझे कल एक ऐसे नेता जी मिले, जिन्होंने नया-नया दल बदला था। उनके चेहरे पर सत्ता की मलाई साफ-साफ चमक रही थी। मैंने उन्हें छेड़ा तो कहने लगे, 'आप मुझ पर बिकने का आरोप साबित नहीं कर सकते। मैं दूध का धुला हुआ नेता हूं।' मैंने कहा, 'वह तो आपके चेहरे की चमक से ही जाहिर हो रहा है!' वह हंसकर कहने लगे कि भाई मेरे, जो दूध का धुला होता है, उसके शरीर पर लाख पोंछने के बावजूद मलाई की चमक तो बरकरार ही रहती है।

भला हो उस दलबदल कानून का, जिसने फुटकर व्यवस्था को समाप्त कर थोक व्यवस्था का सूत्रपात किया। अब जनप्रतिनिधियों का दो तिहाई हिस्सा एकाएक गुपचुप तरीके से अलग हो जाता है। किसी का सिर किसी के धड़ से जा जुड़ता है। कमर एक दल की होती है, पांव और घुटने किसी और दल के होते हैं। इस तरह एक विशेष दल अस्तित्व में आ जाता है। वह सत्ता की कुर्सी पर ठसक के साथ बैठ जाता है। सब उसकी परिक्रमा करने लग जाते हैं।

लोकतंत्र में परिक्रमा का अपना महत्व और उपयोगिता है। इससे कार्य-सिद्धि होती है और चढ़ावे का पुण्य-लाभ प्राप्त होता है। वैसे भी, आज के समय में अदालत से दफ्तर तक बिना चक्कर लगाए कोई काम बन जाए, यह नामुमकिन है। परिक्रमा कभी अकारथ नहीं जाती। जमाना ही ऐसा है। कभी-कभार सीधी अंगुली से घी नहीं निकलता, क्योंकि घी निकालने के लिए दूध में मक्खन का होना जरूरी होता है। जिस नेता को मक्खनबाजी की कला आती है, उसकी पांचों अंगुलियां ही नहीं, समूचा शरीर घी की कड़ाही में रहता है। कार्यकर्ता स्थानीय नेता के चक्कर लगता है। स्थानीय नेता विधायक के चक्कर काटता है। विधायकगण मंत्री महोदय के इर्द-गिर्द टहलते हैं। मंत्री जी मुख्यमंत्री की परिक्रमा के लिए लालायित रहते हैं। मुख्यमंत्री दिल्ली का फेरा लगाते हैं। जो चूक गया, वह डाल से गिरा। सरकारी अफसर तो बने ही चक्कर काटने के लिए हैं। ऐसे में आम जनता की भला क्या बिसात? वह जन्मजात चक्करघिन्नी है। जनता हर देवी-देवता के मंदिर में चक्कर लगाती है, क्योंकि कहा गया है- बिनु परिक्रमा, सधहिं नहिं कामा। परिक्रमा बिना जीवन निस्सार है।

कदाचित इसी तत्व-ज्ञान के चलते एक औसत नेता अपने संपूर्ण राजनीतिक जीवन काल में कई-कई पार्टियों में चक्कर मार कर अपनी जीवन-लीला को धन्य बनाता चलता है और परम पद को प्राप्त करता है। आज राजनीति बदली है तो राजनीति के मायने भी बदले हैं। अब इस कूचे में लोगबाग देश-सेवा करने नहीं आते हैं। वे खुलेआम कहते हैं, हम राजनीति करने आए हैं। हमें अगला चुनाव जीतकर सत्ता में आना है। धन्य है राजनीति का चक्कर! अब तो आए दिन के इन चक्करों को देखकर कोई भी नहीं चकराता।

response@jagran.com

तथ्य-कथ्य

निरंतर बढ़ता आयकर संग्रह

(आंकड़े लाख करोड़ रुपये में)

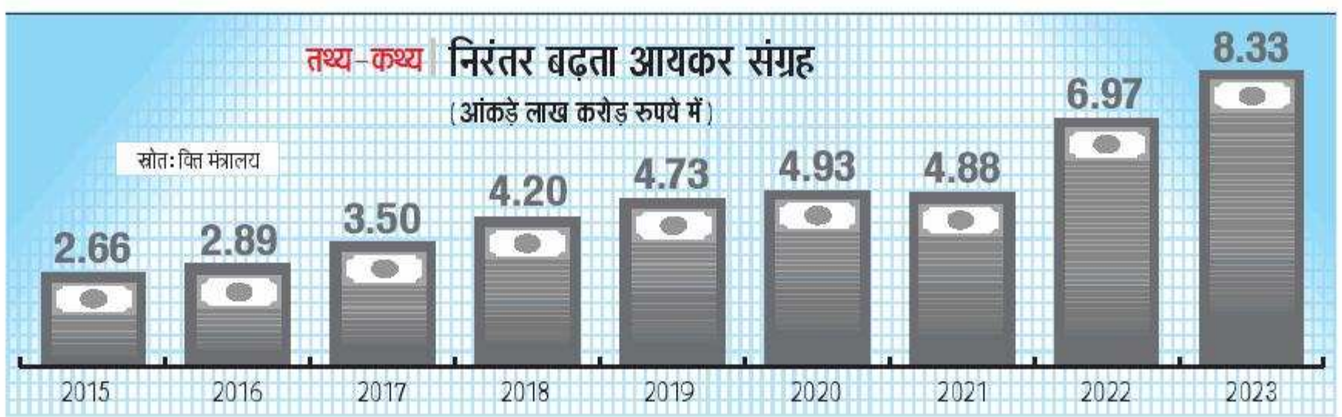

ऊर्जा

विवेकवान बनें

कोई कांटा या फूल बिना डाली के नहीं होता है। कोई डाली बिना तने के नहीं होती है। कोई तना बिना जड़ और जड़ भूमि के बिना नहीं होती है। इसी तरह समाज को भी अपने विवेक का समीकरण सीखना होगा। कोई कुछ भी बोलने को कह दे, कोई कहीं चलने को कह दे, कहीं धरना देने को उकसा दे, हम वही करने लगें, क्या हमारा अपना कोई विचार नहीं होना चाहिए?

बचत के दो उपाय होते हैं-कम खर्च करना और सार्थक खर्च अवश्य करना। कम खर्च और अधिक खर्च के बीच में एक वैचारिक रेखा होती है। इसकी पहचान एक विवेकवान व्यक्ति ही कर सकता है। इसी तरह समय, स्वास्थ्य, मानसिक शांति, आनंद, सुख इन सबको सुरक्षित करना चाहिए। दूसरों की सुख-शांति भंग मत कीजिए। सड़कों को अवरुद्ध करके समाज के आवश्यक कार्यों में गतिरोध लाकर उसकी हानि न करें। ऐसी मानसिकता का भी त्याग करें कि जो बेचना है वह महंगा हो और जो खरीदना है वह सस्ता हो।

उद्वेग नहीं, विचार का आश्रय लीजिए। किसी भी खेल की एक मर्यादा बनाई जाती है। उसके बाहर जाने पर खिलाड़ी अयोग्य हो जाता है। समाज में भी प्रत्येक व्यक्ति, वर्ग, धर्म, संप्रदाय को ईश्वर के बनाए हुए सनातन चिंतन को आधार मानकर उसी पर चलना चाहिए, ताकि सब लोग सुखी, आनंदित और शांतिपूर्ण ढंग से अपने-अपने श्रुतिपंथ पर चलकर श्रेष्ठ नागरिक होकर श्रेष्ठ देश और विचारधारा को जन्म दें। बहुत भूख लगना या बिल्कुल भूख न लगना, दोनों रोग हैं। हम स्वस्थ उसको कहते हैं, जिसको जीने और कार्य करने के लिए जितनी भूख जिस समय लगनी चाहिए उतनी लगे और वह उतना ही भोजन करे, जो शरीर के लिए अपेक्षित है। संतुलन और विवेक ही व्यक्ति और समाज को शारीरिक और मानसिक रूप से स्वस्थ रख सकते हैं। कहने वाला कोई भी हो, सुनने वाला समझदार होना चाहिए।

स्वामी मैथिलीशरण

मंगल ग्रह पर पानी का सुबूत

मुकुल व्यास

नासा के पर्सिवियरेंस रोवर ने पाया है कि मंगल ग्रह का जेजेरो क्रेटर किसी समय पानी से भरा हुआ था

मंगल ग्रह हमेशा जिज्ञासा का विषय रहा है। विज्ञानी इसके बारे में अधिक से अधिक जानने की कोशिश कर रहे हैं। इसके लिए विभिन्न देशों ने अभियान भेजा है। इसी कड़ी में नासा के पर्सिवियरेंस रोवर ने पाया है कि मंगल ग्रह का जेजेरो क्रेटर किसी समय पानी से भरा हुआ था। यह रोवर पहली बार फरवरी 2021 में इंजेन्यूनिटी हेलीकाप्टर के साथ क्रेटर पर उतरा था। रोवर ने जमीन में प्रविष्ट करने वाले रडार का उपयोग करके यह खोज की है। उसने एक झील से संबंधित तलछट की परतों के बारे में बताया है। यह झील बाद में एक विशाल डेल्टा में तब्दील हो कर सूख गई। जब क्रेटर से एकत्र किए गए भूवैज्ञानिक नमूने पृथ्वी पर लौट आएंगे, तब शोधकर्ताओं को इस बात का सुबूत मिल सकता है कि लाल ग्रह पर कभी प्राचीन जीवन पनपा था।

पर्सिवियरेंस रोवर पुरानी क्यूरियोसिटी रोवर के साथ मंगल ग्रह की सतह पर प्राचीन जीवन के संकेतों की खोज कर रहा है। पृथ्वी पर वापसी के लिए चट्टान के दर्जनों नमूने एकत्र कर रहा है। तीन वर्ष तक रोवर के साथ इंजेन्यूनिटी हेलीकाप्टर भी था जिसने 18 जनवरी को मंगल ग्रह की सतह पर अपनी 72वीं और अंतिम उड़ान भरी। कार के आकार का पर्सिवियरेंस रोवर सात वैज्ञानिक उपकरणों से लैस है, जिनमें से एक मंगल ग्रह की सतह के नीचे प्रयोग के लिए रडार इमेजर है। रोवर ने इसी रडार की मदद से मंगल पर पानी के बारे में बताया है।

विज्ञानी डेविड पेज के अनुसार मंगल ग्रह के वातावरण में बड़े पैमाने पर हुए परिवर्तन के संकेत दिख रहे हैं। चूंकि पृथ्वी पर जीवन पानी पर अत्यधिक निर्भर है। मंगल ग्रह पर पानी का सुबूत इस बात का एक महत्वपूर्ण सुराग हो सकता है कि ग्रह पर कभी जीवन था या आज भी वहां जीवन हो सकता है, लेकिन हमारे दुर्गम पड़ोसी ग्रह पर जीवन के सुबूत जुटाना अभी तक बहुत कठिन साबित हुआ है। पर्सिवियरेंस द्वारा एकत्र कीमती सामान को पृथ्वी पर वापस लाने के लिए पर्सिवियरेंस रोवर यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी (ईएसए) के सैंपल रिट्रीवल लैंडर के आगमन का इंतजार करेगी। इस अंतरिक्ष यान को एक छोटे राकेट के साथ पैक किया गया है। रोवर राकेट को पृथ्वी की ओर वापस दागे जाने से पहले इसमें चट्टान और मिट्टी के नमूनों को लोड करेगा। अंतरिक्ष में लांच किए जाने के बाद नमूने वाले राकेट को पृथ्वी पर वापसी की उड़ान के लिए ईएसए के अर्थ-रिटर्न आर्बिटर (ईआरओ) द्वारा एकत्र किया जाएगा। नासा ने शुरू में ईआरओ को वर्ष 2026 में लांच करने की योजना बनाई थी, लेकिन बाद में इस तारीख को वर्ष 2028 तक खिसका दिया गया, जिसका अर्थ है कि ये नमूने 2033 तक ही पृथ्वी पर वापस आ पाएंगे।

(लेखक स्वतंत्र टिप्पणीकार हैं)

घाटे का सौदा

आम चुनावों में वोटों का संतुलन बनाने के लिए समाजवादी पार्टी और कांग्रेस ने मन बनाया कि अब साथ जाना है, लेकिन मामला यहां फंस रहा था कि कौन कितनी सीटों पर लड़े। आखिर दल और प्रत्याशियों के वजन के आधार पर सीटों की सौदेबाजी के लिए राजस्थान के पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और अन्य नेताओं के साथ पूर्व केंद्रीय मंत्री सलमान खुर्शीद को जिम्मा सौंपा गया। वे इसके लिए कई बार बैठे और बातचीत की। अंततः सीटों की हिस्सेदारी तय हो गई, लेकिन यह क्या? वोटों का संतुलन बनाने के चक्कर में खुद सलमान खुर्शीद की फर्रुखाबाद सीट भी चली गई, जिस पर वह खुद लड़ने की तैयारी किए बैठे थे। अब सियासी गलियारों में चर्चा है कि हाईकमान की रजामंदी में पहले तो सौदेबाजी में शामिल हो गए, लेकिन समझ आ रहा है कि घाटे का सौदा कर आए। अब देखना होगा कि हाईकमान उनके सियासी वजन का कितना मोल रखता है।

वोटर बनने का उत्साह

राजरंग

चुनावों में मतदान को लेकर नई पीढ़ी में जबरदस्त रुझान देखने को मिल रहा है। हालांकि इस रुझान के पीछे आयोग की वह पहल है, जिसमें 18 साल की उम्र पूरी करने से पहले ही उन्हें वेटिंग वोटर्स के रूप में रजिस्टर्ड किया जा रहा है। स्थिति यह है कि जो युवा इस भागमभाग जिंदगी में एक सेकेंड के लिए भी किसी चीज का इंतजार करने को तैयार नहीं हैं, वे मतदाता बनने के लिए महीनों की वेटिंग में भी लगने को तैयार हैं। आयोग ने ऐसे ही वेटिंग वोटर्स की एक सूची जारी की है, जिसमें वर्ष 2024 में वोटर बनने के लिए अब तक 17 साल की उम्र से अधिक करीब 15 लाख युवा अपना रजिस्ट्रेशन करा चुके हैं। इससे न सिर्फ चुनाव आयोग उत्साहित है, बल्कि यह देश के मजबूत लोकतंत्र के लिए शुभ संकेत भी है।

निराले शंकर

वैश्विक कूटनीति के मंच पर विदेशी मंत्री एस जयशंकर की वाक्पटुता से वैसे तो पूरी दुनिया वाकिफ है, लेकिन वह लोगों को हंसा भी सकते हैं, इसका अंदाजा किसी को नहीं था। रायसीना डायलाग के दौरान उनके इस हुनर को देख लोग चकित थे। दरअसल डायलाग के दौरान कई ऐसे मौके आए जब उनसे कुछ ऐसे सवाल पूछे गए, जो उन्हें घेरने वाले थे, लेकिन उन्होंने अपने अंदाज में सबको खारिज कर दिया। इस दौरान एक सवाल चीन से जुड़ा था। उनसे पूछा गया कि क्या क्वाड की रणनीति चीन को घेरने की है। इस पर उन्होंने ने चुटकी लेते हुए कहा, 'नहीं आपको गलत जानकारी है, यह ब्रिटेन के लिए है।' वहीं जब भारतीय सेना और रक्षा तैयारियों से जुड़ा हुआ सवाल पूछा गया तो उन्होंने यह कहते हुए पल्ला झाड़ लिया कि 'क्या आप सेना से हैं?' सवाल पूछने वाले ने जवाब दिया, 'वह शोध क्षेत्र से जुड़े हैं।' इस पर उन्होंने कहा कि 'तो फिर आप काफी करीब हो।' इस पर वहां मौजूद लोगों ने जमकर ठहाके लगाए।

छवि की चिंता

नई दिल्ली स्थित कृषि भवन में बैठने वाले एक मंत्री महोदय ने पहले तो अपनी एक खास छवि बनाई, लेकिन अब उन्हें इसका थोड़ा अफसोस भी हो रहा है। यह अफसोस हाल के दिनों में कई बार उनकी जुबान पर आ चुका है, लेकिन जैसा कि राजनीतिक शख्सीयतों की आदत होती है कि वे अपनी नकारात्मक छवि के लिए मीडिया को ही जिम्मेदार समझते हैं। वह मंत्री महोदय भी मीडिया को ही दोष देते हैं कि लगातार उनकी एक समुदाय के खिलाफ छवि बनाई गई। यह नहीं बताते कि अपनी इस छवि को बनाने के लिए ही वह वर्षों से मीडिया को बुला-बुला कर बयान देते रहे हैं। यह तो पता नहीं कि उनका मिजाज कुछ बदला है तो क्यों बदला है, लेकिन उन्होंने अपना दर्द कुछ इस तरह से बयान किया, ''मेरी छवि तो मीडिया ने इतनी खराब कर दी है कि अगर मैं शहनाज हुसैन से भी मेकअप कराऊं तो यह ठीक होने वाली नहीं है।''

संस्थापक-स्व. पूर्णचन्द्र गुप्त, पूर्व प्रधान संपादक-स्व.नरेन्द्र मोहन, नॉन एग्जीक्यूटिव चेयरमैन-महेन्द्र मोहन गुप्त, प्रधान संपादक-संजय गुप्त, जागरण प्रकाशन लि. के लिए: नीतेन्द्र श्रीवास्तव द्वारा 501, आई.एन.एस. बिल्डिंग, रफी मार्ग, नई दिल्ली से प्रकाशित और उन्हीं के द्वारा डी-210, 211, सेक्टर-63 नोएडा से मुद्रित, संपादक (राष्ट्रीय संस्करण) -विष्णु प्रकाश त्रिपाठी*
दूरभाष : नई दिल्ली कार्यालय : 011-43166300, नोएडा कार्यालय : 0120-4615800, E-mail: delhi@nda.jagran.com, R.N.I. No. DELHIN/2017/74721 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अधीन ही होंगे। हवाई/रेल शुल्क ₹-2 अतिरिक्त।

****

12 प्रतिशत ही है महिलाओं की संख्या समूचे पुलिस बल में, वर्ष 2020 की एक रिपोर्ट के अनुसार, जबकि अधिकारी वर्ग में तो यह प्रतिशत (केवल 8.7) और भी कम है।

आजकल

अनंत विजय
anant@nda.jagran.com

महाआख्यान से बनता सत्ता विमर्श

देश में राष्ट्रवाद की भावना को जन-जन तक पहुंचाने में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का अतुलनीय योगदान कहा जा सकता है। भारतीय जनता पार्टी के हालिया आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में इस तथ्य को विस्तार से रेखांकित भी किया गया। वस्तुत: पीएम मोदी अपने भाषणों व क्रियाकलापों के माध्यम से जो आख्यान रचते हैं, उसमें इन सबकी झलक स्पष्ट दिखाई देती है। स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के समय जो पंच प्रण की घोषणा उन्होंने की थी, वह इसी आख्यान का एक भाग प्रतीत होता है

हालिया आयोजित भाजपा के राष्ट्रीय अधिवेशन में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश को गुलामी के प्रतीकों से मुक्ति दिलाने का किया आह्वान। फाइल

नई दिल्ली के प्रगति मैदान में आयोजित भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय अधिवेशन में गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि नरेन्द्र मोदी ने देश को सामूहिक हीन भावना से बाहर निकालने का काम किया। नरेन्द्र मोदी जी ने पहली बार इस देश को गुलामी के प्रतीकों से मुक्ति दिलाने का आह्वान लाल किले की प्राचीर से किया था। आगे उन्होंने जो कहा उसका अर्थ यह था कि मोदी के शासन काल में देश को उग्रवाद, आतंकवाद और नक्सलवाद से लगभग मुक्ति मिली। अमित शाह ने अपने भाषण में नरेन्द्र मोदी को कई समस्याओं से मुक्ति दिलानेवाले नेता के तौर पर रेखांकित किया। जब मुक्ति की बात होती है और उसके साथ कार्यों का लेखा-जोखा दिया जाता है तो वह कोई साधारण बात नहीं होती है। राजनीतिक वक्तव्य नहीं होता है। उस वक्तव्य के पीछे एक सुचिंतित रणनीति होती है। नरेन्द्र मोदी अपने भाषणों के माध्यम से एक पाठ (टेक्स्ट) का निर्माण करते चलते हैं। मोदी के भाषणों में मुक्ति की चाहत तो होती ही है, देश के उज्जवल भविष्य का स्वपन भी होता है।

पिछले दिनों नरेन्द्र मोदी के भाषणों और क्रियाकलापों को देखें तो वह इसके माध्यम से जो आख्यान रचते हैं, उसमें इन सबकी झलक दिखाई देती है। नरेन्द्र मोदी ने स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के समय जो पंच प्रण की घोषणा की थी वह इसी आख्यान का एक भाग प्रतीत होता है। उसमें भी उन्होंने मुक्ति का स्वप्न देखा था। उसके बाद वे विकसित भारत की बात कर रहे हैं। वर्ष 2047 तक भारत को पूर्ण विकसित राष्ट्र बनाने का स्वप्न। जब नरेन्द्र मोदी विकसित भारत का आख्यान रचते हैं तो उसके साथ भारतीय अस्मिता को भी जोड़ते चलते हैं। अगर मोदी की इस अस्मितामूलक आख्यान को देखें और उसे स्टीफन ग्रीनब्लाट जैसे चिंतक की अवधारणाओं पर कसें तो स्थिति और स्पष्ट होती है। स्टीफन ग्रीनब्लाट कहते हैं कि हर अस्मिता एक कहानी है। कहानी के बार बार कहने से ही अस्मिता का निर्माण होता है।

हिंदी के आलोचक सुधीश पचौरी ने अपनी पुस्तक 'तीसरी परंपरा' की खोज में लिखा है कि जिस तरह से इतिहास एक टेक्स्ट (पाठ) है, उसी तरह पद्मावत भी एक टेक्स्ट है और हर सत्ता समूह उसे अपने तरीके से पढ़ सकता है। उसका अर्थ फिक्स्ड नहीं तरल होता है, उससे राजनीति भी की जा सकती है। वह आगे कहते हैं कि टेक्स्ट जब मास सर्कुलेशन में होता है तो उसकी मानी की परतें बढ़ती जाती हैं और उसकी एक इकोनमी भी काम करने लगती है। कोई टेक्स्ट कभी बंद नहीं होती है, न किसी टेक्स्ट का समापन होता है। वह नए नए पाठों के लिए हमेशा खुली रहती है और इस तरह इतिहास के पाठों को बदलती रहती है। अब यदि इस सिद्धांत के आलोक में नरेन्द्र मोदी के रचे आख्यानों को देखें तो वे जिस टेक्स्ट का सृजन करते हैं, उसके मास सर्कुलेशन में होने के कारण व्याप्ति बढ़ती जाती है। प्रधानमंत्री मोदी अपने पाठ (टेक्स्ट) का समापन नहीं करते हैं, बल्कि एक को दूसरे से जोड़कर एक नया टेक्स्ट जनता के सामने रखते चलते हैं। उदाहरण के तौर पर पहले वह संकल्प से सिद्धि की बात करते हैं। संकल्प और सिद्धि की बात करते करते वह स्वाधीनता के अमृत महोत्सव के समय कई प्रकार की मुक्ति का पाठ रचते हैं। इस मुक्ति के बाद वह विकसित भारत के स्वप्न की संरचना करते हैं। इस तरह से प्रधानमंत्री मोदी न केवल नया टेक्स्ट रचते हैं, बल्कि उसे इतिहास के तथ्यों के साथ मिलाकर मौखिक इतिहास (ओरल हिस्ट्री) का सृजन भी करते हैं। सुधीश पचौरी कहते हैं कि मौखिक इतिहास के इतिहासत्व को लेकर अतिरिक्त सजगता की आवश्यकता होती है। मौखिक इतिहास की चुनौतियां भी कई प्रकार की होती हैं। वे वाचक पर निर्भर करते हैं। कई बार मौखिक इतिहास में एक वाचक नहीं होता है, बल्कि वह अलग अलग कालखंड में कई वाचकों के माध्यम से आगे बढ़ता है। प्रधानमंत्री के इस मौखिक पाठ का विश्लेषण करते हैं तो इतिहास के साथ साथ वह एक पावर टेक्स्ट (सत्तात्मक कृति) का निर्माण भी करते हैं। पाठ में जब मुक्ति और स्वप्न का रसायन मिला दिया जाता है तो वो पावर टेक्स्ट बनता है। आज अगर नरेन्द्र मोदी की साख और विश्वास है तो उसके पीछे यही पावर टेक्स्ट है।

हमारे देश में पावर टेक्स्ट को समझने का सटीक उदाहरण तुलसीदास कृत श्रीरामचरितमानस है। तुलसीदास ने जब मानस की रचना की तो कथा के साथ साथ उन्होंने मुक्ति का लक्ष्य भी रखा। जब तुलसीदास मानस की रचना कर रहे थे, उस समय भारत की जनता का मनोबल गिरा हुआ था। हिंदू जनता आक्रांताओं की ज्यादातियों से परेशान थी और वह मुक्ति चाहती थी। तुलसीदास ने इसे समझते हुए एक ऐसे पाठ की रचना की जिसमें राम जैसा नायक था, और जिसका चरित्र लोगों में उत्साह का संचार करनेवाला था। तीसरी परंपरा की खोज करते करते लेखक कहते हैं कि रामकथा और उसमें राम का विष्णु के अवतार के रूप में आना और विराट हिंदू कथा में बदलना पूर्व लिखित बहुत सी रामकथाओं को विस्थापित कर देता है। भारत में तुलसी के रामकथा की व्याप्ति एक बहुत ही ताकतवर और सघन विमर्श पैदा करती है। इसके मूल में धार्मिक कारणों के अलावा सबसे बड़ा कारण है मानस के प्रतीकों, रूपकों और मुक्ति की कथा के रूप में उसके आदर्शों का सुदीर्घ और सतत संचरण। ये चिह्न एक तरह से हिंदू जनता की स्मृति में चक्कर मारते रहते हैं। भारत में मानस को मनोरंजन का ग्रंथ नहीं, बल्कि मुक्ति का ग्रंथ माना जाता है। एक मेटानेरेटिव यह बनता है कि वह कलियुग के अत्याचारों से मुक्ति देनेवाली एकमात्र कथा है। तुलसी के मानस के साथ विश्वास और आस्था जुड़कर उसे एक पावर टेक्स्ट बनाती है।

आज नरेन्द्र मोदी जिस तरह पावर टेक्स्ट का आख्यान रच रहे हैं, उससे उनके नेता की छवि के साथ मुक्तिदाता की छवि भी गाढ़ी होती जा रही है। उनके सहयोगी और उनकी पार्टी के लोग इस पावर टेक्स्ट को लेकर ही आगे बढ़ रहे हैं और जनमानस में इस छवि को गाढ़ा करने के प्रयत्न में जुटे हुए हैं। जनता भी प्रधानमंत्री के रूप में मोदी के इस पावर टेक्स्ट से सहमत ही नजर आती है। लोकतंत्र में जनता की सहमति का पैमाना चुनाव होता है। हाल ही में संपन्न तीन राज्यों के विधानसभा चुनाव के परिणामों में मोदी के इस पावर टेक्स्ट को मतदाताओं ने स्वीकार किया। विपक्ष के सामने इस समय सबसे बड़ी चुनौती नरेन्द्र मोदी के पावर टेक्स्ट से पैदा हो रहे मेटानैरेटिव को समझने के साथ साथ उसका काट तलाशने की है। विपक्षी दल अब भी राजनीति के पुराने औजारों से इसकी काट ढूंढने का प्रयत्न कर रहे हैं और निरंतर विफल हो रहे हैं। वे अब भी जाति और धर्म का आधार लेकर मोदी के पावर टेक्स्ट के समक्ष अपना पाठ प्रस्तुत कर रहे हैं। लेकिन इन पाठ में न तो मुक्ति की बात है और न ही कोई स्वप्न। इसलिए जनविश्वास अर्जित करने में सफलता नहीं मिल पा रही है। तुलसीदास ने रामकथा को मिथक से प्रतिरोधात्मक कथा में बदला, उसी तरह से प्रधानमंत्री मोदी ने विकसित भारत के संकल्प के नैरेटिव के साथ एक महाआख्यान रचा है। इसके परिणाम मिल रहे हैं।

खरी खरी

वरिष्ठ व्यंग्यकार का कोट

मुकेश राठौर

पत्रकार और व्यंग्यकार के बीच लगभग वही संबंध है जो एलोपैथिक और होम्योपैथिक चिकित्सक में होता है। एक दर्द पर काम करता है, तो वहीं दूसरा दर्द के स्रोत पर। देखा गया है कि जबसे पत्रकार 'जैकेट' पहनने लगे हैं, तबसे व्यंग्यकारों के लिए 'कोट' अवश्यंभावी हो गया है। खासकर तब जब ऐसा करना जरूरी हो, माने किसी सम्मान समारोह में खाने का निमंत्रण और बतियाने का आमंत्रण मिला हो। विसंगतियों पर चोट हो तो संगतियों पर कोट से भारी पड़ना भी एक विकल्प हो सकता है।

दरअसल, जीवन में पहली बार आठ कम साठ वर्षीय युवा व्यंग्यकार को एक सम्मान समारोह में बतौर बराती शामिल होने का बुलावा आया। बड़े-बड़े व्यंग्यकार और व्यंग्यकाएं आ रही थीं उस बारात में। बड़ों के साथ उठो-बैठो तो पहला संताप कपड़ों का ही रहता है। ऊपर से सूत्रधार महोदय का बारंबार कोट इस्त्री करवाने का फरमान। मगर ऐन वक्त पर 'बैल से ऊन निकाल टोपा बुनने' से रहे। युवा व्यंग्यकार ने कोट के लिए एक वरिष्ठ से संपर्क किया।

युवा व्यंग्यकार : सर जी, सम्मान समारोह में क्या पहनकर जाना है?

वरिष्ठ व्यंग्यकार : कुछ भी पहन लेना। जब एक जैसे लोग इकट्ठा हों तो पहनने, ओढ़ने, नहाने और खाने के बारे में ज्यादा नहीं सोचना चाहिए।

युवा : सर, आप समझे नहीं। क्या कोट पहनना कंपलसरी है?

वरिष्ठ : ऐसा कोई जरूरी नहीं। मगर हां, ठंड का मौसम है, पहन लो तो अच्छा रहेगा। खैर, चाहो तो कोट मुझसे ले लेना।

युवा : फिर आप क्या पहनेंगे?

वरिष्ठ : मेरी तासीर वैसे भी गर्मी की है। सबको पता है।

युवा : ठीक है, कल मिलते हैं।

कार्यक्रम स्थल पर पहुंचने से पूर्व वरिष्ठ व्यंग्यकार ने अटैची से अपना कोट निकाल युवा व्यंग्यकार को दे दिया। कुछ देर बाद शुरू हुए सम्मान समारोह में देश के शीर्ष व्यंग्यकार के रूप में जब उनके नाम की घोषणा हुई तो गर्मी की तासीर वाले वरिष्ठ व्यंग्यकार को, जिन्हें बड़ी देर से हिचकियां आ रही थीं, छींकें भी आने लगीं, गोया ठंडी लग गई हो। इसी बीच उन्हें बड़े सम्मान के साथ मंच पर बुलाया गया। दो चार वक्ताओं के बाद उनका सम्मान होना था। अब कोट का क्या करें? उधर सभागार में आखिरी पंक्ति में बैठे युवा व्यंग्यकार को सटासट सेल्फियां लेकर परमाथे परमानंद होते देख मन किया कि अभी जाकर उससे अपना कोट छीन लिया जाए 'मैं तुम्हें भूल जाऊं हो नहीं सकता और तुम मुझे भूल जाओ यह मैं होने नहीं दूंगा'' टाइप। फिर विचार आया कि लोग तो यही समझेंगे कि कोट उससे मांगकर लिया है। किंकर्तव्यविमूढ़ थे। अपने ही सामान की आवश्यकता और उपलब्धता दोनों ही वहां थी, परंतु उपयोग नहीं कर सकते थे।

खैर, किसी तरह कार्यक्रम आगे बढ़ा और भोजनावकाश हुआ। वरिष्ठ व्यंग्यकार भीड़ को चीरते हुए सीधे युवा व्यंग्यकार के पास पहुंचे और कान में कुर्राए कि कोट को अभी के लिए चुपचाप अपने बैग में रख लो। व्यंग्यकार ने वैसा ही किया।

अब दूसरे सत्र में युवा व्यंग्यकार को अपनी बात कहने के लिए मंच पर आमंत्रित किया गया। वह मंच पर चढ़ा तो सूत्रधार महोदय ने यों ही चुटकी ली, बोले, ''लगन से पहले सेहरा क्यों उतार दिया?''

अब तो बेचारे युवा व्यंग्यकार के दिल का दर्द बाहर आ ही गया। वह बोले, सम्मानीय सूत्रधार और साहित्यकार बंधुओं, आप मेरे व्यंग्य पर बात करना, मेरी भाषा, मेरे शिल्प... यहां तक कि मेरी व्यक्तिगत जिंदगी पर भी... लेकिन कृपया करके उस कोट पर बात मत करना।

(लेखक व्यंग्यकार हैं)

पोस्ट

आपके पास जितने रोजगार हैं उतने ही दें, लेकिन यह सुनिश्चित करें कि भर्ती की परीक्षा के पेपर लीक न हों, भर्तियों का रोस्टर हो जिसमें परीक्षा, परिणाम और पदस्थापन की तिथि अंकित हो और उसका अक्षरश: पालन हो।

सर पासे@rranjan501

उत्तर प्रदेश में पुलिस भर्ती परीक्षा रद हो गई। विडंबना देखिए भाजपा ने राजस्थान और छत्तीसगढ़ में कांग्रेस सरकार के खिलाफ पेपर लीक को लेकर जमकर प्रचार किया। केंद्र ने कानून बनाया और डबल इंजन यूपी में ही पेपर लीक हो गया। लाखों छात्रों को फिर परीक्षा देनी होगी।

मिलिंद खांडेकर@milindkhandekar

दिल्ली में आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के बीच गठबंधन हुआ। तो अब गांधी परिवार भी दिल्ली में लोकसभा चुनाव में आम आदमी पार्टी को वोट देगा।

पराग भंडारी@Paragbhandari1

वर्ष 2013 में भी आम आदमी पार्टी ने कांग्रेस के समर्थन से सरकार गठन किया था, जिसके बाद दिल्ली में अरविंद केजरीवाल मुख्यमंत्री बने और आप का विस्तार शुरू हुआ। आप ने कांग्रेस के वोट बैंक में सेंधमारी की और कांग्रेस को खामियाजा उठाना पड़ा।

अंकित गुप्ता@ReporterAnkitG

आजादी के बाद कांग्रेस ने एक के बाद एक पांच लोकसभा चुनाव जीते, लेकिन किसी ने नहीं कहा कि लोकतंत्र खत्म हो गया या लोकतंत्र खतरे में है।

दिलीप मंडल@Profdilipmandal

जागरण जनमत

कल का परिणाम

क्या डब्ल्यूपीएल से देश में महिला क्रिकेट की लोकप्रियता को बढ़ावा मिलेगा?

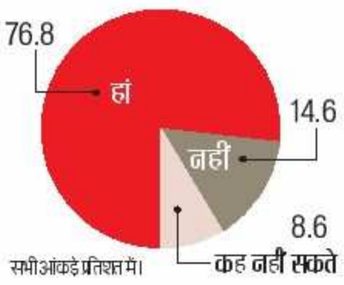

सभी आंकड़े प्रतिशत में।

आज का सवाल

क्या आम आदमी पार्टी के साथ समझौते से कांग्रेस की राजनीतिक ताकत बढ़ेगी?

परिणाम जागरण इंटरनेट संस्करण के पाठकों का मत है।

जनपथ

स्थिति में कश्मीर की आया यह बदलाव,
लगे सूखने जिस्म के उसके सारे घाव।
उसके सारे घाव लगा जब उन पर मरहम,
कम होता अब दीख रहा है लोगों का गम।
होने लगा विकास बदल तब गई परिस्थिति,
अब चुनाव में रंग दिखाएगी यह स्थिति।

– ओमप्रकाश तिवारी

रचनाकर्म

सफलता के संघर्ष की कथा

आकांक्षा अवस्थी

मंजिल उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है, पंख से कुछ नहीं होता हौसलों से उड़ान होती है। हम एक ऐसी महिला की बात कर रहे हैं, जिनके लिए यह उक्ति कहना उनके व्यक्तित्व को सम्मानित करना होगा, जिनके हौसले के आगे चुनौतियां परास्त हो गईं। इन संघर्ष और चुनौतियों को उन्होंने अपनी आत्मकथात्मक पुस्तक 'मैडम सर' में साझा किया है। हम बिहार की पहली महिला आइपीएस अधिकारी मंजरी जारूहार की बात कर रहे हैं। वर्ष 1972 बैच की भारतीय पुलिस सेवा अधिकारी किरण बेदी थीं और मंजरी जारूहार 1976 के बैच की थीं। मंजरी का पालन-पोषण कड़े अनुशासन में हुआ। इनके पिता जमींदारों के एक सामंती परिवार से थे, सभी उच्च शिक्षित पर अत्यंत रूढ़िवादी। एक रूढ़िवादी व्यवस्था के बीच पली-बढ़ी मंजरी को गृहिणी बनने का हर गुर सिखाया गया था, लेकिन उनकी वह दक्षता वैवाहिक जीवन में जान नहीं फूंक पाई और अथक प्रयास के बाद भी रिश्ते ने दम तोड़ दिया। यहीं से शुरू हुई मंजरी की सफलता के संघर्ष की कहानी।

अब वह अपने जीवन की कमान अपने हाथों में थाम चुकी थीं। मंजरी जारूहार रास्ते की तमाम बाधाओं को पार करते हुए भारतीय पुलिस सेवा में शीर्ष पद पर पहुंचीं। इस बीच उन्हें हंटरवाली नाम भी मिला। उनकी यह कहानी दिलो दिमाग को आंदोलित करने वाली और प्रेरित करने वाली है। यह कहानी दुख और निराशा की है तो साहस और आशा की, कभी हार न मानने और अपने विश्वास पर अड़े रहने की भी है। कहानी जहां एक ओर रोजमर्रा की बात कहती है तो दूसरी ओर इसमें कभी न झुकने, कभी न रुकने की एक असामान्य जिद, मन की सच्चाई व व्यक्तित्व की गरिमा और अपने लक्ष्य को प्राप्त करने का अदम्य साहस भी दिखता है।

यह हमारे देश में घर की चारदीवारी के भीतर और बाहर काम में जुटी उन असंख्य लड़कियों एवं महिलाओं की कहानी भी है, जिनके हिस्से में बस यही आया है कि वे समाज के दकियानूसी नियमों और रूढ़िवादी सोच से जूझती रहें। यह कहानी बताती है कि अपने काम में शक्ति और अधिकार का संतुलन बरकरार रखते हुए मानवीय भी रह सकते हैं। मैडम सर संबोधन में छुपा अंतर्विरोध उन अनेक विरोधाभासों और विसंगतियों का संकेत देता है, जो इस पुस्तक में जगह-जगह वर्णित हैं। मैडम सर में वर्णित एक छोटे शहर की जिंदगी, वहां की जात-पात की राजनीति और साथ ही

इस आत्मकथात्मक कृति में एक महिला की सफलता के शिखर तक की यात्रा, उसकी दृढ़ता और एक स्वतंत्र पहचान गढ़ने की अनूठी लगन का अद्भुत एवं मार्मिक आख्यान मिलता है

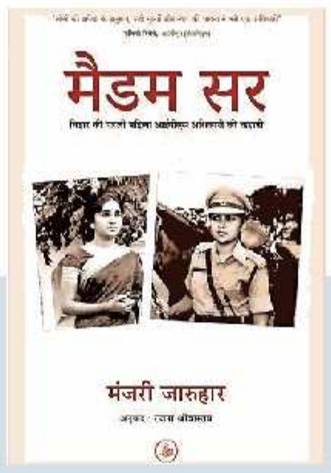

पुस्तक : मैडम सर
लेखिका : मंजरी जारूहार
अनुवाद : रंजना श्रीवास्तव
प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
मूल्य : 399 रुपये

पीढ़ी दर पीढ़ी बदल रहे देश की चर्चा भी है। यह एक ऐसी स्त्री द्वारा साहस, दृढ़ता और नेतृत्वकला का सबक है, जिसने सहकर्मियों का अविश्वास और उपहास सहते हुए भी नए-नए रास्ते खोजे और सफलता पाई। यह कहानी आपको अपने सपने पूरे करने की प्रेरणा और असंभव ऊंचाइयां छूने की हिम्मत देगी। पुस्तक में एक स्त्री की सफलता के शिखर तक की चढ़ाई, उसकी दृढ़ता और अपनी एक स्वतंत्र पहचान गढ़ने की अनूठी लगन का अद्भुत व मार्मिक आख्यान मिलता है।

मंजरी ने अपने कार्यकाल में बिहार और झारखंड में विभिन्न पदों पर काम किया। वह राष्ट्रीय पुलिस अकादमी (एनपीए), सीआइएसएफ और सीआरपीएफ में भी रहीं। लेखिका ने पुस्तक में कहा है कि, 'लोग मुझसे अकसर मेरी कहानी लिखने को कहते थे। मैं आशा करती हूं कि मेरी कहानी सभी लड़कियों और कामकाजी महिलाओं को अपने दिल की बात पर भरोसा करना सिखाएगी और उन्हें तमाम परेशानियों के बावजूद जीवन में आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देगी। मेरी पुस्तक उन महिलाओं के नाम है, जिन्हें बेड़ियां मंजूर नहीं, जिन्हें विश्वास है कि राह न मिली तो अपनी राह वे खुद बना लेंगी।'

बाल विवाह मुक्त भारत का सपना

सुकांत सौरभ

बाल विवाह के बहुत से दुष्परिणाम हैं। यह बाल गर्भावस्था का कारण भी बनता है, जिससे बाल मृत्यु का खतरा बढ़ जाता है। संयुक्त राष्ट्र का अनुमान है कि विश्व भर में हर वर्ष कम से कम 1.2 करोड़ लड़कियों का विवाह 18 वर्ष की आयु से पहले कर दिया जाता है, उनमें से एक-तिहाई भारत में हैं। एक किशोरी का विवाह न केवल उसके अधिकार का व्यापक और भयावह उल्लंघन है, बल्कि समाज में बाल दुष्कर्म की स्वीकृति भी है। यह हमारे चारों ओर हो रहे हमारी छोटी बच्चियों के विरुद्ध सबसे जघन्य और हृदयविदारक अपराध है। इस पुस्तक के माध्यम से लेखक भुवन रिभु ने बाल विवाह की इस कुप्रथा को समाप्त करने के विभिन्न उपाय दिए हैं।

पुस्तक 'व्हेन चिल्ड्रेन हैव चिल्ड्रेन : टिपिंग प्वाइंट टू एंड चाइल्ड मैरिज' बाल विवाह के कारण हो रहे बाल दुष्कर्म को समाप्त करने का एक विनम्र प्रयास है। बचपन बचाओ आंदोलन के पूर्व राष्ट्रीय सचिव और सुप्रीम कोर्ट के अधिवक्ता भुवन रिभु ने इस कुप्रथा को समाप्त करने के लिए पुस्तक में पिकेट रणनीति का सुझाव दिया है। इसमें उन्होंने रोकथाम, संरक्षण और अभियोजन के लिए नीति बनाने पर विस्तृत चर्चा की है। साथ ही बुनियादी ढांचे और संबंधित संस्थानों में निवेश करने पर बल दिया है। रिभु ने इस रणनीति के तहत विभागों, सरकारों और हितधारकों को सम्मिलित करने के भी उपाय बताए हैं। उन्होंने सभी हितधारकों को बाल विवाह से निपटने के लिए तैयार करने के लिए पर्याप्त ज्ञान एकत्रित करने के महत्व को भी इंगित किया है तथा ऐसे पारिस्थितिकी तंत्र तैयार करने की रणनीति बताई है, जहां बाल विवाह को कोई स्थान ना मिले। साथ ही इस कुप्रथा की रोकथाम के लिए प्रौद्योगिकी विकास के महत्व को भी इंगित किया है।

पुस्तक : व्हेन चिल्ड्रेन हैव चिल्ड्रेन : टिपिंग प्वाइंट टू एंड चाइल्ड मैरिज
लेखक : भुवन रिभु
प्रकाशक : प्रभात प्रकाशन
मूल्य : 400 रुपये

यतीन्द्र मिश्र

व्यक्तिगत व राजनीतिक जीवन के अंतर्संबंधों की कथा

भारत गणराज्य के 13वें राष्ट्रपति, प्रखर वक्ता और विद्वान भारत रत्न प्रणब मुखर्जी, जिनके भारतीय राजनीतिक परिदृश्य और शासन प्रणाली में उल्लेखनीय योगदान ने उन्हें देश के प्रतिष्ठित राजनेताओं में स्थापित किया। ये प्रणब मुखर्जी ही थे, जिन्होंने अलग-अलग समय पर भारत सरकार में महत्वपूर्ण भूमिकाएं निभाते हुए विदेश, रक्षा, वित्त और वाणिज्य मंत्री के रूप में कार्यभार संभाला और एक सांसद होने के साथ-साथ दोनों सदनों के नेता होने का अद्वितीय गौरव प्राप्त किया। शर्मिष्ठा मुखर्जी की 'प्रणब, माई फादर : ए डाटर रिमेंबर्स' प्रणब मुखर्जी की राजनीतिक और व्यक्तिगत जीवन यात्रा पर व्यापक और बहुआयामी दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हुए उनकी जिंदगी के कुछ अज्ञात और अनसुने पहलुओं को बेहद कुशलतापूर्वक उजागर करती है। लेखिका जिक्र करती हैं कि उन्हें डायरी लिखने का शौक था जिसके चलते मेरे सामने एक उनकी एक नई दुनिया खुली। इस मर्मस्पर्शी संस्मरण के लिए प्राथमिक स्रोत उनकी डायरियां ही हैं। इसके अलावा उनकी सुनाई गई व्यक्तिगत कहानियों, अनदेखी तस्वीरों के संग्रह, कुछ प्रमुख राजनीतिक हस्तियों से बातचीत और लेखिका के शोध से उनकी पांच दशक लंबी राजनीतिक पारी की महत्वपूर्ण घटनाओं को कुल नौ अध्यायों में सहेजा गया है। यह किताब प्रणब मुखर्जी के जीवन के सुख-दुख, कृतज्ञता, प्रेम, संघर्ष और विजय, उनके विचार, भावनाएं एवं राजनीति की जटिलताओं के सार को सहजता से दर्शाती है। बंगाल के सुदूर गांव में टिमटिमाते दीपक से लेकर राजधानी के जगमगाते झूमरों तक के उनके सफर की कथा आकर्षक ढंग से बुनी गई है। यह कहानी प्रणब मुखर्जी के जीवन को आकार देने वाली महिलाओं की भी है। उनकी मां राजलक्ष्मी देवी, पत्नी सुव्रा (गीता), नेता इंदिरा गांधी और बेटी शर्मिष्ठा जो वह स्वयं हैं, कैसे इन सभी ने उनके जीवन को प्रभावित किया। साथ ही पिता-पुत्री के बीच के भावुकतापूर्ण रिश्ते की महक यहां बिखरी है।

व्यक्तिगत उपाख्यानों को राजनीतिक अंतर्दृष्टि के साथ मिश्रित करते हुए यह किताब स्वतंत्रता के बाद के भारतीय राजनीतिक इतिहास में रुचि रखने वालों के लिए एक मूल्यवान पाठ है

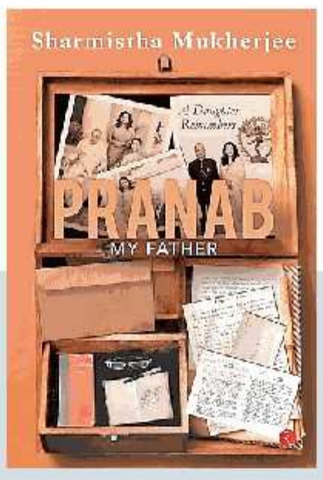

पुस्तक : प्रणब, माई फादर : ए डाटर रिमेंबर्स
लेखिका : शर्मिष्ठा मुखर्जी
प्रकाशक : रूपा पब्लिकेशंस, नई दिल्ली
मूल्य : 795 रुपये

प्रथम अध्याय 'अ रिमार्केबल डे' में लेखिका की अपने पिता के बचपन पर लिखी पंक्तियां बेहद भावनात्मक है- 'बचपन में, उन्हें (प्रणब) हमारे पैतृक गांव मिराती (वर्तमान में बंगाल के बीरभूम जिले) में अपने स्कूल तक पहुंचने के लिए हर दिन लगभग पांच किमी पैदल चलना पड़ता था। रास्ते में एक जलधारा पड़ती, जो भारी बारिश के दौरान तेज धार में बदल जाती थी। जब भी मैं अपने पिता को देखने की कोशिश में अपनी आंखें बंद करती हूं, तो मुझे एक छोटा लड़का उसी तेज धारा के पास सोचते हुए खड़ा दिखता है कि इसे कैसे पार किया जाए?' पुस्तक प्रणब मुखर्जी के शानदार जीवन की एक आकर्षक झलक पेश करते हुए उनकी निजी दुनिया में पाठकों को आमंत्रित करती है, जिसमें इंदिरा गांधी परिवार के अलावा पी.वी. नरसिम्हा राव, अटल बिहारी वाजपेयी, डा. मनमोहन सिंह और नरेंद्र मोदी भी उपस्थित हैं। यहां उस युवा व्यक्ति का एक ईमानदार वृत्तांत प्रस्तुत है, जो जल्द ही अपनी मेहनत और लगन से इंदिरा गांधी के सबसे भरोसेमंद सहयोगियों में से एक बन गए। शर्मिष्ठा अपनी कुशल लेखन शैली और स्पष्टता से तमाम राजनीतिक पेचीदगियों को बेहद चतुराई से पार करती हैं। लेखिका विवादास्पद मुद्दों को संबोधित करने से भी नहीं कतरातीं, जिसमें राहुल गांधी के बारे में प्रणब मुखर्जी की टिप्पणियां भी शामिल हैं।

शर्मिष्ठा एक मजेदार घटना का जिक्र करती हैं- सुबह की सैर के दौरान राहुल गांधी उनसे मिलने आए। प्रणब को सुबह की सैर और पूजा के दौरान कोई भी रुकावट पसंद नहीं थी। इसके बावजूद वे राहुल गांधी से मिले। बाद में पता चला कि राहुल असल में शाम को प्रणब से मिलने वाले थे, लेकिन राहुल के कार्यालय ने गलती से उन्हें सूचित कर दिया कि बैठक सुबह थी। मेरे पूछने पर उन्होंने व्यंग्यात्मक ढंग से टिप्पणी की, 'अगर राहुल का कार्यालय ए.एम. और पी.एम. के बीच अंतर नहीं कर सकता, तो वे एक दिन पीएमओ को चलाने की उम्मीद कैसे कर सकते हैं?'

पुस्तक में इंदिरा गांधी के बाद प्रणब मुखर्जी और गांधी परिवार के बीच समय के साथ बढ़ते अविश्वास के अनगिनत उदाहरण मौजूद हैं। कहीं-कहीं पर प्रणब मुखर्जी द्वारा इसके पीछे के कारण को संबोधित करने का प्रयास भी नजर आता है। जैसे, सोनिया गांधी के बारे में जब वे कहते हैं- 'वह सिर्फ अपनी और अपने परिवार के हितों की रक्षा करने की कोशिश कर रही हैं।' भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ उनके मजबूत जुड़ाव, भारत के प्रधानमंत्री बनने की उनकी अधूरी महत्वाकांक्षा, राष्ट्रपति पद के उम्मीदवार के रूप में प्रणब का नामांकन, प्रधानमंत्री मोदी को उनकी सलाह, उनके राजनीतिक जीवन के ऐसे कई पहलुओं पर बातें यहां मिलती हैं। शर्मिष्ठा मुखर्जी की यह कृति एक समर्पित पिता एवं अनुभवी राजनेता के व्यक्तिगत और राजनीतिक जीवन के अंतर्संबंधों को दर्शाते हुए राजनीतिक साहित्य में एक महत्वपूर्ण योगदान के रूप में लंबे समय तक अपनी उपस्थिति दर्ज कराती रहेगी।

****

Join Magazine Group @ ₹60/m WhatsApp To 8969469464 Join Magazine Group @ ₹60/m WhatsApp To 8969469464

स्मृति शेष

शाम्भवी शुक्ला

अमीन सयानी मतलब जादू भरी आवाज

आवाज की रहस्यमय दुनिया, जहां जादू ध्वनि के रूप में हवा में बहा करता था, में शक्तिशाली इकाई के रूप में एक आविष्कार मौजूद था, जिसे रेडियो के नाम से जाना जाता था। क्या आपने कभी आवाजों की उस मनमोहक दुनिया के बारे में सोचा है, जो हमारे दिल और आत्मा को मंत्रमुग्ध कर देती है? ऐसा ही एक जादूगर, जिसने ऑडियो मनोरंजन के क्षेत्र में अपनी अमिट छाप छोड़ी है, कोई और नहीं, बल्कि अमीन सयानी हैं। अपने मधुर स्वर और त्रुटिहीन उच्चारण के साथ अमीन सयानी ने पीढ़ियों का दिल जीता है।

दस दिसम्बर, 1932 को मुंबई में जन्मे प्रसिद्ध रेडियो प्रसारक अमीन सयानी का लक्ष्य शुरू से ही स्पष्ट था। वह प्रसारण की दुनिया पर अमिट छाप छोड़ना चाहते थे। रेडियो संचार और सम्मोहक कहानी कहने के प्रति उनका गहरा जुनून कम उम्र में ही विकसित हो गया था जिससे वॉयस मॉड्यूलेशन और प्रभावी संचार की दुनिया की तरफ उनका मार्ग प्रशस्त हुआ। रेडियो प्रस्तोता के रूप में अपनी यात्रा शुरू करने वाले अमीन सयानी की असाधारण आवाज और आकर्षक व्यक्तित्व ने सहजता से श्रोताओं के दिलों को मोहित कर लिया और उन्हें उनके द्वारा साझा की गईं कहानियों के करीब ला दिया।

अपनी कला के प्रति उनकी अटूट प्रतिबद्धता और उत्साह ने निस्संदेह प्रसारण के क्षेत्र में उनकी अभूतपूर्व सफलता का मार्ग प्रशस्त किया जिससे वे इस क्षेत्र में प्रतिष्ठित कलाकार बन गए। 1952 में अमीन सयानी का प्रतिष्ठित रेडियो शो बिनाका गीतमाला का प्रसारण एशिया के सबसे पहले रेडियो स्टेशन 'रेडियो सिलॉन' और फिर 'विविध भारती' से हुआ जिससे आपकी रेडियो यात्रा को एक नया मुकाम मिला एवं कालांतर में वह भारत के प्रत्येक घर में सुना जाने वाला घरेलू कार्यक्रम बन गया। शो को कुशलता और प्रतिभा के साथ होस्ट करते हुए अमीन सयानी मधुर संगीत और मनोरम कहानी कहने का पर्याय बन गए। आवाज के अद्भुत कौशल के जरिए दर्शकों से जुड़ने की उनकी क्षमता ने वायु तरंगों के सच्चे जादूगर के रूप में उनका अलग स्थान बना दिया। उनके प्रतिष्ठित कार्यक्रमों में एस. कुमार का फिल्म मुकदमा और फिल्म मुलाकात, सॉरिडॉन के साथी, बॉर्नविटा क्विज प्रतियोगिता, शालीमार सुपरलैक जोड़ी, संगीत के सितारों की महफिल, मराठा दरबार शो : सितारों की पसंद, चमकते सितारे, महकती बातें आदि शामिल थे। जन जागरूकता के लिए एचआईवी/एड्स मामलों पर आधारित नाटकों के रूप में 13-एपिसोड की रेडियो शृंखला 'स्वनाश' भी बनाई जिसमें प्रख्यात डॉक्टरों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के साक्षात्कार भी शामिल थे।

जो बात अमीन सयानी को अन्य रेडियो प्रस्तोताओं से अलग करती थी, वह उनकी अद्वितीय आवाज मॉड्यूलेशन और त्रुटिहीन उच्चारण थे। उनके मखमली स्वर और अनोखी अभिव्यक्ति श्रोताओं पर मंत्रमुग्ध कर देने वाला प्रभाव डालती और उन्हें उनके कथन की दुनिया में खींच लातीं। चाहे वह किसी कालजयी क्लासिक का परिचय दे रहे हों या अपने जीवन के किस्से साझा कर रहे हों, अमीन सयानी की आवाज ऐसा जादू बुनती जिसका विरोध करना असंभव था। अमीन सयानी का प्रभाव रेडियो प्रसारण के दायरे से कहीं आगे तक फैला हुआ था। उनकी कालजयी कहन-'बहनो और भाईयो नमस्कार, मैं आपका दोस्त अमीन सयानी'-से श्रोताओं के मन में उनकी अमिट छाप पड़ गई। अमीन सयानी भावी महत्त्वाकांक्षी रेडियो प्रस्तुतकर्ताओं और आवाज की दुनिया के कलाकारों की प्रेरणा बने। डिजिटल मीडिया और स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म के युग में भी अमीन सयानी का जादू बरकरार रहा। उन्होंने बोलने-बात करने की अद्भुत कला के माध्यम से

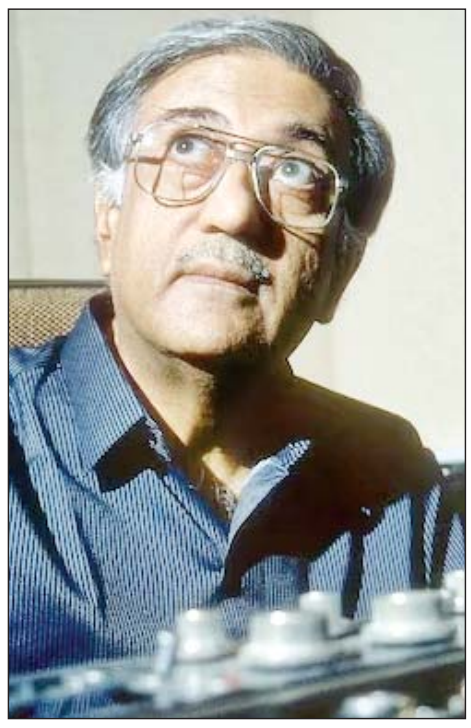

कथा-कथन की परंपरा को जीवित रखा। साथ ही, पॉडकास्ट, ऑडियोबुक और लाइव इवेंट के माध्यम से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करते रहे। अमीन सयानी, समय और स्थान की बाधाओं को पार करते हुए श्रोताओं के साथ गहरे भावनात्मक स्तर पर जुड़ जाते थे। उनके काम का प्रभाव पीढ़ी-दर-पीढ़ी गूंजता रहा जिससे उनके नवीन विचारों और अद्वितीय प्रतिभा के साथ भारतीय रेडियो प्रसारण के परिदृश्य को आकार मिलता रहा।

अपने शानदार कॅरिअर के दौरान अमीन सयानी को रेडियो प्रसारण में उनके असाधारण योगदान के लिए 2009 में 'पद्मश्री' से सम्मानित किया गया। शिल्प के प्रति उनके समर्पण और भारतीय संगीत एवं संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए 2006 में इंडिया रेडियो फोरम के साथ फेडरेशन ऑफ इंडियन चैंबर्स ऑफ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री की ओर से लिविंग लीजेंड अवार्ड,1993 में इंडियन एकेडमी ऑफ एडवरटाइजिंग फिल्म आर्ट की ओर से हॉल ऑफ फेम अवार्ड, 1992 में लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड्स द्वारा 'पर्सन ऑफ द ईयर' अवार्ड से नवाजा गया। ऐसे ही न जाने कितने पुरस्कार और सम्मान उन्हें नवाजे जाने की सूची में शामिल हैं।

आपकी आवाज का जादू सिर्फ भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी बिखरा। 1976 से अमीन सयानी अमेरिका, कनाडा, इंग्लैंड, अरब, इस्वातिनी, मॉरीशस, दक्षिण अफ्रीका, फिजी और न्यूजीलैंड सहित विभिन्न देशों में भारतीय रेडियो शो और विज्ञापनों के निर्यात में अग्रणी रहे। आप कई अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों के उद्घोषक भी रहे जैसे बीबीसी का कार्यक्रम 'म्यूजिक फॉर द मिलियंस', रेडियो उम्मुल क्वैन, अरब पर 'गीतमाला की यादें', रेडियो एशिया, यूएई पर 'ये भी चंगा वो भी खूब', रेडियो ट्रुरो, इस्वातिनी पर 'संगीत पहेली' आदि। अमीन सयानी आवाज और कहानी कहने की परिवर्तनकारी शक्ति के सशक्त उदाहरण हैं। युवा रेडियो प्रस्तोता से प्रसारण की दुनिया में महान हस्ती तक की उनकी यात्रा उनकी प्रतिभा और समर्पण का प्रमाण है। 54,000 से अधिक रेडियो कार्यक्रमों और 19,000 से ज्यादा स्पॉट्स/जिंगल्स के निर्माण, संचालन के इस उस्ताद की आवाज 20 फरवरी, 2024 को ध्वनि आकाश में खो गई। अमीन सयानी की आवाज हमेशा लाखों लोगों के दिलों में विशेष स्थान बनाए रखेगी। उनका जादू लंबे समय तक चलता रहेगा। ■

जो बात अमीन सयानी को अन्य रेडियो प्रस्तोताओं से अलग करती थी, वह थी उनकी अद्वितीय आवाज। मॉड्यूलेशन और त्रुटिहीन उच्चारण। उनके मखमली स्वर और अनोखी अभिव्यक्ति श्रोताओं पर मंत्रमुग्ध कर देने वाला प्रभाव डालती थी। चाहे वह किसी कालजयी क्लासिक का परिचय दे रहे हों या अपने जीवन के किस्से साझा कर रहे हों, उनकी आवाज ऐसा जादू बुनती जिसका विरोध करना असंभव था। उनका प्रभाव रेडियो प्रसारण के दायरे से कहीं आगे तक फैला हुआ था। उनकी कालजयी कहन-'बहनो और भाईयो नमस्कार, मैं आपका दोस्त अमीन सयानी'-से श्रोताओं के मन में उनकी अमिट छाप पड़ गई। अमीन सयानी भावी महत्त्वाकांक्षी रेडियो प्रस्तुतकर्ताओं और आवाज की दुनिया के कलाकारों की प्रेरणा बने

प्रेम प्रकाश

गोवा के कल्चरल डीएनए की रिडिस्कवरी

बीते एक दशक में भारतीय राजनीति का सूर्य ही दक्षिणायन नहीं हुआ है, सत्ता विमर्श की पारंपरिक जमीन भी बदल गई है। इस दौरान सियासी दलों और जमातों की नई शिनाख्त के साथ संघवादी ढांचे में प्रदेशों की नई पहचान विकसित हुई है। इस शिनाख्त और पहचान को लेकर अगर कोई गाफिल है, तो कहना चाहिए कि अतीत की धुंध में वर्तमान को देखने की जिद बेमानी है। अभाव और अफसोस की मानसिकता से निकले भारत में आज राज्यों के बीच स्वस्थ विकासवादी होड़ है। इस होड़ के साथ जिन राज्यों का उभार एक नया वृत्तांत रच रहा है, उनमें गोवा खास तौर पर विलक्षण है।

कमाल की बात है कि विरासत और विकास के जो कलश आज अयोध्या और वाराणसी में जमगम हो रहे हैं, उनमें गोवा भी शामिल है। गोवा की नई धज और शिनाख्त को वहां के मुख्यमंत्री डॉ. प्रमोद सावंत जिस तरह मुकम्मल करने में लगे हैं, वो नेतृत्व और विजन के लिहाज से शानदार है। वे आम तौर पर भीड़ और प्रचार से दूर अपनी धुन में काम करने वाले नेता हैं। उनके व्यक्तित्व की यह खासियत उन्हें न सिर्फअपने दल में, बल्कि मौजूदा भारतीय राजनीति के एक विलक्षण राजनेता के तौर पर सामने लाती है। जिस गोवा के सांस्कृतिक आकर्षण को लेकर कभी एलेक पद्मसी जैसे दिग्गज कहते थे कि समुद्र के किनारे भारत का यह हिस्सा वेस्टर्न कल्चर का ईस्टर्न गेटवे है, वह गोवा आज सनातन और अध्यात्म के साथ अपने क्लचरल डीएनए पर नाज कर रहा है। गोवा का यह नाज डॉ. सावंत के संकल्प के साथ और मजबूत हुआ है। उन्होंने गोवा के पर्यटन को आध्यात्मिक राष्ट्रवाद का नया टैंपलेट दिया है। डॉ. सावंत जब जोर देकर कहते हैं कि गोवा सनातन की भूमि है, तो कहीं न कहीं गोवा को लेकर कल्चरल रिडिस्कवरी का तकाजा सामने रखते हैं। यह पिछले कुछ वर्षों में भारतीयता के 'स्व' को लेकर खड़े हुए नये विमर्श की ही ताकत है कि गोवा का लोकप्रिय नेतृत्व इस बात को आज गर्व से कहता है कि उनका प्रदेश भारतीय संस्कृति का आनुषांगिक नहीं, बल्कि एकात्मिक हिस्सा है। गोवा को भारतीय आस्था और संस्कृति की लंबी विरासत से नत्थी करके नहीं, बल्कि साथ में गूंथे फूल की तरह देखने की जरूरत है। यह संत सोहिरोबनाथ आंबिये, आद्य नाटककार कृष्ण भट्ट बांदकर, सुश्री केसरबाई केरकर, आचार्य धर्मानंद कोसंबी, और रघुनाथ माशेलकर जैसी हस्तियों की धरती है।

गोवा का जुझारूपन, यहां के लोगों का संघर्ष भारतीय इतिहास का गौरवशाली सर्ग है। अंग्रेजों ने भारत पर करीब दो सौ साल शासन किया, लेकिन गोवा के लोगों ने साढ़े चार सौ साल तक पुर्तगालियों को सहा

जिसकी वजह से यह पूर्वाग्रह लंबे समय तक रहा कि गोवा का कल्चरल कन्वर्जन उसे भारतीय परंपरा से दूर ले गया जबकि हकीकत यह है कि इतना सब कुछ होने के बावजूद गोवा वह राज्य है, जहां मंदिरों का पुनर्निर्माण हुआ। 16वीं शताब्दी में जो मंदिर पुर्तगालियों ने नष्ट किया था, उस सप्त कोटेश्वर मंदिर को छत्रपति शिवाजी ने बनवाया। आज जब सावंत सरकार ने छत्रपति शिवाजी महाराज द्वारा बनवाए गए इस मंदिर के पुनरुद्धार का बीड़ा उठाया है, तो निस्संदेह बड़ी सांस्कृतिक पहल है। आध्यात्मिक राष्ट्रवाद की नई कवायद से गोवा आज सन, सेंड और सी की पहचान से आगे लोक और आस्था के भारतबोध से जुड़ रहा है। श्रेय देना होगा वहां के मुख्यमंत्री को कि वे यह सब शोर-शराबे की बजाय प्रशांत चित्त के साथ कर रहे हैं। उनका संकल्प और प्रतिबद्धता गोवा के सांस्कृतिक इतिहास का ऐसा आख्यान साबित होने जा रहे हैं, जिसका मूल्यांकन महज राजनीतिक आधार पर नहीं किया जा सकता। गोवा के लोग प्रदेश सरकार के कदम से कितने उत्साहित हैं, इसका अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि खुद मंदिरों की प्रतिष्ठा कर रहे हैं। गौरतलब है कि राज्य सरकार ने इस दिशा में एक कदम आगे बढ़ते हुए एक समिति गठित की थी जिसने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि पुर्तगालियों के 450 साल के शासन में गोवा में लगभग 900 से अधिक मंदिर तोड़े गए।

गोवा सरकार आज न केवल स्मृति प्रत्यार्थ मंदिर ही नहीं बनवा रही है, बल्कि अपने सांस्कृतिक उत्स को गौरवशाली धज देने में भी जुटी है। आस्था और आध्यात्मिकता की राह पर आगे बढ़ता गोवा विकास के विभिन्न पैमानों पर भी सराहा जा रहा है। स्वयंपूर्ण गोवा मिशन जमीनी स्तर पर जनसामान्य को सशक्त कर रहा है। दरअसल, डॉ. सावंत ने अपने पहले कार्यकाल में ही कई योजनाएं शुरू कर दी थीं, जिनमें स्वयंपूर्ण गोवा शानदार मिसाल है। पहले कार्यकाल में उन्होंने हाउसिंग फॉर ऑल, इलेक्ट्रीसिटी फॉर आल, फाइनेंशियल सिक्योरिटी फॉर ऑल, हेल्थ फॉर ऑल, इक्यूवमेंट फॉर दिव्यांग, किसान क्रेडिट कार्ड फॉर ऑल समेत कुल दस लक्ष्य निर्धारित किए थे। इन लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में उठाए गए सकारात्मक कदमों के सुखद नतीजे अब आने लगे हैं। गोवा सौ प्रतिशत घरों में नल से जल और बिजली आपूर्ति करने वाला देश का पहला राज्य है। पहला राज्य है कि जहां प्रत्येक गांव में सड़कें हैं। केंद्र सरकार की योजनाएं लागू करने के मामले में भी गोवा बाकियों के लिए नजीर है। राज्य में उज्ज्वला योजना सौ प्रतिशत लागू की गई। गोवा आज कैरोसिन-फ्री स्टेट है। शत-प्रतिशत शौचालय निर्माण वाला देश का पहला राज्य है। ऐसी योजनाओं की संख्या एक दो नहीं, बल्कि 13 हैं, जिनमें गोवा बाकी प्रदेशों के मुकाबले शीर्ष पर है। डॉ. सावंत गोवा को लेकर बातचीत में कई बार भावुक होते हैं, और कहते हैं कि अर्थ और आराधना का नया साझा समुद्र तट पर भारतीय संस्कृति का यशकलश स्थापित कर रहा है। ■

पत्रिका समीक्षा राजीव मंडल

कला आलेखों का गुलदस्ता

'नादरंग' के नये अंक (अंक-सात) में प्रसिद्ध शास्त्रीय-उपशास्त्रीय गायक पं. अजय पोहनकर कहते हैं, 'मेरी गायकी तो एक गुलदस्ता है।' वास्तव में पत्रिका का यह अंक भी कला, संगीत और रंगमंच के महत्त्वपूर्ण आलेखों का एक सुंदर गुलदस्ता बन गया है।

लखनऊ से प्रकाशित पत्रिका के अंक देर-सबेर आते हैं, लेकिन अंक के आलेखों में मेहनत झलकती है, लिखने की भी और उन्हें जुटाने की भी। आज जब इन कलाओं पर चिंतनपरक लेखन कम होता जा रहा है, पत्रिका में ऐसे लेखों को प्रस्तुत करने का कौशल सराहनीय है। अंक के साक्षात्कार उल्लेखनीय हैं। पोहनकर की संपादक से की गई भेंट तो महत्त्वपूर्ण है ही, प्रसिद्ध तबला वादक स्वप्न चौधरी से प्रसिद्ध संगीत समीक्षक विजय शंकर मिश्र की और पुणे के शास्त्रीय गायक राजेंद्र कंदलगांवकर से अभिषेक भारद्वाज एवं उर्मिला राठौर की बातचीत भी अंक को संग्रहणीय बनाती हैं। दिवंगत रंगकर्मी कन्हाई लाल से प्रतुल जोशी की लंबी बातचीत भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। वे रंगमंच की गंभीर समस्या की ओर इशारा करते हुए कहते हैं, 'थिएटर के आधार पर जीवन निर्वाह करना बेहद मुश्किल कार्य है। बिना सरकारी संरक्षण के, हम कुछ नहीं कर सकते। यदि मैं व्यावसायिक संस्थानों से वित्तीय सहयोग लेता हूं तो हम अपने रंगकर्म को एक अलग किस्म के लक्ष्यों से संपृक्त कर देंगे। हम कुछ नहीं कर सकते, हमें फंड प्रदान करने वालों के उद्देश्यों को पूरा करना होगा। वहां कोई कलात्मक प्रगति नहीं होगी। यदि हम कलात्मक प्रगति देखना चाहते हैं, चाहते हैं कि रंगमंच स्वतंत्र रूप से आगे बढ़े तो हमें एक तरह के संरक्षण की जरूरत होगी-सरकारी। किंतु यह हमारे देश में हमारे पास नहीं है। विकसित देशों यथा यूरोप, अमेरिका में निजी लोकोपकारक पेशेवर रंगमंच को मदद करते हैं किंतु हमारे पास तो पेशेवर रंगमंच नहीं है।'

अंक में दिवंगत कथक नृत्यांगना अलकनंदा पर भी लेख है, जिन्हें लोग भूल चुके हैं। रंग संगीत, मुजरा, बघेली लोक गीतों पर अच्छी सामग्री है। गायक पं. महादेव प्रसाद मिश्र एवं वेंकटेश कुमार तथा जनकवि अण्णा भाऊ साठे पर लेख तथा 'मैं और मेरी कला' के अंतर्गत रंगकर्मी संजय उपाध्याय, गायिका शोभा चौधरी एवं चित्रकार चेतन औदिच्य की कला यात्रा पठनीय है।

पत्रिका : नादरंग
अंक : सात
मूल्य : सौ रुपये
संपादक : आलोक पराड़कर ■

राग रंग आलोक पराड़कर

सुर-ताल के स्मरण

प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक पं. सी.आर.व्यास ने किराना, ग्वालियर और आगरा घरानों की शिक्षा लेकर अपनी राह बनाई थी। उन्होंने बंदिशें भी खूब लिखीं। यह उनका जन्मशताब्दी वर्ष है। इंदौर में उनकी शिष्या शोभा चौधरी प्रति वर्ष उनकी स्मृति में गुनीजान संगीत समारोह करती हैं। पंडित व्यास बंदिशें गुनीजान नाम से लिखते थे। उन्होंने कई राग भी बनाए। शताब्दी वर्ष को भव्य रूप में मनाने के लिए पंचम निषाद संगीत संस्थान ने कई आयोजनों की रूपरेखा बनाई है। यह इस शृंखला का पहला समारोह रहा जो 16-18 फरवरी तक इंदौर के जाल सभागार में हुआ।

तीनों ही दिन सभागार का खचाखच भरा होना संस्था के प्रयासों तथा श्रोताओं के संगीतप्रेम का परिचायक था, कलाकार भी इनके बीच प्रस्तुतियों से उत्साहित हुए। समारोह की पहली संध्या में इंदौर के ही गौतम काले और पुणे की अपर्णा केलकर ने गायन किया जबकि पंचम निषाद संगीत संस्थान के विद्यार्थियों ने तालानंद की प्रस्तुति दी। तालानंद में मुकेश रासगाया, धवल परिहार, कृष्णकांत परिहार तबले पर, मीनल मोडक गायन और सुयश राजपूत हारमोनियम पर शामिल थे। पं. जसराज के शिष्य गौतम काले ने राग 'पूरिया' को चुना तो अपर्णा ने व्यास जी द्वारा रचित राग 'धनकोनी कल्याण' को। गौतम काले के साथ तबले पर राहुल बेने और हारमोनियम पर दीपक खसरावल तथा अपर्णा के साथ तबले पर कौशिक केलकर और हारमोनियम पर रवि किल्लेदार ने संगत की। दूसरे दिन के कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण नाद झंकार का था। यूं तो कथक या दूसरे नृत्य में तबले और गायन के संगतकार होते हैं लेकिन अपनी इस परिकल्पना में मुकुंदराज देव तबला वादक को मंच के मध्य में रखते हैं। मंच के एक ओर गायक होता है और दूसरी ओर नृत्य की प्रस्तुति होती है। प्रस्तुति में गायक श्रीरंग टेम्बे को छोड़ दें तो अन्य चार कलाकार परिवार के सदस्य हैं। तबले पर मुकुंदराज का साथ देने वाले रोहित देव बेटे हैं, कथक नृत्यांगना मनाली देव पत्नी और प्रिया देव बहू। गणेश वंदना से आरंभ करते हुए कार्यक्रम में झपताल में विस्तार हुआ जिसमें छूट की उठान का विशेष महत्त्व रहा। मनाली और प्रिया देव ने तीनताल में राधा-कृष्ण, राम-रावण युद्ध, काली से जुड़े प्रसंगों पर भाव प्रदर्शन किया गया तथा 'मिश्र किरवानी' में आनंद तराना की प्रस्तुति हुई। नाद झंकार में ताल की प्रधानता थी और उसका सुंदर निकास हुआ लेकिन भाव पक्ष कई बार कमजोर भी होता दिखा। संध्या के कार्यक्रमों का आरंभ माल्यबन चटर्जी के गायन से हुआ। उन्होंने राग-'झिंझोटी' की प्रस्तुति की। हालांकि 'झिंझोटी' को चंचल प्रकृति का समझा गया है लेकिन माल्यबन की प्रस्तुति में यह धीर-गंभीर बना रहा। उन्होंने एकताल और तीनताल में रचनाएं सुनाईं। हालांकि बंदिशों के उच्चारण में बांग्ला प्रभाव भी दिख रहा था।

तीसरी और आखिरी संध्या में केडिया बंधु ने सरोद और सितार की जुगलबंदी प्रस्तुति की। मैहर सेनिया घराने के मोर मुकुट केडिया और मनोज कुमार केडिया ने राग 'चंद्रनंदन' से आरंभ किया जो उस्ताद अली अकबर खान द्वारा बनाया गया राग है और जिसमें 'चंद्रकौंस', 'मालकौंस', 'नंदकौंस' और 'कौसी कान्हड़ा' रागों का प्रभाव मिलता है। केडिया बंधु के वादन में मधुरता और तैयारी का सुंदर समावेश था तो लयकारी भी अच्छी देखने को मिली। राग में तीन ताल में उन्होंने तीन रचनाएं सुनाईं। 'मिश्र काफी' से समापन कर चुके केडिया बंधु को श्रोताओं की मांग पर 'भैरवी' भी सुनाना पड़ा। कार्यक्रम में तबले पर आशीष सेनगुप्त ने संगत की। संध्या के कार्यक्रमों का आरंभ शाश्वती मंडल के गायन से हुई। उन्होंने राग-'मारु विहाग' को अपनी प्रस्तुति के लिए चुना जिसमें उनकी अच्छी आवाज और तैयारी का प्रभाव दिखा। इस राग में उन्होंने व्यास जी की बंदिश भी सुनाई जबकि प्रख्यात गायक पंडित कुमार गंधर्व के जन्मशताब्दी वर्ष का स्मरण करते हुए 'सोहनी भटियार' सुनाया तथा बाद में 'काफी' में टप्पा की प्रस्तुति भी की। तबले पर उनका साथ हितेंद्र दीक्षित और हारमोनियम पर प्रोफेसर मौसम ने संगत की। समारोह में इंदौर के कलाकारों पंडित शंभू प्रसाद पवार और पंडित सतीश खानवलकर का सम्मान भी किया गया। संचालन संजय पटेल एवं उज्ज्वला जोशी ने किया। ■

कैनवस जय त्रिपाठी

संभावनाओं का 'युवा संभव'

नई दिल्ली की श्रीधराणी कला दीर्घा में 20 शिल्पकारों के मूर्तिशिल्पों की प्रदर्शनी को 'युवा संभव' शीर्षक से प्रदर्शित किया गया है। जानना दिलचस्प है कि प्रदर्शनी में भले ही एक स्पष्ट दृष्टिकोण और योजना मिलती है, परंतु प्रदर्शनी युवा और श्रेष्ठ मूर्तिकार के रूप में ऐसे स्वरूप का विस्तार करती है, जिसमें इनमें से प्रत्येक के पास एक ऐसी दृष्टि है, जो अपरंपरागत विचार प्रक्रियाओं और दृष्टिकोणों पर विचार करती है। कृतियां बताती चलती हैं कि कैसे ये युवा शिल्पी मूर्तिकला परंपरा से समृद्ध होते हुए स्वयं में बौद्धिक कलाकार की भूमिका अदा करने लगते हैं। ये युवा मूर्तिकारों के मुक्त करने के विचार से प्रेरित हैं। मूर्तिकला अपने विषय को बेहतर ढंग से जानने और स्पष्ट दृष्टिकोण को संदर्भित कर परिभाषित करती है। रजा फाउंडेशन द्वारा आयोजित शिल्प प्रदर्शनी का अवलोकन करते में मन में यह बात भी आती है कि आज मूर्तिशिल्प की समृद्धि के लिए शिल्पों को गढ़ने वाले रचनात्मक दृष्टि संपन्न नवोन्मेषी मूर्तिकार कला निर्माण में रचनात्मक राह के नवीन स्वरूप की ओर अग्रसर हैं। युवा शिल्पकारों के इस तरह के प्रदर्शन से मूर्तिकला मजबूत ही नहीं होगी, बल्कि दशकों में वांछित रुचि भी विकसित होगी।

प्रदर्शित बीस मूर्तिकारों के शिल्पों को देख हम समझ सकते हैं कि तराशने से पहले कोई मूर्तिकार योजना और इरादे की जिस प्रक्रिया से गुजर कर उसके निर्माण को निर्धारित करता है, वह हमेशा उस मूर्ति में प्रतिबिंबित होती है, जिसे वह गढ़कर आकार देता है। मूर्तिशिल्पों की यह समृद्धता अभिषेक तुइवाला, आकाश कुमार सेठ, अनिल कुमार, अरविंद मंगल, भोला कुमार भीम, साइरस पेनुगंती, देबाशीष बेरा, गोल्डी कुमार, हर्ष दुरुगड्डा, काजल, ललित कुमार चौरसिया, नरेंद्र प्रजापति, नरेंद्र कुमार देवांगन, प्रदीप कामिया, रमेश चंद्र, रवि कुमार, रेनुबाला कश्यप, सब्बावरपु वीएस राव, संगम वानखड़े, शेख अजघराली में प्रतिबिंबित होती है।

जैसा कि माइकल एंजेलो ने कहा था, 'पत्थर के हर टुकड़े के अंदर एक मूर्ति होती है और इसे खोजना मूर्तिकार का काम है।' मूर्तिकार चीजों के रूप और आकार को लेकर लगातार खोज की राह पर हैं। जब यथार्थ जगत कला का अंग बन जाता है, तो उसे अनेक प्रक्रिया-प्रतिक्रियाओं से गुजरना पड़ता है। 'युवा संभव' मूर्तिकारों की कथात्मक रचनाएं पौराणिक कहानियों एवं शिल्पों के समकालीन स्वरूप का वर्णन करती है। अभिप्राय यह है कि यथार्थ को कलाकारों की नजर से भी देखा जाना चाहिए। प्रदर्शित मूर्तिकारों का रचना संसार जहां प्रकृति के यथार्थ रूप में है, वहीं नई संभावनाओं को दर्शाते शिल्पों में कई तरह के पशु-पक्षी और मानव आकृतियों वाले भावों से भरे शिल्प नजर आते हैं। कई शिल्प भावों के साथ-साथ गतिशील हैं, जो उनको सजीव, मर्मस्पर्शी और संजीदा बनाते हैं। यह शिल्पों देखकर प्रतीत होता है। यही एक परिपक्व मूर्तिकार की विशिष्टता भी होती है। प्रदर्शित शिल्प बोलते ही नहीं अपितु प्रेक्षक से बात भी करते हैं।

समकालीन मूर्तिकारों के बेजुबान जानवरों के गतिशील मूर्तिशिल्प को देखकर दर्शक की आंखें नम हो जाती हैं। आप अंदाज लगा सकते हैं कि किस तन्मयता से इनको रचा गया होगा। युवा शिल्पकार जिस तन्मयता से अपने शिल्पों को आकार देते हुए सजग रहते हैं, उतने ही मूर्तिशिल्प की कलात्मकता को लेकर भी सजग हैं। युवा मूर्तिकारों द्वारा आज मूर्तिशिल्प की विविध विधाओं में विविध प्रकार का गंभीर और मूल्यवान काम रचा जा रहा है, जो संसार की किसी भी शिल्प परंपरा से तुलनीय है। इस संदर्भ में 'युवा संभव' का यह आयाम भारतीय युवा शिल्पकारों के अपने आत्मवादी दर्शन और गहन चिंतन को स्थान देता है।

एक अच्छी और विशेष तरह से प्रस्तुत की गई इस समूह प्रदर्शनी को रजा फाउंडेशन द्वारा आयोजित तथा रॉबिन डेविड द्वारा क्यूरेट किया गया है। 29 फरवरी तक चलने वाली प्रदर्शनी में मूर्तिकारों की रचनात्मक कल्पना, कलात्मक ऊर्जा, अभिव्यक्ति की जीवंतता मुखर होती है। कलाकृतियां कहानियां सुनाती हैं जिनमें पत्थर गढ़कर मूर्तिकार कई तरीकों से कथा प्रस्तुत करते हैं। हालांकि, कलाकार अपनी कहानियां स्वयं गढ़ते हैं, और दर्शकों को कहानी की कल्पना करने के लिए छोड़ देते हैं। व्यक्तिगत दृष्टिकोण से विषय और प्रभावी मूर्तिकला दर्शकों, कलाप्रेमियों को एक शक्तिशाली संदेश देती है। रूप अनुपातों की गहराई से जुड़ा मूल रूप मूर्तिकला की रचनात्मक गहराई के प्रवाह को संदर्भित करता है। 'युवा संभव' की विशेषता है कि जहां युवा कलाकारों को कई दृष्टिकोण प्रदान करती है, वहीं इसका प्रभाव दर्शन की स्थिति के साथ बदलता है। एक दर्शक के रूप में आपकी आंखें दीर्घा के चारों ओर घूमती रहती हैं, और आप कलाकृति के साथ जुड़े रहते हैं। ■

Join Magazine Group @ ₹60/m WhatsApp To 8969469464 Join Epaper Group @ ₹30/m WhatsApp To 8969469464

भाजपा चुनाव जीतने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती। पार्टी और सरकार के कर्णधार जानते हैं कि वंशवाद और भ्रष्टाचार ने विपक्ष की जड़ें खोखली कर दी हैं। वे उन पर निर्ममता से चोट करने का कोई मौका नहीं चूकते। इस अविराम सियासी यात्रा का एक पड़ाव संदेशखाली भी है। देखते हैं, चुनाव के दौरान उसका संदेश कितना पुरअसर साबित होता है?

संदेशखाली का संदेश समझिए

शशि शेखर

कल तक गुमनामी के अंधेरे में गुम पश्चिम बंगाल का गांव संदेशखाली इस समय देश-दुनिया में सुर्खियां बटोर रहा है। वहां जो हुआ, बुरा हुआ, लेकिन यह सिर्फ अपराध और दंड का मामला नहीं है। भारतीय जनता पार्टी ने सफलतापूर्वक इसे देश के दो सबसे बड़े धर्मों के बीच का मामला बनाते हुए अपने चुनावी अभियान की आधारशिला रख दी है। भगवा दल हर चुनाव से पहले ऐसे कुछ मुद्दे रोशनी में लाने में कामयाब रहता है, जो उसके लिए लाभकारी साबित होते हैं।

कभी कांग्रेस और ममता बनर्जी को इसमें महारत हासिल थी।

बात पश्चिम बंगाल की है, इसलिए पहले ममता बनर्जी की चर्चा। आपको याद होगा कि सन् 2007 में रतन टाटा नैनो कार की फैक्टरी वहां लगाना चाहते थे। उनका सपना था कि देश का आम आदमी भी कार में चले, इसीलिए उस कार की कीमत एक लाख रुपये रखी गई थी। कभी संजय गांधी ने भी इसी सपने के साथ मारुति की बुनियाद रखी थी। न संजय इसमें सफल रहे और न रतन टाटा। अगर कोई कामयाब हुआ, तो वह थीं ममता बनर्जी।

ममता ने उन दिनों 'मां, माटी और मानुस' के नारे के साथ आंदोलन छेड़ दिया था। वह आंदोलन शुरुआत से इतना उग्र रहा कि रतन टाटा के पैर उखड़ गए। नरेंद्र मोदी उस समय गुजरात के मुख्यमंत्री हुआ करते थे। उन्होंने आनन-फानन में सभी सुविधाएं मुहैया करा नैनो की फैक्टरी साणंद में स्थानांतरित करवा वाहवाही लूट ली थी। तब कौन जानता था कि यही तेजी महज छह साल में उन्हें देश का प्रधानमंत्री बना देगी?

हालांकि, इसका तात्कालिक लाभ तृणमूल कांग्रेस को मिला था। ममता बनर्जी वाम दलों की 34 साल पुरानी सरकार को उखाड़ने में कामयाब रही थीं। जिन वंचित, शोषित और सर्वहारा के नाम पर वाम दल वहां हुकूमत कर रहे थे, उन्हीं लोगों ने उन्हें उखाड़ फेंका। बुद्धदेव भट्टाचार्य को सोवियत संघ के मिखाइल गोर्बाचेव की तरह अपनी पार्टी के पतन का गुनहगार बनने पर मजबूर होना पड़ा। तब से अब तक ममता बनर्जी राइटर्स बिल्डिंग पर काबिज हैं।

मुद्दों को पहचानकर उन्हें जनप्रिय नारों में तब्दील करने की यह अदा मूलतः कांग्रेस की उपज थी। सन् 1971 के चुनाव में इंदिरा गांधी ने उड़ीसा (अब ओडिशा) के कालाहांडी से नारा दिया था- 'वे कहते हैं इंदिरा हटाओ, मैं कहती हूं गरीबी हटाओ।' कालाहांडी उन दिनों भुखमरी और दरिद्रता का स्मारक हुआ करता था। नतीजतन, यह प्रतीक और नारा, दोनों कामयाब रहे। इंदिरा गांधी को उस चुनाव में लोकसभा की 352 सीटें हासिल हुई थीं। याद रहे, उन दिनों का विपक्ष आज की तरह विश्वसनीयता के संकट से नहीं जूझ रहा था। कामराज, जेपी, राममनोहर लोहिया, मोरारजी देसाई, चौधरी चरण सिंह, अटल बिहारी वाजपेयी जैसे दिग्गज इंदिरा गांधी के मुकाबिल थे। वे लड़ना जानते थे, पर इंदिरा गांधी की शख्सियत, समय को पहचानने की क्षमता और उसके अनुरूप समर-नीति बनाने के सामर्थ्य के समक्ष वे बेबस साबित हुए।

आजकल

यह बात अलग है कि इंदिरा गांधी बाद में रास्ता भटक गईं और उन्हें आपातकाल लागू करना पड़ा। उनके विरुद्ध जयप्रकाश नारायण ने जब संपूर्ण-क्रांति का आह्वान किया, तो एक और नारा उठा, 'इंदिरा हटाओ, देश बचाओ'। जनता पहले से गम और गुस्से में थी। इन शब्दों में उसे अपनी भावना की झलक मिली और इंदिरा गांधी सत्ता-बदर हो गईं। सत्ता पाने के बाद संपूर्ण-क्रांति के कर्णधार आपस में लड़ पड़े और उनका शीराजा भी दो साल में बिखर गया। भारतीय विपक्ष का मौजूदा संकट उन्हीं दिनों की देन है।

अगले चुनाव 1980 में हुए। इस दौरान इंदिरा गांधी ने अपने को पूरी तरह दांव पर लगा दिया था। कांग्रेस इस जाप के साथ चुनाव में उतरी- 'जात पर न पांत पर, इंदिरा जी की बात पर, मोहर लगेगी हाथ पर'। जराग्रस्त राजनीतिज्ञों के सत्ता

मोह से ऊबे हुए लोग सहज ही इंदिरा गांधी की ओर बढ़ गए। इसके बाद वह अपनी अंतिम सांस तक प्रधानमंत्री रहीं।

कांग्रेस की यह क्षमता लगभग चौदह साल बाद पुनः जगजाहिर हुई। सन् 2004 में अटल बिहारी वाजपेयी 'फील गुड' और 'इंडिया शाइनिंग' के नारे के साथ मैदान में उतरे थे। उस समय तक भारतीय जनता पार्टी का सांगठनिक ढांचा इतना मजबूत नहीं था। न ही अटल और आडवाणी नरेंद्र मोदी व अमित शाह की तरह एकाग्रचित्त थे। उनकी आपसी खटपट भी जगजाहिर थी। यही वजह है कि बिना कोई चेहरा सामने रखे कांग्रेस ने सिर्फ एक सवाल पूछा कि 'आम आदमी को क्या मिला' और वह सत्ता में आ गई। यहां जानना जरूरी है कि मनमोहन सिंह अगले दस साल के लिए भले सत्ता में आ गए हों, मगर कांग्रेस पर बुढ़ापा छाने लगा था।

यही वजह है कि 2013 में जब गोवा अधिवेशन में प्रधानमंत्री पद के लिए नरेंद्र मोदी का नाम आगे किया गया, तब तक तय हो चला था कि कांग्रेस के अच्छे दिन जा रहे हैं। उस समय मशहूर था कि प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह तो ईमानदार हैं, पर उनके साथी परम बेईमान। हर तरफ सत्तानायकों के भ्रष्टाचार की खबरें आम थीं और ऐसे-ऐसे घोटाले सुर्खियां बन रहे थे, जिनमें कुछ को अदालत में साबित भी नहीं किया जा सका, पर जनता की अदालत में नरेंद्र मोदी जीते।

नरेंद्र मोदी ने अपनी पार्टी, पदाधिकारियों और प्रतिपक्ष ने अतीत में जो भूलें की थीं, उन्हें नजदीक से परखा था। वह आते ही नई रहगुजर गढ़ने लगे। उन्होंने देश के वंचितों को सीधे लाभ देने की योजनाएं बनाईं। मतदाताओं का यह नया वर्ग जाति, क्षेत्र और लिंग से परे जाकर उनके लिए मतदान करता है। पिछले दिनों 'सेंटर फॉर दि स्टडी इन डेवलपिंग सोसायटीज' (सीएसडीएस) और लोकनीति के सर्वे में पाया गया कि भारतीय जनता पार्टी को वोट देने वाले तमाम लोग उसके सिद्धांतों से ज्यादा मोदी के चेहरे और मोदी की शख्सियत पर यकीन करते हैं। इंदिरा गांधी के बाद पहली बार ऐसा हुआ है, जब प्रधानमंत्री का चेहरा गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान और छत्तीसगढ़ के चुनावों में जीत दिलाने में कामयाब साबित हुआ है।

पिछले चुनावों तक ऐसा नहीं था। नरेंद्र मोदी लोकतांत्रिक भारत के पहले ऐसे नेता हैं, जिनकी लोकप्रियता समय के साथ बढ़ती गई है।

भाजपा इसके बावजूद चुनाव जीतने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ना चाहती। पार्टी और सरकार के कर्णधार जानते हैं कि वंशवाद और भ्रष्टाचार ने विपक्ष की जड़ें खोखली कर दी हैं। वे उन पर निर्ममता से चोट करने का कोई मौका नहीं चूकते। 'इंडिया ब्लॉक' का बिखर जाना, झारखंड के मुख्यमंत्री का जेल जाना और कई विपक्षी नेताओं का भारतीय जनता पार्टी में आ जाना, अपने-आप नहीं हुआ है।

इस अविराम सियासी यात्रा का एक पड़ाव संदेशखाली भी है। देखते हैं, चुनाव के दौरान उसका संदेश कितना पुरअसर साबित होता है?

@shekharkahin
@shashishekhar.journalist

स्कैन करें
आजकल स्तंभ के तहत प्रकाशित आलेखों के लिए

जीना इसी का नाम है

पश्ताना दुर्रानी
सामाजिक कार्यकर्ता

तालीम के लिए तालिबान से लोहा लेती जांबाज

अपने पुरखों की माटी को चूमने की खुशी ही अनूठी होती है। मगर कंधार लौटने की पहली ही रात जिस सच से पश्ताना का सामना हुआ, उसने सारी खुशियों पर तुषारापात कर दिया। खानदान की लड़कियां जब मिलीं, तो यह हकीकत खुली कि उनके जिले में एक भी गर्ल्स स्कूल नहीं है।

बीते मंगलवार को कतर की राजधानी दोहा में अफगानिस्तान के भविष्य पर एक अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन हुआ। इस जलसे को संबोधित करते हुए संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरस ने काबुल के निजाम से जब यह कहा कि अपनी चौहद्दी में लड़कियों की तालीम और महिलाओं के नौकरी करने पर उसने जो अपमानजनक पाबंदी लगाई है, उसे वह फौरन वापस ले और स्कूल की कक्षाओं से लेकर उन तमाम ओहदों तक औरतों की भागीदारी सुनिश्चित करे, जहां से निर्णायक फैसले होते हैं, तो पश्ताना दुर्रानी की मुहिम की याद हो आई। अपनी जान पर खेलकर वह अफगान लड़कियों तक ज्ञान की रोशनी बिखेर रही हैं।

अफगानिस्तान के कंधार इलाके के जलमई दुर्रानी एक तरक्कीपसंद कबाइली नेता थे, जो लड़कियों की तालीम की बढ़-चढ़कर हिमायत किया करते। जाहिर है, कट्टरपंथियों को उनकी यह बात नागवार गुजरती थी। उन्हें कई बार खामोश रहने को कहा गया, मगर जलमई दुर्रानी लगातार मुखर रहे। ऐसे में, जब मुल्क में गृह-युद्ध लंबा खिंचा और कंधार इलाके पर तालिबान का पूरा नियंत्रण हो गया, तो दुर्रानी परिवार के सदस्यों के पास देश छोड़ने के अलावा कोई रास्ता नहीं बचा। वे भागकर पाकिस्तान पहुंचे, जहां क्वेटा में उन सबको शरण मिली। करीब 27 साल पहले क्वेटा के ही एक शरणार्थी शिविर में पश्ताना पैदा हुईं। उनके पिता अच्छी तरह जानते थे कि शरणार्थी शिविरों की इन खानाबदोश जिंदगियों को अब इज्जत का मुकाम सिर्फ पढ़ने-लिखने से ही हासिल हो सकता है। लिहाजा अपनी नई नस्लों की शिक्षा को लेकर वह पहले से कहीं अधिक संजीदा हो उठे। उन्होंने अपने अस्थायी घर को ही स्कूल में तब्दील कर दिया और अपनी पत्नी व परिवार की दूसरी शिक्षित औरतों को शरणार्थी शिविरों की बच्चियों को पढ़ाने की जिम्मेदारी सौंपी।

इसी अनिश्चितता भरे माहौल में पश्ताना पली-बढ़ीं। होश संभालते ही उन्होंने देखा कि उनकी मां और चाची किस तरह हमसाया घरों के लोगों को कायल किया करतीं कि वे अपनी बेटियों को उनके स्कूल भेजें। पश्ताना ने पाकिस्तान में ही हाईस्कूल की अपनी पढ़ाई पूरी की। लेकिन उनकी दिली तमन्ना थी कि आगे की तालीम वह अपने मुल्क की ही किसी यूनिवर्सिटी से हासिल करें। तब तक अफगानिस्तान में निजाम भी बदल चुका था और चारों तरफ उस बदलाव की चर्चा भी थी। कई औरतें न सिर्फ सरकारी मुलाजमत और सियासत में लौट आई थीं, बल्कि अपना कारोबार भी चलाने लगी थीं।

साल 2013 की बात है। दुर्रानी परिवार ने वतन वापसी का फैसला किया। पश्ताना तब 16 की थीं। अपने पुरखों की माटी को चूमने की खुशी ही अनूठी होती है। पूरा दुर्रानी खानदान खुश था। मगर कंधार लौटने की पहली ही रात जिस

सच से पश्ताना का सामना हुआ, उसने उनकी सारी खुशियों पर मानो तुषारापात कर दिया। खानदान की लड़कियां जब मिलीं, तो उन पर यह हकीकत खुली कि उनके पूरे जिले में, जहां 400 से भी ज्यादा परिवार रहते हैं, एक भी गर्ल्स स्कूल नहीं है। आहिस्ता-आहिस्ता यह एहसास भी हुआ कि लड़कियों की पढ़ाई तो सरकार की प्राथमिकता में ही नहीं है।

एक दिन खानदान की ही एक छोटी बहन आई और हसरत भरी निगाहों से पश्ताना की ओर देखते हुए कहा- 'बाजी, मैं भी आपके जैसी बनना चाहती हूं।' पश्ताना शिक्षित थीं, उनके पास अपना लैपटॉप था, वह कॉन्फ्रेंस के लिए काबुल जाया करतीं, और सबसे बढ़कर उन्हें पिता का पूरा साथ हासिल था। एक कॉन्फ्रेंस के सिलसिले में जब पश्ताना काबुल जा रही थीं, तब उसी बहन ने हुकूमत के नाम एक खत दिया, जिसमें यह करुण गुजारिश थी कि उनके जिले में एक गर्ल्स स्कूल खोला जाए, ताकि वे भी पढ़ सकें। सरकार की जानिब से न कोई जवाब आना था, न आया। मगर पश्ताना उस हसरत के आगे पसीज उठीं।

आखिरकार उन्होंने उस बच्ची के पाठ्यक्रम की सामग्री और सहायक वीडियो इंटरनेट से डाउनलोड किए और उसे पढ़ाना शुरू किया। बच्ची इस लगन से पढ़ती रही कि जल्द ही वह मोड़ आया, जब उसे कंधार शहर के सरकारी स्कूल में दाखिला मिल गया। इस घटना ने पश्ताना को प्रेरित किया कि वह उन तमाम लड़कियों को डिजिटली पढ़ा सकती हैं, जिनकी पहुंच में कोई स्कूल नहीं। इसी नेक इरादे से उन्होंने साल 2018 में 'लर्न अफगानिस्तान' नाम से एक निःशुल्क ऑनलाइन स्कूल खोला। अफगानिस्तान का पहला डिजिटल स्कूल नेटवर्क। इसके जरिये वह अब तक कंधार के 7,000 से अधिक लड़कियों-लड़कों को शिक्षित कर चुकी हैं और 80 शिक्षकों को डिजिटल साक्षरता का प्रशिक्षण दे चुकी हैं।

मगर पश्ताना का यह काम कभी निरापद नहीं रहा, क्योंकि कंधार से तालिबान कभी खत्म ही नहीं हुए थे। और फिर जब वह 21 साल की हुईं, पिता के इंतकाल के कारण घर की जिम्मेदारियां भी उनके कंधों पर आ गई थीं। साल 2021 में तालिबान के फिर से सत्ता में आने पर स्थानीय सुरक्षाकर्मियों ने उन्हें आगाह किया कि उनका कत्ल किया जा सकता है। पश्ताना को अफगानिस्तान छोड़कर अमेरिका भागना पड़ा। इन दिनों वह वहीं से अपने मिशन में जुटी हैं। साल 2021 में *बीबीसी* की तरह प्रतिष्ठित पत्रिका *टाइम* ने भी उन्हें 100 प्रभावशाली लोगों में गिना है।

एक कॉन्फ्रेंस के सिलसिले में जब पश्ताना काबुल जा रही थीं, तब उसी बहन ने हुकूमत के नाम एक खत दिया, जिसमें यह गुजारिश थी कि उनके जिले में एक गर्ल्स स्कूल खोला जाए, ताकि वे भी पढ़ सकें। सरकार की तरफ से न कोई जवाब आना था, न आया। मगर पश्ताना पसीज उठी थीं।

औरतों को अपने हक-हुकूक के लिए हमेशा ही भारी संघर्ष करना पड़ता है। आज से पौने दो सौ साल पहले भारत में सावित्रीबाई फुले के साथ क्या-क्या हुआ, यह हमारे इतिहास का हिस्सा है। मगर उन्होंने उस वक्त हमारे देश में स्त्री-शिक्षा की जो जोत जलाई, उससे आज पूरा हिन्दुस्तान रोशन है। उम्मीद है, अफगानिस्तान की आने वाली नस्लें भी पश्ताना दुर्रानी को उसी अदब से याद करेंगी।

प्रस्तुति : चंद्रकांत सिंह

वो लम्हा

डॉन ब्रैडमैन
महान क्रिकेटर

दुनिया को ऐसे मिला क्रिकेट का जादूगर

कोई गेंदबाजों से विकेट गिराने की मांग करता था, तो कोई चौके की तमन्ना लिए बल्लेबाजों को ललकारता था। कहीं से संगीत की लहरियां उठ रही थीं, तो कहीं से पकवानों की खुशबू। पहले विश्व युद्ध के बाद का वह माहौल ऐसा था, मानो कोई विशाल महोत्सव चल रहा हो।

वह बच्चों को अच्छी जगहों पर ले जाने, कुछ नया दिखाने-सिखाने का दौर था। मौका मिलते ही बच्चों को साथ लिए किसी मॉल में दिखावे का चलन नहीं आया था। ज्यादातर पिता बच्चों को किसी ऐसी जगह ले जाते थे, जहां बालमन का सकारात्मक विकास हो और इसी मकसद से ऑस्ट्रेलिया के वह पिता भी अपने 13 वर्षीय सबसे छोटे पुत्र को लिए सिडनी पहुंचे थे। सिडनी क्रिकेट ग्राउंड, एक बेहतरीन मैदान, क्रिकेट का अद्भुत सुंदर गढ़। 25 फरवरी का ही दिन था, गुनगुनी धूप में गुलाबी ठंड लिए हवा बार-बार सहला जा रही थी। प्रसिद्ध एशेज शृंखला का पांचवां टेस्ट खेला जा रहा था, इंग्लैंड की टीम बल्लेबाजी कर रही थी और मैदान में ऑस्ट्रेलियाई टीम के तमाम दिग्गज क्षेत्ररक्षण करते नजर आ रहे थे। वह लड़का अचंभित था, वहां क्रिकेट के साथ बहुत कुछ था। कहीं ठहाके, कहीं शोर, कहीं अपने प्यारे खिलाड़ियों से सीधे संवाद की कोशिश, कभी नारे, कभी जयकारे। कोई गेंदबाजों से विकेट गिराने की मांग करता था, तो कोई चौके की तमन्ना लिए बल्लेबाजों को ललकारता था। कहीं से संगीत की लहरियां उठ रही थीं, तो कहीं से पकवानों की खुशबू। स्थानीय टीम अच्छा खेल रही थी, तो सबके चेहरे खिले हुए थे। पहले विश्व युद्ध के बाद का वह माहौल ऐसा था, मानो कोई विशाल महोत्सव चल रहा हो।

वैसे उस सजग लड़के को एहसास था कि यह पूरा मेला-मजमा अच्छी क्रिकेट देखने के लिए लगा है। अच्छी क्रिकेट मतलब अच्छे खिलाड़ी, जिनका नाम सुन लोग दूर-दूर से चले आए हैं। दूसरे दिन का खेल जब शुरू हुआ, तब उस लड़के के सबसे प्रिय खिलाड़ी जॉन टेलर बल्लेबाजी कर रहे थे, हालांकि, टेलर ज्यादा नहीं चले, मगर दूसरी छोर पर चार्ल्स मैकार्टनी को रोकना मुश्किल था। अंग्रेज गेंदबाजों की खैर नहीं थी। मैकार्टनी ऐसी धुआंधार बल्लेबाजी कर रहे थे कि लोगों को बाकी नजारे देखने का मौका ही नहीं मिल रहा था। उस लड़के ने महसूस किया कि अच्छा खेलना कितना जरूरी है, जब कोई अच्छा खेलता है, तो तमाम लोगों की नजरें उसी पर टिक जाती हैं। मैकार्टनी ने पचास रन पूरे किए, सौ रन पूरे किए, एक सौ पचास रन भी पार कर गए। लोगों की खुशी का ठिकाना नहीं था, सबकी जुबान पर एक ही नाम था मैकार्टनी। खैर, जब मैकार्टनी का विकेट गिरा, तब तक उनके खाते में 170 रन जुड़ चुके थे, जिसमें 20 तो चौके थे। तब छक्कों का जमाना नहीं था, खिलाड़ी बहुत अनुशासन के साथ जमीनी खेल में विश्वास करते थे और मैकार्टनी के खेल में यह विश्वास भरपूर झलका था। उस दिन का खेल जब खत्म हुआ, तो उस लड़के का मन न हुआ लौटने का। पिता खड़े हो गए कि 'चलो, आज घर लौटना है। हम 25 और 26 फरवरी का मैच देखने के लिए ही आए थे, कल 27 को मैच का रेस्ट डे है।' पर स्टेडियम से लौटने का मन ही नहीं कर रहा था। पता नहीं, फिर कब ऐसा मैदान और शानदार खेल देखने को मिलेगा। फिर मन में आया कि काश, ऐसे मैदान में खेलने का मौका मिलता, लोग देखने आते, तालियां बजाते।

लड़के ने पूरी दृढ़ता के साथ पिता को सुनाया, 'पापा, एक दिन जरूर मैं इस मैदान पर खेलूंगा।'

हंसमुख पिता मुस्कराकर रह गए। वह अपने लड़के को जानते थे, जो अच्छी टेनिस, रग्बी खेलता था और कभी-कभी क्रिकेट भी। खैर, सिडनी से लौटकर वह लड़का घर पर एक जगह दीवार के सहारे अकेले घंटों अभ्यास करने लगा। हाथ में बल्ले की जगह विकेट का एक डंडा होता था और टेनिस बॉल सामने दीवार से टकराकर बार-बार कूदती आती थी और तब एक डंडा ही बल्ला बन जाता था। मैकार्टनी का खेल देखकर ही मन में यह बात बैठ गई थी कि खेलो, तो ऐसे तेज खेलो कि लोग लगातार निहारते-सराहते रहें। लड़के ने अपना पूरा ध्यान क्रिकेट पर लगा दिया कि एक दिन सिडनी के मैदान पर खेलना है। बस छह साल लगे और वह राष्ट्रीय टीम में शामिल कर लिया गया। बस एक पहला मैच अच्छा नहीं बीता और उसके बाद तो दुनिया जान गई कि डॉन ब्रैडमैन नाम के एक बल्लेबाज ने दुनिया के तमाम गेंदबाजों के लिए काल बनकर अवतार लिया है।

ब्रैडमैन (1908-2001) ने अपने बल्ले से रनों के जो पहाड़ बनाए, उनमें से कुछ पर पता नहीं कोई चढ़ पाएगा या नहीं। महज 52 टेस्ट और 99.94 का अविश्वसनीय औसत! 29 शतक, 12 दोहरे शतक और दो तिहरे शतक। वह 25 फरवरी को ही दुनिया से विदा हुए थे। वह बार-बार प्रेरित करते थे कि जब ठान लो, तो करके दिखाओ। लगन और मेहनत से सब संभव है। वह कहते थे कि मैं कभी प्रशिक्षित नहीं हुआ और न मुझे कभी बताया गया कि बल्ला कैसे थामा जाता है।

प्रस्तुति : ज्ञानेश उपाध्याय

हिंदी साहित्य में गैंग्स ऑफ फांसेपुर

तिरछी नजर

सुधीश पचौरी हिंदी साहित्यकार

मेले की सबसे खुफिया खबर अपने एक मित्रवत खुफिया एजेंट ने दी। फोन पर कहा- 'सर जी, आप तो यहां थे नहीं... इस बार के मेले की सबसे बड़ी खबर साहित्य में 'गैंग्स' के अवतार की है।' मैंने कहा, क्या बकवास करते हो? मेले का नाम बदनाम न करो, साहित्यकारों को साहित्यकार ही रहने दो, कोई नाम न दो। इतने दिनों बाद तो मेला लगता है, लोग एक-दूसरे से मिलते हैं, यही तो मित्र-संस्कृति है!'

खुफिया मित्र बोले- 'वह जमाना गया। अब तो सब कुछ 'गैंग्स और फांसेपुर' तय करता है कि कौन क्या लिखेगा? कौन कहां से छपेगा या नहीं छपेगा, किसका रिव्यू कौन करेगा और उसमें क्या लिखा होगा? नहीं तो धांय...धांय'!

मैंने उनसे कहा, 'मगर साहित्य तो मन की मौज है, मुक्तात्मा का छंद है, किसी कीमत पर वह अपनी आजादी गिरवी नहीं रख सकता, इसलिए हिंदी साहित्य में ऐसे गैंग्स का क्या काम? साहित्य तो सबके हित की सोचता है, वह किसी का अहित नहीं करता।

मित्र कहना तो चाहता था कि 'आप मूर्ख हैं', लेकिन कहा कि 'आप बहुत भोले हैं।' जब समाज में गैंग्स हो सकते हैं, तो साहित्य में क्यों नहीं हो सकते? साहित्य आखिर समाज का दर्पण ही तो है। मैंने उन्हें समझाया- 'साहित्यकार और क्रिमिनल में कुछ फर्क तो करो! कहां बेचारा साहित्य और कहां गैंग्स ऑफ फांसेपुर के क्रिमिनल्स!'

मित्र का जवाब आया, 'सर जी! एक गैंग्स ऑफ फांसेपुर हो, तो बताऊं, आजकल तो दर्जनों गैंग्स हैं- फनपुरिया गैंग, लिखनवी गैंग, एलाबादी गैंग, छटना गैंग, भोजनपुरिया गैंग, सूरमा भोपाली गैंग, फौजियाबादी गैंग, दिल्लवी गैंग और काठीवाड़ी गैंग भी है। इन दिनों तो एक नया पुतलीबाई गैंग भी उभर रहा है। ऐसे दर्जनों गैंग हैं, जो साहित्य में एक्टिव हैं, छाए हुए हैं।'

मैंने पूछा कि जब इतने सारे गैंग्स हैं, तो इनके बहुत से 'भाई' भी होंगे। मित्र ने छूटते कहा- 'मरवाओगे क्या? नाम लिया और गए काम से। किसी का नाम न लें सर!'

कुछ ही देर बाद, एक गैंग के भाई ने सीधे मेरे मोबाइल पर कहा, 'अपन के भाई ने एक लंबी कविता लिखेली है, उसका 'लुक्कार्पण' होना है। आपको बोलना है। कार्ड पर आपका नाम जा रहा है। कल टाइम से मेले में पहुंच जाना।' मैंने कहा- 'भाई जी, मैं तो देश के बाहर हूं, कैसे आ सकता हूं?'

जवाब आया, 'भाई ने कह दिया कि आना है, तो आना है, नहीं तो जहां हो, वहीं खलास कर दिए जाओगे।'

मैं गिड़गिड़ाया, 'सर आप ही सोचें, कैसे आ सकता हूं दस घंटे का रस्ता है?' उधर से आवाज कड़क थी, 'तू लटक के आ, भटक के आ, मटक के आ या चटक के आ... जैसे भी आ, मगर आ। नामवर उस्ताद ने भाई को तेरा ही नाम दिया था। भाई उनको बहुत मानते थे। इसलिए तेरे कू आना ही है... सदियों बाद अपना कोई भाई कविता के क्षेत्र में आएला है। इस बरस के सारे नोबेल, बुकर, ग्रामी, सब अपने भाई टीपू टपकेला की कविता के नाम होंगे।'

लेकिन...

'लेकिन-वेकिन कुछ नहीं। साहित्य की आंखों के मिटे हुए सुरमे! मेले में टाइम से पहुंच जाना बस!' भाई जी के पास बैठी छप्पन छुरी बोली- 'अबे नखरे न मार! भाई जी पर्सनली चाहते हैं कि तू आए और उनकी कविता की तारीफ में कुछ बोले। उसके बाद राज्यसभा की सीट, सारे रतन-फतन तेरे!'

मैं समझ गया कि साहित्य 'गैंग्स ऑफ फांसेपुर' में बदल चुका है। उसकी शराफत का मुलम्मा उतर चुका है। साहित्य में रहना है, तो अपना भी गैंग बनाना होगा। कविता, गैंग्स का गीत होगी, आलोचना गोली की ठांय-ठांय होगी और साहित्य का मतलब धांय-धांय, धुआं-धुआं होगा। आज के साहित्य का गैंग्स ऑफ झांसेपुर ऐसा ही है!

कटाक्ष

राजेंद्र धोड़पकर

हम तब तक सत्य पर नहीं पहुंच सकते, जब तक कि मानवीय गरिमा और व्यक्तित्व को समुचित आदर न दें। इसके अभाव में हमें स्वतंत्र विचार और तर्क प्राप्त ही नहीं हो सकते।
– बर्ट्रेंड रसेल

निराशाजनक विकास दर

दूसरी नजर
पी चिदंबरम

'सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था', 'दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था' या 'पांच ट्रिलियन अमेरिकी डालर की अर्थव्यवस्था' जैसे आत्मसम्मोहन और अपना महिमामंडन करने वाले जुमलों के साथ अर्थव्यवस्था का उत्सव मनाना निहायत फिजूल है।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी नियमित रूप से अपना संदर्भ 'मैं' या 'मेरे' के बजाय तृतीय पुरुष में देते हैं।

ऐसी आदत के लिए एक शब्द हैः अवैधता (इलेइज्म)। यह एक विचित्र कल्पना लग सकती है, मगर यह तथ्य स्थापित हो चुका हैः कि मोदी ही भारत सरकार हैं और मोदी ही अकेले सरकार के अच्छे और बुरे के लिए जिम्मेदार हैं। अमित शाह को छोड़कर बाकी सभी मंत्री, पार्टी नेता, सांसद, यहां तक कि मुख्यमंत्री भी महत्त्वहीन हो गए हैं। विडंबना यह है कि वे सब महत्त्वहीन होने में ही प्रसन्नता का अनुभव करते हैं! इसलिए, हमारी अपीलें या आलोचनाएं केवल माननीय प्रधानमंत्री को संबोधित होनी चाहिए।

प्रधानमंत्री ने एक नया नारा गढ़ा हैः विकसित भारत। 'अच्छे दिन आने वाले हैं' से शुरू हुई नारों की एक लंबी शृंखला है, मुझे उम्मीद है कि यह आखिरी नारा होगा। कई नारे धरे के धरे रह गए। 'विकसित भारत' एक लक्ष्य है, जिसके बारे में प्रधानमंत्री ने कहा है कि हमें 2047 तक वहां पहुंचना होगा। अब से लेकर 2047 के बीच चाहे जो सरकार में रहे, यह तय है कि 2024 की तुलना में भारत अधिक विकसित देश होगा, ठीक उसी तरह जैसे 1947 की तुलना में भारत 2024 में अधिक विकसित देश है। विकसित भारत की परिभाषा यही है।

गतिमान गोलपोस्ट

सबसे पहले हमें गोलपोस्ट को स्थिर करना होगा। गोलपोस्ट गतिमान नहीं हो सकता। पांच ट्रिलियन यानी पांच लाख करोड़ डालर की अर्थव्यवस्था के लिए, मूल लक्ष्य-वर्ष 2023-24 था। धीरे-धीरे खींच कर उसे 2027-28 तक बढ़ाया गया है। वित्तवर्ष 2023-24 के अंत तक भारत की जीडीपी का आकार 172 लाख करोड़ रुपए होगा। यह मौजूदा विनिमय दर के हिसाब से 3.57 लाख करोड़ अमेरिकी डालर बैठता है। अगर यही विनिमय दर बनी रहती है, तो अलग-अलग विकास दरों के अनुसार पांच ट्रिलियन अमेरिकी डालर के लक्ष्य तक पहुंचने में लगने वाले वर्षों का अनुमान अलग-अलग हो सकता हैः

विकास दर %	वर्षों की संख्या	लक्ष्य तक पहुंचने का वर्ष
6	6	2029-30
7	5	2028-29
8	4.5	सितंबर 2028

अगर डालर और रुपए की विनिमय दर बिगड़ती है, तो गोलपोस्ट को और पीछे ले जाना पड़ेगा।

पिछले दस वर्षों में भाजपा/राजग सरकार का कामकाज निराशाजनक ही रहा है। नई शृंखला के तहत यूपीए के 6.7 फीसद की दर (पुरानी शृंखला के तहत यह 7.5 फीसद थी) के मुकाबले, एनडीए सरकार दस वर्षों में केवल 5.9 फीसद की वृद्धि दर हासिल करने में सफल रही है।

क्या भाजपा इस शेखी के साथ कदम बढ़ाते हुए विकास दर बढ़ा पाएगी? भाजपा में कोई भी इस सवाल का जवाब नहीं दे सकता, क्योंकि विकास दर बाहरी कारकों के साथ-साथ अर्थव्यवस्था के घरेलू प्रबंधन पर भी निर्भर करती है। अनिश्चितताओं के बावजूद, अगर मोदी तीसरा कार्यकाल हासिल करने में सफल हो जाते हैं और अर्थव्यवस्था प्रतिवर्ष आठ फीसद की दर से बढ़ती है, तो भारत की जीडीपी उनके तीसरे कार्यकाल के पांचवें वर्ष में मुश्किल से पांच लाख करोड़ अमेरिकी डालर तक पहुंच पाएगी।

विकसित होने का मतलब

मान लीजिए, भारत की अर्थव्यवस्था 2028-29 तक पांच ट्रिलियन अमेरिकी डालर के स्तर तक पहुंच जाती है, तो क्या भारत को एक विकसित देश कहा जा सकता है? 2028-29 में पांच ट्रिलियन अमेरिकी डालर और डेढ़ अरब की आबादी पर, प्रति व्यक्ति आय 3333 अमेरिकी डालर होगी। इसके चलते भारत निम्न मध्यम आय वाली अर्थव्यवस्था की श्रेणी में ही रहेगा। प्रति व्यक्ति आय के आधार पर, दुनिया के देशों में फिलहाल भारत का स्थान 140 (मामूली संदर्भ में) है। 2028-29 तक इस स्थान में पांच-दस पायदान का सुधार हो सकता है।

'सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था', 'दुनिया की पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था' या 'पांच ट्रिलियन अमेरिकी डालर की अर्थव्यवस्था' जैसे आत्मसम्मोहन और अपना महिमामंडन करने वाले जुमलों के साथ अर्थव्यवस्था का उत्सव मनाना निहायत फिजूल है। मुझे इनमें से कोई भी पसंद नहीं और माननीय प्रधानमंत्री को भी पसंद नहीं होना चाहिए।

प्रासंगिक प्रश्न

कुछ प्रश्न प्रासंगिक हैं और उन पर आने वाले चुनाव में बहस होनी चाहिए:

1. बहुआयामी गरीबी भारत पर एक कलंक है और 22 करोड़ लोग गरीबी रेखा से नीचे हैं। भारत यह कलंक कब मिटा पाएगा? यूएनडीपी के अनुसार, 2005-2015 के दौरान 27 करोड़ लोगों को गरीबी से बाहर निकाला गया। 22 करोड़ लोगों को गरीबी से कब बाहर निकाला जाएगा?
2. वर्तमान बेरोजगारी दर (8.7 फीसद) ने लाखों लोगों की जिंदगी तबाह कर दी है। सबसे योग्य युवाओं और अर्ध-कुशल श्रमिकों को पलायन करना पड़ रहा है। अपराध में वृद्धि हुई है। युवाओं को लाभकारी रोजगार कब मिलेगा? चौकीदार और रेलवे ट्रैक मेंटेनर (गैंगमैन) के पद के लिए आवेदन करने वाले पोस्ट-ग्रेजुएट और पीएचडी कर चुके युवाओं की शर्म हम कब मिटाएंगे?
3. श्रमबल भागीदारी दर (एलएफपीआर) कब 50 या 60 फीसद से ऊपर बढ़ेगी? महिला एलएफपीआर 25 फीसद से अधिक कब होगी?
4. मजदूरी आश्रित वस्तुओं की निजी खपत कब बढ़ेगी? गरीब कब अपने परिवार के लिए पर्याप्त अनाज खरीदने में सक्षम होंगे?
5. मजदूरी दरों में आया ठहराव वास्तविक रूप से कब समाप्त होगा?

बेरोजगारी और महंगाई लोगों की दो सबसे बड़ी चिंताएं हैं। मुझे याद नहीं आ रहा कि माननीय प्रधानमंत्री ने इन दो ज्वलंत मुद्दों पर आखिरी बार कब बात की थी। मुझे यह भी याद नहीं है कि माननीय प्रधानमंत्री ने आखिरी बार चीन पर कब बात की थी; मणिपुर; राजनीतिक दलबदल; राजनीतिक दलों को तोड़ने; निजता के अधिकार; नैतिक पुलिसिंग; या बुलडोजर न्याय पर कब बात की थी। राजनीतिक दलों को इन मुद्दों को बार-बार उठाना चाहिए और माननीय प्रधानमंत्री को उन मुद्दों पर अपनी सोची-समझी चुप्पी तोड़ने के लिए मजबूर करना चाहिए, जो लोगों के लिए सबसे महत्त्वपूर्ण हैं। भाजपा में जो एकमात्र व्यक्ति महत्त्वपूर्ण है, उसे बोलना ही चाहिए।

मुद्दों का धुंधलका

वक्त की नब्ज
तवलीन सिंह

आर्थिक परिवर्तन का छोटा-सा दीपक तब जला जब नरसिम्हा राव ने लाइसेंस राज समाप्त किया और निजी उद्योग की बेड़ियां तोड़ीं। उस दीपक को मशाल के रूप में बदलने का काम उन प्रधानमंत्रियों ने किया है, जिन्होंने निजी क्षेत्र में धन पैदा करने वालों का सम्मान करके उनको निवेश के मौके दिए।

पहले सिर्फ शक था मुझे, लेकिन इस न्याय यात्रा के बाद यकीन हो गया है कि नरेंद्र मोदी की मदद सबसे ज्यादा राहुल गांधी कर रहे हैं। यकीन तब हुआ जब कांग्रेस पार्टी के पूर्व अध्यक्ष और गांधी परिवार के युवराज ने एक पत्रकार के सवाल पर भड़क कर जवाब में कहा, 'आपका नाम क्या है? क्या आप ओबीसी हैं?' पत्रकार ने अपना नाम जब 'यादव' बताया तो राहुल और भी भड़क गए और पूछने लगे कि क्या आपके मालिक ओबीसी हैं? निहायत बदतमीजी से ये सवाल किए गए थे, मालूम नहीं क्यों, जैसे कि सिर्फ ओबीसी पत्रकार उनसे बात कर सकते हैं। इस वीडियो को सोशल मीडिया पर राहुल गांधी ने खुद डाला।

यात्रा के सारे वीडियो इंस्टाग्राम पर राहुल गांधी खुद डालते हैं। जाहिर है कि उनको इन पर गर्व है और यकीन भी कि इस तरह भड़कने से उनकी बातों में जोश आता है, जिससे उनको राजनीतिक लाभ मिलने वाला है आने वाले चुनावों में। मैंने कई वीडियो देखे हैं राहुलजी के। इन सबका संदेश यही है कि उन्होंने अपने राजनीति का आधार बनाया है जातिवाद। ऐसा जातिवाद जो ऊंची जातियों के खिलाफ एक अजीब किस्म की मुहिम बन गई है, जो न कांग्रेस को लाभ देने वाली है, न देश को। राम मंदिर पर बात की राहुल गांधी ने तो इस तरह- 'आपने देखा कि राम मंदिर में जब प्राण प्रतिष्ठा के लिए लोग पहुंचे तो आपको कौन दिखा? अमिताभ बच्चन दिखे, ऐश्वर्या राय दिखीं न? लेकिन कोई ओबीसी दिखे? कोई दलित दिखे?' बाद में जब किसी ने उनको बताया कि ऐश्वर्या राय वहां थी नहीं तो उन्होंने कैटरीना कैफ का नाम लेना शुरू किया।

इस तरह की बातें करके राहुल साबित करना चाह रहे हैं कि देश की तिहत्तर फीसद आबादी निचली कही जाने वाली जातियों की है, तो उनका देश के धन पर और सत्ता के ऊंचे ओहदों पर अधिक हक होना चाहिए। बात ठीक है कुछ हद तक, लेकिन इसके बारे में थोड़ा ध्यान से सोचा जाए तो दिखने लगेगा किसी भी समझदार आदमी को कि इस समस्या का समाधान कुछ और है। समाधान है बेहतर शिक्षा उपलब्ध करवाना उन बच्चों के लिए, जो ऐसी जातियों से आते हैं, जिनके पूर्वज सदियों से शिक्षा से दूर रखे गए हैं।

ऐसा सुझाव देते अगर गांधी परिवार के वारिस तो उनकी बातों में कुछ हद तक दम होता, लेकिन उनका सुझाव यह नहीं है। उनका सुझाव, उनका संदेश यही है कि 'हमारी सरकार' बनाओ और हम अंबानी-अदानी का पैसा लेकर आपको बांट देंगे। ऐसा करना असंभव है, इसलिए कि इन उद्योगपतियों ने अपना धन अपनी मेहनत से बनाया है, न कि किसी सरकारी खजाने को लूटकर। क्या राहुल गांधी इस साधारण बात को समझ नहीं सकते हैं?

क्या जानते नहीं हैं कि उनकी जब बारी आएगी- अगर कभी आएगी- तो उनको इन लोगों के पास जाना पड़ेगा घुटनों के बल माफी मांगने, क्योंकि ये लोग अगर धन न पैदा करें देश के लिए तो बड़ी-बड़ी सरकारी योजनाएं बंद हो जाएंगी। ये लोग उन मुट्ठी भर भारतवासियों में हैं, जो इतना पैसा कमाते हैं कि करोड़ों का टैक्स देते हैं देश के शासकों को। ये वही लोग हैं जो अगर कंगाल होते तो इसका असर देश की आर्थिक स्थिति पर भी पड़ता, इसलिए कि न राजनेता धन पैदा करते हैं और न आला अधिकारी। राहुल गांधी का मानना है कि धन पैदा करते हैं सिर्फ किसान और मजदूर। जरूर पैदा करते हैं, लेकिन किसानों के लिए कर देना माफ है और मजदूर बेचारे अक्सर इतना कमाते ही नहीं हैं कि कर देने लायक हो सकें।

राहुलजी के परदादा और देश के पहले प्रधानमंत्री ने भी कभी सोचा था कि भारत सरकार धन पैदा कर सकेगी बड़े बड़े उद्योग लगा कर और जो मुनाफा आएगा इन उद्योगों से उसको लगाया जाएगा आम लोगों की भलाई पर। उनको प्रेरणा मिली थी सोवियत संघ से, लेकिन यह देखे बिना कि सोवियत संघ का आर्थिक हाल क्या है। नतीजा यह कि सोवियत संघ भी अपनी आर्थिक गलतियों के बोझ तले टूट गया और भारत दशकों तक नेहरूजी की आर्थिक नीतियों के कारण कंगाल रहा। इतना कि विदेश में जब हम भारतीय जाते थे तो लोग हम पर ताने कसते कहते थे- 'आपका देश भूखे-नंगों का देश है'।

आर्थिक परिवर्तन का छोटा-सा दीपक तब जला जब नरसिंह राव ने लाइसेंस राज समाप्त किया और निजी उद्योग की बेड़ियां तोड़ीं। उस दीपक को मशाल के रूप में बदलने का काम उन प्रधानमंत्रियों ने किया है, जिन्होंने निजी क्षेत्र में धन पैदा करने वालों का सम्मान करके उनको निवेश के मौके दिए। जब राहुल गांधी देश में उनके धन को खैरात में बांटने की बातें करते हैं तो शायद जानते नहीं हैं कि ऐसा हमने करके देखा है पहले भी। जब उनके परिवार से आया करते थे सारे प्रधानमंत्री। हमने उनकी आर्थिक सोच का परिणाम भी देखा है। खैरात बांटना जब देश की प्रथम आर्थिक नीति थी, तो गुरबत ही बांटने का काम हुआ।

ऐसा नहीं है कि नरेंद्र मोदी की 'गारंटी' पर हम पूरा विश्वास कर सकते हैं। बेरोजगारी बहुत बड़ी समस्या है देश में। अभी भी ग्रामीण भारत में अच्छे सरकारी स्कूल और अस्पताल मुश्किल से मिलते हैं। अभी भी ग्रामीण भारत में खुले में शौच करने की गंदी आदत पूरी तरह समाप्त नहीं हुई है और अभी भी गरीबी इतनी है देश में कि हमारे बच्चे मरते हैं ऐसी बीमारियों के कारण, जो गंदगी से पैदा होती हैं। मगर इन सब बातों के बावजूद यह भी सच है कि मोदी सपना दिखा रहे हैं विकसित भारत का और उनके मुख्य प्रतिद्वंद्वी सपना दिखा रहे हैं वही पुराने दौर का, जिससे हम गुजर कर निकले हैं और जिससे निकलने के बाद ही थोड़ी बहुत समृद्धि देखी है भारतवासियों ने।

इस्लामी दुनिया तथा भारत

संदर्भ
राकेश सिन्हा

भारत का इतिहास अपनी प्राचीनता में दुनिया पर छाप छोड़ता रहा है। भले नेहरूवादी-मार्क्सवादी भारत को संविधान संचालित भूमि का टुकड़ा मानते हों, पर दुनिया भारत को हिंदू सभ्यता का प्रतिनिधि मानती है। हम दूसरों से अलग है, पर हमारा इतिहास आस्थाओं पर प्रहार या प्रतिशोध का नहीं रहा है।

अबूधाबी में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा मंदिर का उद्घाटन एक महत्त्वपूर्ण संदेश को समेटे हुए है। वह है सभी प्रतिकूलताओं और प्रतिरोधों के बावजूद सभ्यताओं के बीच संवाद संभव है। इसलिए शत-प्रतिशत मुसलिम आबादी वाले देश यूनाइटेड अरब अमीरात यानी यूएई में मंदिर निर्माण को सामान्य घटना समझना, उसके प्रति घोर अन्याय होगा। तीन दशक पहले पश्चिमी चिंतक हटिंग्टन ने सभ्यताओं के बीच संघर्ष की बात कही थी, जिस पर पश्चिम ने विमर्श को खूब प्रोत्साहित किया। हटिंग्टन पहचान और प्रभुत्व की प्रवृत्तियों के टकराव की विकल्पहीन संभावना देख रहे थे। पर अबूधाबी ने उसे अर्ध-सत्य साबित कर दिया है।

मंदिर का निर्माण दो देशों और उसके शासकों की पूर्ण सहमति और परस्पर सद्भाव से हुआ है। सहजता इसमें परिलक्षित होती है। मोदी और यूएई के शेख मोहम्मद बिन जायद दो सभ्यताओं के प्रतिनिधि भी हैं। यह इसलिए भी महत्त्वपूर्ण हो जाता है कि आधुनिक भारत में मोदी यहां के सभी प्रधानमंत्रियों से भिन्न हैं। उनके व्यक्तित्व में अध्यात्म के प्रति रुझान जगजाहिर है। उन्होंने भारत के दर्शन, वैशिष्ट्य और विरासत की उपेक्षा, अवहेलना और अपराधबोध के चक्रव्यूह से बाहर निकालने का काम किया है। याज्ञवल्क्य से महावीर और बुद्ध तक दर्शन धर्म की बहुआयामी व्याख्याओं से गुजरता रहा है। धर्म आधारित आस्था हमें संकीर्ण नहीं बनाती है। हमारी आध्यात्मिक सोच, समझ और सफर को नहर की तरह काट-छांटकर नहीं बनाती है, बल्कि नदी का रूप बना रहता है, जो अपना प्रवाह और तय स्वयं निर्धारित करता है।

इसलिए मोदी की धार्मिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी भारत की पुनर्खोज है, जो औपनिवेशिक काल से ही पाश्चात्य प्रभाव में अपने वैशिष्ट्य, मूल पिंड और पहचान के प्रति उदासीनता और विस्मृति, दोनों का शिकार था। धर्मनिरपेक्षता के नाम पर अपनी विरासत का मर्दन होता रहा। आधुनिक हिंदू का तात्पर्य सांस्कृतिक जड़ों से कटा होना हो गया। इसलिए 2014 के बाद भारतीय राज्य में जब उस दलील और आत्मग्लानि को खारिज करना शुरू किया, तब मोदी पर बहुमतवादी होने का आरोप मूल विमर्श बन गया। इसमें भारत और भारत के बाहर के बुद्धिजीवी शामिल थे। मगर जब तर्क और तथ्य यथार्थ से मीलों दूर हो, तो उसको ध्वस्त होने में भी वक्त नहीं लगता है।

धर्मनिरपेक्षता के पैरोकार भूल गए कि ब्रिटेन के हाउस और आफ लार्ड्स (जो भारत के राज्यसभा के समांतर है) में रानी चर्च आफ इंग्लैंड से छब्बीस पादरियों को मनोनीत करती है। दूसरी तरफ, अमेरिका में कुछ अपवाद को छोड़कर राष्ट्रपति पद पर एक नहीं, दो बाइबिलों पर हाथ रख कर शपथ ली जाती है। कभी-कभी तो संख्या तीन हो जाती है।

फिर भी जो बुद्धिजीवी सौ वर्ष से बौद्धिक संसार को राह दिखाने का दावा करते रहे हैं, वे अपने चिंतन के पुनर्मूल्यांकन का कोई स्थान नहीं छोड़ते हैं। वास्तव में भारत का इतिहास अपनी प्राचीनता में दुनिया पर छाप छोड़ता रहा है। भले नेहरूवादी-मार्क्सवादी भारत को संविधान संचालित भूमि का टुकड़ा मानते हों, पर दुनिया भारत को हिंदू सभ्यता का प्रतिनिधि मानती है। हम दूसरों से अलग है, पर हमारा इतिहास आस्थाओं पर प्रहार या प्रतिशोध का नहीं रहा है। इसीलिए मोदी का आध्यात्मिक व्यक्तित्व और भारतीय दर्शन के प्रति मुखरता ने उन्हें सभ्यताई प्रतिनिधि बना दिया। मोदी ने अरब के शासक को केरल के चेरामन मस्जिद का प्रतिबिंब भेंट किया, जिसका इतिहास हिंदू धर्मनिरपेक्षता की व्यापकता का प्रतीक है। हिंदू राजा ने मंदिर को मस्जिद में तब्दील कर अरब के व्यापारियों के लिए इबादत का स्थान बना दिया था। इस्लामी दुनिया अपनी नजरों से भारत के वर्तमान और भविष्य का मूल्यांकन कर रही है, जो पश्चिमी और नेहरूवादी धारणा को नकार रही है। मोदी को पांच से अधिक इस्लामी देशों ने सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान दिया है। इसमें बहरीन भी शामिल है।

आजादी के बाद इस्लामी देशों से भारत का संबंध रहा है, पर वहां तुष्टीकरण की नीति थी। कश्मीर पर नीति या कदम उठाने से पहले हम अपनी संप्रभुता की स्वयं अवहेलना कर उनकी संतुष्टि या नाराजगी का खयाल रखते थे। इजराइल से हम न चाहते हुए भी दूरी बना कर रखते थे। 2014 के बाद अनुच्छेद 370 भी गया और इजराइल से डंके की चोट पर संबंध भी बना। इस्लामी मुल्कों के विरोध की बात तो दूर, वे भारत की पहल, नीतियों और नेतृत्व में अंतरराष्ट्रीय राजनीति की नई संभावना देखने लगे। यही सभ्यताओं के बीच संवाद है। न्यूयार्क या पेरिस में आक्सफर्ड या हावर्ड में वाशिंगटन पोस्ट या विदेश मामलों में इस पर विश्लेषण की आशा करना पश्चिम की आधिपत्यवादी मानसिकता से अपरिचित बने रहना होगा।

नई दुनिया की संभावनाओं के लिए नई दिल्ली, अबूधाबी और ढाका विश्वविद्यालयों और अपने अखबारों पर आत्मविश्वास के साथ कदम बढ़ाना ही उसकी उपादेयता को स्थापित करेगा। आज पश्चिम या इस्लामी मुल्क एक समृद्ध या सशक्त भारत ही नहीं, बल्कि एक सभ्यता के रूप में देख रहे हैं। मगर इसके लिए पाश्चात्य मानसिक प्रभावों से मुक्त होकर कठोर बौद्धिक परिश्रम की आवश्यकता है।

जयघोष और जुनून के बीच

बाखबर
सुधीश पचौरी

दक्षिण राज्यों की दीवार पार करना बेहद कठिन है। इसे देख भाजपा विरोधी कहते हैं कि जब तक दक्षिण नहीं पार, तब तक चार सौ कैसे पार? लेकिन आशावादी कहते रहते हैं कि दक्षिण की टूटेगी दीवार और इस बार जरूर होंगे चार सौ पार..!

दो दिनों तक कमलनाथ राजनीति को हिलाते रहे। 'होगा तो बताऊंगा... कहकर चैनलों और कई कांग्रेसी नेताओं को हलकान करते रहे। कांग्रेसी नेता कहते रहे कि वे कहीं नहीं जा रहे हैं, तो प्रतिपक्षी मजा लेते रहे कि तब बेटे को लेकर दिल्ली क्यों आ रहे हैं... पूरे दो दिन बाद कमलनाथ खबरों से बाहर हुए!

इसके समांतर भाजपा के महाधिवेशन के सीधे समाचार चलाए जाते रहे। पूरे दिन कार्यकर्ताओं के बीच से रह-रह कर 'मोदी मोदी मोदी मोदी' का 'जयघोष' उठता रहा और प्रधानमंत्री का 'अबकी बार चार सौ पार' वाला संबोधन कि हम 'राजनीति' के लिए नहीं, 'राष्ट्रनीति' के लिए आए हैं! भाजपा का तीसरा कार्यकाल सत्ता भोग के लिए नहीं मांग रहा... हमें अभी बहुत कुछ करना है..! वे अपनी एक-एक योजना गिनाते रहे और सन 2030 तक का नक्शा भी दिया। साथ ही 2024 के लिए कार्यकताओं को नया संकल्प दिलाया कि अगले सौ दिन तक हर कार्यकर्ता अपने बूथ पर तीन सौ सत्तर वोटों को प्रेरित करे... भारत माता की जय!

इसके आगे प्रधानमंत्री यूपी के 'संभल' के 'कल्कि धाम मंदिर' का शिलान्यास करते दिखे। उनके साथ कांग्रेस के पूर्वनेता आचार्य प्रमोद कृष्णम् सुदामा से बने दिखे। उनका संबोधन काफी मानीखेज दिखा।

इसी बीच फिल्मी गीतकार गुलजार के साथ संस्कृत के कवि स्वामी रामभद्राचार्य जी को ज्ञानपीठ सम्मान देने की खबर ने कुछ देर के लिए जरूर चैनलों को साहित्य की ओर मोड़ा, लेकिन एकाध को छोड़ किसी चैनल को फुर्सत न रही कि इन 'सम्मान्यों' का अपेक्षित 'परिचय' करता-कराता। आज की राजनीति के बीच साहित्य की क्या बिसात?

एक चैनल अपने 'मूड आफ द नेशन' को बार बार विश्लेषित करता-कराता रहता है और हर बार यही निकलकर आता है कि उत्तर में तो भाजपा की एकतरफा जीत है, लेकिन दक्षिण राज्यों की दीवार पार करना बेहद कठिन है। इसे देख भाजपा विरोधी कहते रहते हैं कि जब तक दक्षिण नहीं पार, तब तक चार सौ कैसे पार? लेकिन आशावादी कहते रहते हैं कि दक्षिण की टूटेगी दीवार और इस बार जरूर होंगे चार सौ पार!

इसी बीच एक दिन बंगाल के 'संदेशखाली' के माफिया शाहजहां शेख और कुछ अन्यों द्वारा 'यौन उत्पीड़ित' औरतों के बड़े प्रदर्शन ने बड़ी खबर बनाई, लेकिन उससे भी बड़ी खबर एक बड़े चैनल के संवाददाता की गिरफ्तारी ने बनाई। दृश्य में एक बड़े चैनल का संवाददाता 'संदेशखाली' में हुए अत्याचारों के खिलाफ निकली औरतों को जोर-शोर से दिखा रहा था कि पुलिस उसे जबरिया उठाकर रिक्शे में डाल, थाने ले जाती दिखी, फिर भी वह बंगाली में अपनी गिरफ्तारी का विरोध करता रहा! मगर अफसोस कि उसकी गिरफ्तारी की खबर उसके अपने चैनल को छोड़ किसी और चैनल ने नहीं दी, न किसी 'मीडिया संस्था' ने उसका पक्ष लिया और न बंगाल सरकार की 'निंदा' की।

इसी बीच चंडीगढ़ में मेयर के चुनाव में एक चुनाव अधिकारी द्वारा की गई हेराफेरी से लोकतंत्र को बचाया सुप्रीम कोर्ट के एक आदेश ने और नया मेयर बनने पर मनाया जश्न 'आप' और 'कांग्रेस' के कार्यकताओं ने!

मगर इससे कुछ पहले, हर चैनल पर एक प्रकार का जागरण यानी 'वोकिज्म' गरजता-बरसता दिखाः ...वाराणसी में देखा मैंने, रात में बाजा बज रहा है। शराब पिए यूपी का भविष्य नाच रहा है, डांस कर रहा है!

और फिर एक टुकड़ा... एक पत्रकार से पूछते हुए... आपके मालिक का क्या नाम है... क्या नाम है... (गुस्से में)...नाम बताओ... नाम बताओ (लोग उस पत्रकार को मारने लगते हैं)... मारो मत... मारो मत..!

जरा-सी देर में देश का पूंजीपति वर्ग कुटा और एक नितांत नए किस्म का 'जातिवादी समाजवाद' फुफकारा! जरा-सी देर में एक ओबीसी पत्रकार ओबीसी होते हुए भी पिटा! इसे कहते हैं 'वोकिज्म', यानी 'अचानक जागा हुआ'! यानी बतर्ज गालिब :

'बक रहा हूं जुनूं में क्या क्या कुछ!
कुछ न समझे खुदा करे कोई!!'

बहरहाल, चलती बहसों में 'वोकिस्ट जी' का एक भक्त उनके 'यूपी ड्रंक' पर पानी डालता है कि यूपी में इन दिनों शराब बहती है... तो एक 'अभक्त' टोकता है कि दक्षिण के चार राज्य देश की कुल शराब की आधी पी जाते हैं और तुम कहते हो कि यूपी धुत है! तीसरा सुर उठता है कि क्या वक्ता जी के घर में कोई नहीं पीता..!

जनता को 'कोसने' की इस मानसिकता को 'डिकोड' करते एक चर्चक कहता है कि यह उनकी गहरी 'खीझ' और 'कुंठा का परिणाम है। जहां से यात्रा निकलती है वहां उनका कोई न कोई विकेट उखड़ जाता है!

नई दिल्ली

www.readwhere.com

सवा चार साल के दौरान प्रदेश के अंदर हमने एमएसपी (मैक्सिमम सपोर्ट फार द पीपल) पर काम किया। किस तरीके से अधिकतम समर्थन को जमीन तक पहुंचाया जाए, उसके ऊपर हमारी सरकार का लक्ष्य कोरोना जैसी महामारी, किसान आंदोलन जैसी मुश्किल में भी नहीं भटका। हर क्षेत्र में वृद्धि हुई। हरियाणा ऐसे चुनिंदा राज्यों में है, जहां निवेश और औद्योगीकरण आया।

हरित क्रांति के बाद से हो रहे किसान आंदोलन, खेतों में वापसी जल्द

हरियाणा के उपमुख्यमंत्री और जननायक जनता पार्टी के नेता दुष्यंत चौटाला का कहना है कि वे अभी चल रहे किसान आंदोलन में किसी तरह की राजनीतिक पृष्ठभूमि नहीं देख रहे हैं। हरित क्रांति के बाद से ही अपनी समस्याओं को लेकर अलग-अलग समय पर किसान आंदोलित रहे हैं। हरियाणा सरकार पूरी तरह से किसानों की खुशहाली के साथ है। उन्हें उम्मीद है कि जल्द ही केंद्र सरकार से बातचीत सकारात्मक अंजाम तक पहुंचेगी और किसान संतुष्ट होकर अपने खेतों की तरफ लौटेंगे। उन्होंने कहा कि नई तकनीक को अपनाकर किसानी को मुनाफे की अर्थव्यवस्था में ले जाना हरियाणा सरकार का लक्ष्य है। चंडीगढ़ में दुष्यंत चौटाला के साथ कार्यकारी संपादक *मुकेश भारद्वाज* की विस्तृत बातचीत के चुनिंदा अंश।

● किसान आंदोलन के बीच बहस में हम बात कर रहे हैं दुष्यंत चौटाला से। राज्य के युवा चेहरों में से एक जिस पर बहुत उम्मीदें टिकी हैं। आपके बारे में बाकी बात आगे, सबसे पहले तो यही कि आप ऐसे परिवार से आते हैं जो न सिर्फ किसानों के लिए काम करने के लिए जाना जाता है, बल्कि खुद भी किसान है। आप किसान आंदोलन को किस तरह देख रहे हैं? क्या इसमें किसी राजनीतिक दखलंदाजी को देखते हैं?

●● मैं नहीं मानता कि किसानों की कोई राजनीतिक पृष्ठभूमि है। ये वो लोग हैं जो साल में नौ महीने यही सोचते हैं कि खेत में सिंचाई कैसे करनी है, किस नहर में जाना है, कैसे रोपण करना है, कैसे छिड़काव करना है। ये अपने आप में एक वैज्ञानिक हैं जो पूरे समय अपनी फसल का अध्ययन करते हैं और उसके लिए कोई नुस्खा निकालते हैं। इसे वृहत्तर परिप्रेक्ष्य में देखें तो सब इकट्ठे होकर कोई मुहिम बनाते हैं तो इस तरह के आंदोलन होते हैं। ये आंदोलन सिर्फ पंजाब या हरियाणा तक सीमित नहीं हैं। महाराष्ट्र के किसान पांच सौ किलोमीटर लाल कपड़े पहनकर गए, सरकार ने उनकी बात मान ली। तंबाकू किसान जब केरल में आंदोलन करने उतरे थे तो सरकार ने उनकी बात मानी। आंदोलन चलते रहे हैं। देश की आजादी के बाद जब हरित क्रांति की शुरुआत हुई तो उसके बाद किसान आंदोलन भी लगातार हुए। लोकतंत्र की खूबसूरती यही है कि हर किसी को अपनी बात कहने का हक मिले। सरकार मांगों पर वार्ता करती है और सहमति बनने पर उन्हें पूरा करती है। इस बार भी सरकार चार वार्ताओं का दौर पूरा कर चुकी है और पांचवीं की पेशकश की है। जल्द ही सकारात्मक नतीजा निकलेगा।

● आप इस आंदोलन व सरकार के सकारात्मक नतीजे को लेकर उम्मीदजदा हैं?

●● जी बिल्कुल।

● फिर दिक्कत कहां पर है?

●● मुझे लगता है कि इसके लिए सबसे पहले राज्य की इच्छाशक्ति होनी चाहिए। अगर हरियाणा 14 फसलें एमएसपी पर ले सकता है, 18 फसलें भावांतर भरपाई (बाजार और समर्थन मूल्य के अंतर पर) पर ले सकता है तो पंजाब को भी इसे शुरू करना चाहिए। मगर मौजूदा पंजाब सरकार ने तो अपनी आर्थिक नीति ऐसी बना रखी है कि उनके बही-खाते में तनख्वाह देने के लिए पैसे नहीं हैं तो किसानों का कहां से समर्थन करेंगे। हरियाणा किसानों का पूरा समर्थन कर रहा है। अगर हमने चार साल में 1,00,000 करोड़ के सिर्फ धान और गेहूं खरीदे तो यह संभव कैसे हो पाया? क्योंकि किसानों का समर्थन करने की सरकार की इच्छाशक्ति थी। पूरे भारत में मैं पहला था जिसने एफसीआइ के लिए खरीद सुनिश्चित की। इसका पैसा किसी आढ़ती नहीं, सीधे किसानों के खाते में जमा करना शुरू किया। हरियाणा में आप किसी भी किसान से बात कर लीजिए। वह बताएगा कि ब्रितानी हुकूमत से जो यह व्यवस्था शुरू हुई थी उसे आज तक कोई नहीं दे पाया था। हमने इसे सबसे पहले दिया।

● तो आपको लगता है कि यह राज्यों की इच्छाशक्ति का मामला है, जो किसानों के लिए अपना पूरा जोर नहीं लगा पा रही है?

●● सुनिश्चित एमएसपी और खेती ये दो विषय हैं। हमारे संविधान में खेती राज्य का विषय है। उसे तय करना होता है। मगर महंगाई को देखते हुए कीमत भारत सरकार तय करती है और सारे राज्य उसका पालन करते हैं। मैं तो माननीय प्रधानमंत्री जी को पत्र लिख कर भी ये सुझाव दूंगा कि भविष्य में जब राजग दुबारा आए तो उस समय समवर्ती सूची के विषय के अंदर जैसे हम जेल, श्रम के क्षेत्र में माडल कानून लेकर आए हमें इस पर भी अधिनियम लाना चाहिए। अधिनियम लाकर राज्यों को भी जोड़ना चाहिए कि आप तय करें। मगर उसके अंदर हमें यह भी देखना पड़ेगा कि सारे गेहूं न लगाने लग जाएं। फिर तो अमेरिका वाली हालत हो जाएगी कि गेहूं को समुद्र में फेंकना पड़ा। हमें फसलों की विविधता को लेकर सहयोग करना पड़ेगा। एक और बात है। हम जितने ज्यादा तिलहन और दलहन को उगा पाएंगे हमें उतना ज्यादा बाहर से आयात कम करना पड़ेगा। दूसरी चीज है मोटे अनाज यानी मिलेट्स पर काम करना। आज वैश्विक मांग को पूरा करने के लिए भारत को उत्पादन बढ़ाना होगा। आज देश विश्व का 34 फीसद से ज्यादा मिलेट्स उगाता है। क्या हम इस 34 को 40 से 45 फीसद नहीं पहुंचा सकते? हमारे पास क्षमता है, श्रमशक्ति है। इन्हें लेकर हम जैसे सहयोग कर पाएं चाहे केंद्र-राज्य भागीदारी में कर पाएं, चाहे केंद्र समर्थन करे या राज्य समर्थन करे। कोई नीति तो बनानी पड़ेगी। मैंने वरिष्ठ कृषि विशेषज्ञों को भी सुना है कि इस तरह की कोई सुविधा बनती है तो केंद्र पर भी कोई बोझ नहीं आएगा। हम अपने किसानों को वैश्विक मांग की पूर्ति करने के लायक बनाएं, कृषि में निर्यात की अर्थव्यवस्था बनाएं, खेती का विविधिकरण करें तो तयशुदा तौर पर आने वाले समय में किसानों को फायदेमंद कीमत मिलेगी।

> नरेंद्र मोदी जी को आदर्श मानता हूं। जिन क्षेत्रों तक भाजपा कभी पहुंच भी नहीं पाई थी आज वहां मात्र प्रधानमंत्री की वजह से वर्चस्व बढ़ा पाई है। यह सबक तो हर दल को सीखना चाहिए। इतिहास गवाह है कि राजनीति की कोई सीमारेखा नहीं होती है।

दुष्यंत क्यों

दो ध्रुवीय राजनीति के बीच हम भी हैं कि आवाज लगाने वाले क्षेत्रीय क्षत्रप यानी तीसरी शक्ति हरियाणा में दुष्यंत चौटाला तक सीमित हो गई है। राजनीतिक विरासत की लड़ाई में मूल पार्टी इंडियन नेशनल लोकदल चाचा अभय चौटाला के पास गई तो भतीजे दुष्यंत ने जननायक जनता पार्टी को खड़ा किया। 31 साल की उम्र में उपमुख्यमंत्री बनने वाले युवा नेता ने पैतृक पार्टी के जनाधार का हस्तांतरण अपनी नई पार्टी की तरफ कर लिया। दुष्यंत उस परिवार से आते हैं जिनके पास न सिर्फ किसानों की रहनुमाई है बल्कि जो खुद किसान हैं। गठबंधन की सरकार में अपनी अलग पहचान बनाने वाले दुष्यंत चौटाला किसान मुद्दे पर अपनी स्पष्ट राय रखते हैं। लोकसभा चुनाव के पहले शुरू हुए किसान आंदोलन व क्षेत्रीय दलों पर बात करने के लिए इनसे बेहतर और कौन होता?

● एक ऊर्जावान और उत्साही युवा के रूप में आपने हरियाणा के उपमुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी तो आपसे बहुत सी उम्मीदें थी। आपने अपने पितृ राजनीतिक दल से अलग नई राजनीतिक पहचान बनाई। राजग से जुड़ने के पांच साल पूरे हो जाएंगे। इस मुकाम पर कैसा महसूस कर रहे हैं आप?

●● मैं मानता हूं कि 31 साल की उम्र में मुझे ऐसे पद पर जिम्मेदारी मिली जहां सवाल था कि प्रदेश की आशाओं को कैसे आगे लेकर चलें? उस पर काम करने का कैसा अवसर हम निकालते हैं? इस पर काम करने का मौका मिला। सवा चार साल के दौरान प्रदेश के अंदर हमने एमएसपी (मैक्सिमम सपोर्ट फार द पीपल) पर काम किया। किस तरीके से अधिकतम समर्थन को जमीन तक पहुंचाया जाए, उसके ऊपर हमारी सरकार का लक्ष्य कोरोना जैसी महामारी, किसान आंदोलन जैसी मुश्किल में भी नहीं भटका। हर क्षेत्र में वृद्धि हुई। हरियाणा उन चुनिंदा राज्यों में है जहां निवेश और औद्योगीकरण आया। नए उद्योगों को हमने प्रोत्साहन दिया। प्रदेश के अंदर 13 नई नीतियां बनाई जिससे अलग-अलग क्षेत्रों का विकास हो। इसके साथ प्रदेश का बुनियादी ढांचा कैसे मजबूत बने, आम लोगों को कैसे उनके दरवाजे तक सुविधाएं मिले, ये हमारी प्राथमिकता थी। हमारी 600 सुविधाएं ऐसी हैं जिसने आम लोगों की जिंदगी बदल दी। एक बुजुर्ग को पेंशन बनाने में पहले एक और उम्र निकल जाती थी, अब साठ साल का होते ही उसकी वृद्धावस्था पेंशन शुरू हो जाती है। सेवा केंद्र आनलाइन होकर बाबुओं के चंगुल से मुक्त हुए। पीला राशन कार्ड गरीबी रेखा से नीचे के लोगों की बुनियादी जरूरत है। मुझे वो दिन भी याद है जब मैं सांसद था और मोटी-मोटी फाइलें लेकर औरतें मिला करती थीं और कहती थीं हमारी मंजूरी नहीं आ रही। आज गांव या शहर के 'सीएससी' में 20 मिनट की कार्रवाई के अंदर काम होगा। देश में हरियाणा अकेला राज्य है जिसने गरीबी रेखा से नीचे की सीमा एक लाख 20 हजार से बढ़ाकर एक लाख 80 हजार किया। एक करोड़ 80 लाख का एक साफ्टवेयर विकसित कर हमने हरियाणा प्रदेश की तीन करोड़ के लगभग आबादी को सुविधा दे दी कि दो मिनट में अपने राजस्व रिकार्ड को निकाल सकते हैं। पहले एक करोड़ 21 लाख लोग राशन लेते थे आज एक करोड़ 79 लाख हैं। हमने अधिकार काटे नहीं उसे बढ़ाया है।

● किसानी के क्षेत्र में आप अपनी सरकार के मुकाम को किस तरह देखते हैं?

●● हरियाणा अकेला राज्य बना जिसके अंदर हमने 14 फसलों की एमएसपी सुनिश्चित की। पड़ोसी पंजाब को देख लीजिए, वह दो से तीसरी पर भी नहीं आ पाया। राजस्थान सिर्फ पांच जिलों में एक गेहूं की फसल को ले पाया। फसलों की विविधता पर ध्यान दिया। जनता को जीरी-गेहूं से आगे निकाला है हमारी सरकार ने। सरसों हमने खरीदी, बाजरा हमने खरीदा। सूरजमुखी जिसके लिए धरना चला पंजाब के लोगों का उसकी खरीद भी सिर्फ हरियाणा ने सुनिश्चित की। मैं एक कदम आगे गया कि सूरजमुखी की खरीद सुनिश्चित होगी तो उसका उपयोग क्या होगा? जब कोई सोच नहीं पा रहा था तो मैंने राशन डिपो में सरसों के तेल की तरह सूरजमुखी का तेल लेना शुरू करवाया। हम तो बचपन से सुनते थे कि सूरजमुखी का तेल दिल के लिए अच्छा होता है। आज गरीब आदमी के परिवार को दो लीटर तेल मिल रहा है। खेत से लेकर घर तक, हमारा हर कदम किसानों को मजबूत कर रहा है।

● पिछली सरकार की तुलना में आप आज खुद को कितने नंबर देंगे?

●● आप तुलना करके देखेंगे तो अब चौतरफा विकास है। हमने भूपेंद्र सिंह हुड्डा जी का भी राज देखा है। रोहतक से निकलते थे, सड़कें खत्म हो जाती थी। आज हरियाणा में हमने सड़क क्षेत्र को समृद्ध किया। लगभग दस हजार किलोमीटर सड़क प्रधानमंत्री सड़क योजना, ग्रामीण सड़क योजना, नेशनल हाइवे, एक्सप्रेस वे के अंदर अतिरिक्त जुड़ी है। कुल मिलाकर इतने छोटे प्रांत में चार साल के दौरान 30 हजार किलोमीटर से ज्यादा रोड नेटवर्क को विकसित किया। मैं कई बार सोचता हूं कि विपक्ष के नेता हमें कोसते तो हैं। लेकिन, हमारी बदौलत पूरे हरियाणा में पंद्रह से बीस कार्यक्रम करवाते हैं क्योंकि सड़क संपर्क अच्छा हो गया। सड़क बेहतर होने से उद्योग बेहतर हुए हैं। बिना किसी निवेश सम्मेलन के, समझौतों के चार साल में 40 हजार करोड़ का निवेश आया। जो मारुति हरियाणा छोड़कर गुजरात चली गई थी, उसको प्रेरित कर दुनिया का सबसे बड़ा गाड़ियों का विनिर्माण संयंत्र बनाया जिसमें दस लाख गाड़ी एक वर्ष में बनेगी। क्षेत्रवाद से आगे बढ़कर खरखौदा में इसे लाया। मुख्यमंत्री या उपमुख्यमंत्री का क्षेत्र है, विकास का पैमाना यह नहीं रहा। जल्द ही खरखौदा का विकास गुरुग्राम की तर्ज पर होगा। विकास में हम मील का पत्थर साबित हो रहे हैं।

● सरकार में आप जैसे युवा चेहरा होने का लाभ प्रदेश ने किस तरह से महसूस किया।

●● युवा चेहरा होने का लाभ यह है कि अनछुए क्षेत्रों तक पहुंचा। जब मैंने नागरिक विमानन विभाग की जिम्मेदारी संभाली तो मुख्यमंत्री जी ने कहा कि ये क्यों तो मैंने कहा कि ये मेरी पसंद का क्षेत्र है। चार साल में इस क्षेत्र को 32 करोड़ के बजट से 980 करोड़ का बजट ले गया। पांच हवाई पट्टियां थीं जो बंसीलाल, देवीलाल जी के समय पूरी हुई थी। आज उन पांच हवाई पट्टियों का पूरा इस्तेमाल करना हमारी उपलब्धि है। आज 200 युवा 'हरियाणा नागरिक उड्डयन संस्थान' के अंदर करनाल पिंजौर में प्रशिक्षण ले रहे हैं। हमारे पास दो 'फ्लाइंग ट्रेनिंग आपरेटर' हैं, जिनके पास 200 की क्षमता है, 178 लोग वहां प्रशिक्षण ले रहे हैं। लगभग 30 से ऊपर युवा 'इंडिगो', 'एअर इंडिया' में नौकरी पा चुके हैं। प्रधानमंत्री ने कहा था कि भविष्य में पायलटों की जरूरत बढ़ेगी तो उसे पूरा करने के लिए हरियाणा ने कदम उठाए। यहां 73 सौ एकड़ का एशिया का सबसे बड़ा हवाईअड्डा बनने जा रहा है। 'एरो डिफेंस प्रोडक्शन' का एक गढ़ हिसार बन जाएगा। आगे देखिएगा, एविएशन कालेज शुरू करेंगे। हम इस क्षेत्र में नई तकनीक पर काम कर रहे हैं।

● भाजपा के साथ आपके संबंध किस तरह के हैं इस समय?

●● जैसे शुरू हुए थे बिल्कुल वैसे ही हैं। मुझे पहले दिन ही लोगों ने कहा था कि 15 दिन में सरकार टूटेगी। अभी आपने कहा, सवा चार साल हो गए। यह सिर्फ संबंधों के कारण ही चला। यह रिश्ता एक ही सोच के साथ चला कि जनता को 'मैक्सिमम सपोर्ट' देना है। प्रदेश के विकास में अपना अधिकतम योगदान देना है।

● आगे चुनावों को लेकर राजग के साथ गठबंधन की कैसी स्थिति है?

●● राजग की अभी हाल में तो कोई बैठक हुई नहीं है। गठबंधन में बड़ा कौन और छोटा कौन ये तो समय की बात है। हमारी सोच एक थी कि हम कैसे प्रदेश को लेकर आगे बढ़ें और हमने इसमें सफलता प्राप्त की है।

● राज्य में कांग्रेस के भविष्य को आप किस तरह देखते हैं?

●● कांग्रेस की समस्या यह है कि उनके पास कोई निर्णायक, सक्षम नेतृत्व नहीं है। हाईकमान फैसला नहीं ले पा रहा है। महाराष्ट्र में जो परिवार दो पीढ़ी से कांग्रेस का नेतृत्व कर रहा था वह भी छोड़ जाता है। राजनीतिक शक्ति बहुत बड़ी बात है। मैं हरियाणा में कांग्रेस का कोई भविष्य बनता हुआ नहीं देख पा रहा हूं। यहां तो कांग्रेस तीन समूहों में बंटी हुई है। मुझे याद है चौटाला साहब नरवाना से चुनाव लड़ रहे थे, मुख्यमंत्री थे। वहां पर सोनिया गांधी आईं, रणदीप सुरजेवाला को शक्ति के तौर पर दिखाया, लोगों ने कहा ये मुख्यमंत्री। भिवानी में बंसीलाल जी के परिवार में ताकत दिख गई। रोहतक आईं तो हुड्डा जी ताकत दिखे, भजन लाल जी खुद चेहरा थे। छह चेहरे बनाए। बाद में हुड्डा जी मुख्यमंत्री बने। अब राजनीति पूरी तरह बदल चुकी है। पुरानी सोच के साथ कांग्रेस नहीं चल सकती है। उसे खुद को आधुनिक बनाना होगा।

● आप हरियाणा में कांग्रेस से किसी तरह का खतरा नहीं महसूस कर रहे हैं?

●● बिल्कुल नहीं।

● क्या आपको लगता है कि राजग के जो छोटे सहयोगी हैं उन्हें अपने अस्तित्व पर किसी तरह का खतरा महसूस होता है?

●● ऐसी सोच का मुझे कोई नहीं दिखता। सहयोगी दलों के तौर पर हमारे साथ समानता का व्यवहार होता है। क्षेत्रीय दल के तौर पर हमारी सोच का राजग सरकार ने समर्थन किया है, तभी हम साथ आगे बढ़ रहे हैं।

> अगर हरियाणा 14 फसलें एमएसपी पर ले सकता है, 18 फसलें भावांतर भरपाई पर ले सकता है तो पंजाब को भी इसे शुरू करना चाहिए। मगर मौजूदा पंजाब सरकार ने तो अपनी आर्थिक नीति ऐसी बना रखी है कि तनख्वाह देने के पैसे नहीं हैं।

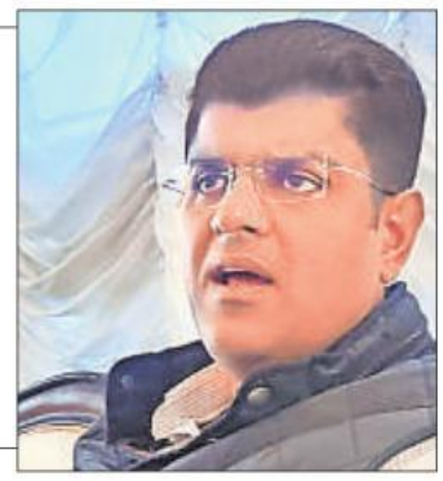

● अभी आपने कहा कि आपकी राजनीति राज्य केंद्रित है? क्या आपको लगता है कि वो स्थिति आ चुकी है जब आपको पार्टी का विस्तार करना चाहिए? खास कर पड़ोसी राज्यों में?

●● क्यों नहीं। हमने राजस्थान में चुनाव लड़ा था। हमने 19 विधानसभा क्षेत्रों में अपने उम्मीदवार खड़े किए थे और आम आदमी पार्टी ने 88 क्षेत्रों में। हमारा वोट शेयर आप आदमी पार्टी से ज्यादा था।

● भविष्य के अंदर पार्टी का विस्तार कितना हो पाएगा?

●● इसका जवाब तो इतिहास के पन्नों पर है। चौधरी देवीलाल जी जब देश का नेतृत्व कर सकते हैं, तमिलनाडु में जाकर लोगों को जोड़ कर ला सकते हैं तो क्या पता है कि जनता की भावना कब और किसके साथ जुड़ जाए। इस मामले में मैं नरेंद्र मोदी जी को आदर्श मानता हूं। जिन क्षेत्रों तक भारतीय जनता पार्टी कभी पहुंच भी नहीं पाई थी आज वहां मात्र प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की वजह से अपना वर्चस्व बढ़ा पाई है। यह सबक तो आज हर राजनीतिक दल को सीखना चाहिए। इतिहास गवाह है कि राजनीति की कोई सीमारेखा नहीं होती है।

प्रस्तुति : मृणाल वल्लरी

नई दिल्ली

www.readwhere.com